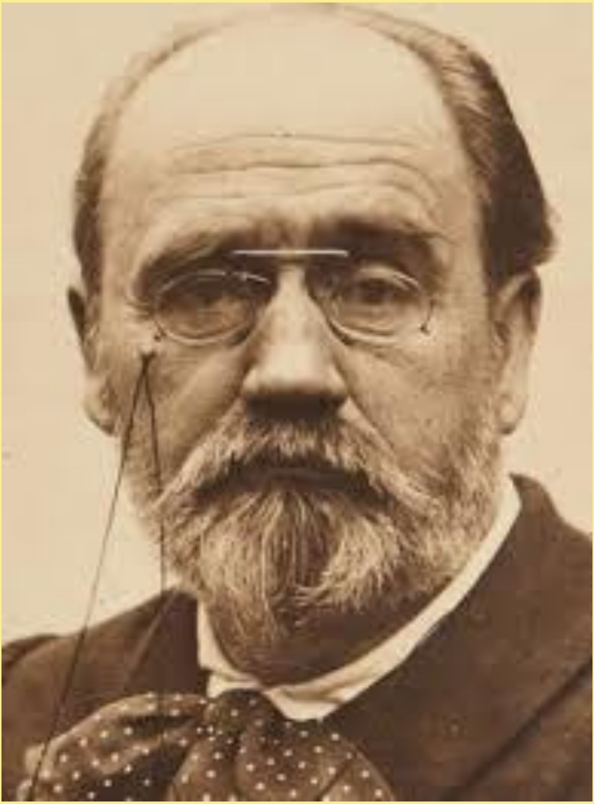
नाना की माँ

एमिल ज़ोला

अनुवाद: गंगा प्रसाद



किताब महल, 1959

एमिल ज़ोला विश्वख्याति के फ्रांसीसी कथाकार हैं। उनकी कृतियों की लोकप्रियता भाषा और देश की परिधि लाँघकर विश्वव्यापी लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है। 'नाना' जैसा उपन्यास लिखकर ज़ोला ने एक बार पूरे योरप में तहलका मचा दिया था। व्यक्ति की दमित वासनाओं तथा कुण्ठाजन्य विकारों का जैसा यथार्थतापूर्ण और सजीव चित्रण एमिल ज़ोला ने अपने उपन्यासों में किया है वैसा कोई भी अन्य कथाकार नहीं कर सका है। उनमें अनुभूति की गहराई और सूक्ष्म निरीक्षण की अद्‌भुत क्षमता के साथ ही अभिव्यक्ति और चित्रण की निर्भीकता भी है। यही कारण है कि उनकी कृतियों में कुछ ऐसी शक्तिमत्ता और निखार आ गया है जो प्रखर भी है और मोहक भी। "नाना की माँ" में एक ऐसी नारी की मर्मस्पर्शी कथा प्रस्तुत की गयी है जो अपनी अतृप्त आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए तड़पती तिलमिलाती गर्म रेत में पड़ी हुई मछली की तरह अपनी जीवन-लीला समाप्त कर देती है। उपन्यास के अन्य पात्र अपनी पूर्ण स्वाभाविकता, सजीवता और सक्रियता के साथ जरवेस की ही विडंबना को गति और पूर्णता प्रदान करते हैं लेकिन पूरे कथानक की बुनावट ऐसी है कि पाठक एक बार उपन्यास पढ़ना आरम्भ करके बिना समाप्त किये उसे छोड़ नहीं पाता। हिन्दी में ज़ोला के इस अमर उपन्यास का प्रथम प्रामाणिक अनुवाद है। अनुवादक ने मूल लेखक के भावों और शैली को ज्यों-का-त्यों उतार देने में अपूर्व सफलता प्राप्त की है।

नाना की माँ

✡

एमिल ज़ोला

कि ता ब म ह ल
इलाहाबाद, बम्बई, दिल्ली
१९५९

यह संस्करण

१९५९

मूल लेखक

एमिल ज़ोला

अनुवादक

गंगा प्रसाद

प्रकाशक

किताब महल, इलाहाबाद

मुद्रक

यू० पी० प्रिन्टिङ्ग प्रेस, २८ एडमॉन्स्टन रोड, इलाहाबाद ।

१. जरवेस

जरवेस को प्रतीक्षा करते करते सबेरा होने को आया पर लैन्टियर का कहीं पता न था। जाड़ा काफी था। उसके अंग ठिठुरने लगे और वह खिड़की से हटकर खाट पर लेट गई। तरह-तरह की बातें दिमाग में आने लगीं, वह उन्हीं में खो गई। कब आँसू निकले और लुढ़क कर गालों तक आ गये उसे मालूम ही न हुआ। अभी एक हफ्ते पहले की बात है दोनों ने व्यूडी टीटीज में बैठ कर सुखपूर्वक खाया पिया था। वहाँ से उसने जरवेस को बच्चों के साथ सोने घर भेज दिया था और स्वयं कहीं चला गया था। उसी दिन से वह रोज कभी आधी रात को, कभी तड़के, आता और आते ही कुछ न कुछ प्रसंग छेड़ देता। नौकरी के ही लिए इधर-उधर भटकता रहा है।

आज भी वह उसकी प्रतीक्षा में इधर-उधर देख रही थी। एकाएक उसे लगा कि लैन्टियर ग्रैन्ड बालकन के नाचघर में अभी-अभी घुस गया। उस नाचघर में चारों ओर दस खिड़कियाँ थीं, जगमगाती हुई रोशनी बाहर फूटी पड़ती थी। उसको एक झलक एडील की भी मिली। एडील को वह जानती थी। उसने भी उस दिन साथ ही भोजन किया था। एडील उसके पीछे-पीछे हाथ हिलाती चली जा रही थी। लगता था जैसे अभी तक दोनों एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए थे और अभी-अभी छोड़ा है।

पड़े-पड़े उसे झपकी आ गई। पाँच बजे जब फिर जागी तो लैन्टियर

नहीं आया था। वह एक तो वैसी ही दुखी थी, एकाएक सिसक उठी। लैन्टियर ने पहली बार ही रात बाहर बिताई थी। वह बिस्तर पर बैठ गई, अपनी आधी देह चादर से ढक ली। आँखें भरी-भरी थीं वैसे ही उसने कमरे की ओर देखा, दीवार से सटी हुई एक बड़ी सी अल्मारी रक्खी थी, बीच में तीन कुर्सियाँ और एक टूटी हुई मेज पड़ी थी। मेज पर एक मुँह टूटा पानी का घड़ा भी रक्खा था।

बगल में लोहे की खाट पर उसके बच्चे सो रहे थे। कोने में एक बक्स खुला हुआ पड़ा था। कुछ मैली कमीजें दो-एक मोजे और एक पुराने हैट के अतिरिक्त उसमें कुछ भी न था। कुर्सियों के पिछवाड़े की ओर दीवार पर एक फटा शाल लटक रहा था। दो गंदे पतलून और दो एक ऐसे कपड़े जो गुदड़ी वालों के लिए भी बेकार थे टँगे हुए थे। दो मैंटलपीसों के बीच में माँट डी पाइटी के यहाँ गिरवी रक्खे हुए कपड़ों की हल्के गुलाबी रंग की रसीदें पड़ी थीं। वह होटल का सबसे अच्छा कमरा था। दुमंजिले पर था। सड़क का सारा दृश्य वहीं से दिखाई पड़ता था।

बच्चे एक ही तकिया पर सिर रक्खे अगल-बगल पड़े थे। आठ साल का क्लाड आराम से हाथ चादर से बाहर किये खर्राटे ले रहा था और चार वर्ष के एटीन मार्ट की गर्दन के नीचे हाथ डालते हुए ऐसा सो रहा था जैसे मुसकुरा रहा हो।

जब जरवेस की निगाह उन पर पड़ी तो सिसकियों की बाढ़-सी आ गई। उसने मुँह में रूमाल का छोर ठूँस लिया जिससे आवाज बाहर न निकले। फिर उसी तरह नंगे पाँव खिड़की की ओर भागी और खिड़की के बाहर जितना भी झुक कर इधर-उधर देख सकती थी, अगल-बगल के रास्तों को देखती रही।

वह होटल बोलवार्ड सड़क पर था और बैरियर पोसीनेयर की बाईं ओर पड़ता था। ऊपर तक गहरे लाल रंग में पुती दुमंजिली इमारत

थी, कहीं-कहीं धब्बे पड़े हुए गंदे पर्दे भी लगे थे। दोनों खिड़कियों के ऊपर एक काँच की लालटेन थी, उस पर एक बड़ा-सा निशान बना था। उसमें सीलन और धूल से कुछ-कुछ मिटे हुए पीले अक्षरों में लिखा था—

बाँकोवर होटल
मालिक : मार सोलियर

लालटेन की रोक पड़ जाने के कारण जरवेस जितना चाहती थी न देख पाती थी; वह बार-बार उभकती थी, रूमाल अब भी मुँह में लगा था। उसने दाईं ओर राशशेमार्ट की ओर देखा। कई कसाई अपनी दूकानों के सामने खूनी कमीजें पहने हुए खड़े थे। एक हवा का झोंका आया और ताजे कटे हुए गोश्त की बदबू उसके नथुने में भर गई। उसने बाईं ओर लारीबासियर के अस्पताल की ओर देखा, रिबन की तरह पतली सड़क पड़ी थी। उसने एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक दीवालों पर नजर दौड़ाई। इन्हीं के पीछे से उसे रात को भयानक चीखें और पुकारें सुनाई दी थीं, मानो कोई निर्मम हत्या हो रही हो। उसे डर-सा लग आया और दिखा मानो किसी अँधेरे कोने में, नमी सीलन के बीच एक आदमी की लाश पड़ी है, उसका गला कटा है वह पहचान रही है वह लैन्टियर ही है।

तभी उसने उस भूरी लम्बी दीवार की ओर आँख फेरी, एक सुनहला धुँधलका-सा दिखाई दिया। पौ फट चुकी थी, सुबह होने वाली थी। इसके बाद ही उसकी निगाह ला चैपेल और मान्टमात्रे से आने वाले जानवरों गाड़ियों और भेड़ों पर पड़ी। लगता एक बड़ी धारा उमड़ती चली आ रही

है। धारा कहीं-कहीं ठहर भी जाती थी। उनके साथ ही अपने-अपने कामों पर जाते हुए औजार कंधे पर रक्खे और खाना बगल में दबाये अनगिनती मजदूर भी दौड़े चले जाते थे। जरवेस को ऐसा लगा कि लैन्टियर भी शायद इन्हीं के साथ है और वह खिड़की से गिरने का डर छोड़कर जोर से उझकी। लेकिन उसे फिर निराश होना पड़ा। वह फूट पड़ी और रूमाल फिर लगा लिया। तभी एक भारी आवाज से चौंक उठी—

'क्या लैन्टियर नहीं आया ?'

'नहीं तो।' उसने हँसने की भी कोशिश की।

वह मांशियर क्रूपे था। लोहारी का काम करता था, पास ही एक मकान के ऊपर के छोटे से कमरे में रहता था। उसके औजार एक झोले में कंधे पर थे। उसने दरवाजे को खुला पाया और भीतर चला गया। बड़ी सहानुभूतिपूर्वक बातें भी करता रहा; बीच में बोला—

'तुम शायद जानती हो, मैं इन दिनों अस्पताल में काम कर रहा हूँ। यह भी क्या बला है हवा तो आज सुबह-सुबह जैसे काटे खाती है।'

इसी बीच उसने जरवेस को भी ध्यान से देखा। आँखें आँसुओं से डबडबाई हुई लाल हो रही थीं, फिर बिस्तर को देखा वह भी वैसा ही बिना किसी सिकुड़न के था। एक विचित्र तरह से उसने अपना सिर हिलाया, मानों कोई चीज समझ रहा हो, फिर बच्चों की खाट के पास जाकर धीमी आवाज में बोला—

'मैं समझता हूँ कि तुम क्यों परेशान हो ? क्योंकि तुम्हारा आदमी रात को घर नहीं आया। पर इसमें परेशान होने की क्या बात है, उस पर इन दिनों राजनीति का भूत सवार है। पिछले दिनों वह बौखलाया हुआ यूजियन सू के चुनाव के लिए भागा-भागा फिर रहा था। शायद

वह बोनापार्ट के खिलाफ प्रचार में लगा है, रात वहीं मित्रों के यहाँ सो गया होगा ?'

'नहीं.....ऐसा नहीं है ।' ऐसा लगा वह बड़ी कठिनाई से बोल रही है । 'ऐसी कुछ बात नहीं है । मैं जानती हूँ उसने रात कहाँ बिताई है । कूपे, हमारे भी दुख सारी दुनिया की ही तरह हैं ।'

कूपे ने सिर्फ कनखियों से उसे देखा और चल दिया । चलते-चलते बोला—

'कहो तो कुछ दूध ला दूँ ।'

'नहीं, नहीं, बड़ी कृपा है जब जरूरत होगी आप तो हैं ही !'

जरवेश ने बड़ी ही नम्रतापूर्वक उत्तर दिया । अब जरवेस फिर अकेली रह गई । वह फिर खिड़की के पास आई ।

पॉसनियर के दोनों कोनों पर दो शराबखाने हैं । वे अभी-अभी खुले थे और कुछ मजदूर थूकते-खखारते हुए भीड़ लगाये हुए थे । कुछ लोग ब्राँडी पानी के साथ पी रहे थे, कुछ यों ही । जरवेस उस समय बाईं ओर देख रही थी, उसे लगा मानो लैन्टियर अभी अंदर गया है । तभी एक मोटी नंगे सिर वाली ढीले-ढाले कपड़े पहने हुए स्त्री नीचे से चिल्ला उठी—

'मैडम लैन्टियर, इतनी जल्दी उठ गईं ?'

'ओह, आप हैं, मैडम बाश, हाँ जरा जल्दी ही उठी । आज ज्यादा काम करना है ।'

'हाँ काम तो करना ही पड़ेगा, अपने आप नहीं हो जाता ।'

मैडम बाश का उसी घर से कुछ सम्बन्ध था जिसमें यह व्यू डिक्स टीटीज होटल था । इसी बातचीत के बीच उसने जरवेस को कई बार बड़ी सावधानी से देखा था और शायद उसी लिए फिर बिल्कुल नीचे ही आ गई और बोली—

'क्या मिस्टर लैन्टियर अब भी सो रहे हैं ?'

जरवेस के गाल लाल पड़ गए पर एकाएक छिपाते हुए बोली—'हाँ सो रहे हैं।'

इतने में मैडम बास ने जरवेस की आँख से ढलते हुए आँसू भी देख लिये। वह सारी बात समझ कर जाने ही को थी कि एकाएक रुक कर बोली—

'आज सुबह गुसलखाने तो आओगी ही, क्यों? अच्छा, मुझे भी कुछ कपड़े धोने हैं, अपनी बगल में तुम्हारे लिए जगह ले रक्खूँगी। वहीं कुछ बातें भी होंगी।' और सहसा किसी आंतरिक दया से भर कर आगे कहने लगी, 'देखो, खिड़की के पास न खड़ी हो, तुम जाड़ा खा गई हो, मुँह कैसा हो रहा है, बीमार पड़ जाओगी।'

लेकिन जरवेस न हिली। वह उसी जगह पर लगभग दो घंटे खड़ी रही, घड़ी ने आठ बजाये। थोड़ी देर में लैन्टियर अंदर आया। जरवेस उस समय कुर्सी पर बैठी थी। उसके हाथ दोनों तरफ ढीले लटक रहे थे। वह उदास तो थी पर रो न रही थी।

'तुम आ गए!' वह एक दम पुकार उठी और हुई कि उसकी गर्दन से लिपट जायगी।

'हाँ, आ तो गया.....लेकिन इससे क्या? देखो, अपनी बेवकूफी रहने दो!' उसने उसे अलग ढकेल दिया और कुछ क्रुद्ध मुद्रा में उसने अपनी फेल्ट हैट आलमारी पर फेंकी। वह छोटे कद का सुन्दर और स्वस्थ मनुष्य था। रंग कुछ दबा हुआ था, मूछें नरम पर ऐंठी हुई थीं। वह एक तंग कोट पहने था, बटन सभी बंद थे।

जरवेस अपनी कुर्सी पर फिर बैठ गई थी और कुछ गुस्से में बुदबुदा रही थी।

'मैंने रात भर पलक तक नहीं मूँदी—मैं समझती थी तुम मर गए। रात भर कहाँ रहे? मुझे लगता था जैसे मैं पागल हो जाऊँगी। सच-सच बताओ न, कहाँ थे रात भर?'

'मुझे काम था।' और यह कह कर उसने अजीब ढंग से अपने कंधे हिलाए जैसे कोई बात ही न हो। 'लेकिन मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं है कि कोई, मेरी निगरानी करे। अच्छा, मुझे कुछ काम है, करने दो, जाओ यहाँ से।'

जरवेस का जी भर आया। वह सिसकने लगी। इसी बीच लैन्टियर ने कुर्सियाँ इधर-उधर हटाईं। शोरगुल हुआ। बच्चे जग पड़े। वे चौंक पड़े। उनके कपड़े खुल रहे थे, बाल मुँह पर आ गए थे। उन्होंने भी माँ का ही साथ दिया और रोने लगे। लैन्टियर झल्ला उठा—

'बड़ा अच्छा राग निकाला है। मैं कहता हूँ कि तुम सब लोग चुप नहीं होते तो मैं जाता हूँ फिर शायद जल्दी लौट कर न आऊँगा। बोलो, चुप होते हो कि नहीं। अच्छा, गुडबाई, मैं जहाँ से आया था वहीं फिर जा रहा हूँ.........।'

उसने अपना हैट उठाया। जरवेस उसकी ओर 'नहीं' 'नहीं' चिल्लाती हुई दौड़ी। और तभी उसने बच्चों को दुलार-पुचकार कर चुप करा दिया और खाट पर फिर लिटा दिया। वे फिर प्रसन्न हो गये और साथ ही खेलने लगे। लैन्टियर बिना जूते उतारे उसी तरह खाट पर लेट गया मानों बहुत थका हो। उसका मुँह लगता था थकान से सफेद पड़ गया हो, जैसे रात भर सोया न हो। उसने अपनी आँखें बन्द न कीं बल्कि कमरे में चारों ओर देखता रहा। वह बुदबुदाया—

'अच्छी जगह है।'

तब जरवेस को देखते हुए कुछ जोर से बोला—

'क्या तुमने अपने आप कपड़े धोना छोड़ दिया? मुझे तो कुछ ऐसा ही लगता है?'

जरवेस की उम्र सिर्फ अभी २२ साल की थी। वह लम्बी और पतली थी। उसके चेहरे की रेखाएँ इतनी कठिनाई और मुसीबतों के बाद भी अभी काफी नरम थीं।

लेकिन इस समय बाल बिखरे थे। आँखें लाल थीं, आँसू के धब्बे पड़े थे, खुमारी-सी छाई थी, न पाँवों में चप्पल थे न ठीक से कपड़े, लबादे में भी तमाम दाग पड़े थे। देखने में ऐसा लगता था मानों अपनी उम्र से दस साल बड़ी हो।

लैन्टियर के शब्दों को सुनते ही जैसे उसकी सारी उदासी और संकोचशीलता हट गई, वह चौंक उठी और काफी तेजी से बोली—

'ऐसा कहते तुमको शर्म नहीं आती? तुम जानते हो कि जितना मुझसे होता है करती हूँ। हम लोग ऐसी जगह रह रहे हैं इसमें मेरी गलती है कि तुम्हारी। जब हमारे दो बच्चे हैं तो कम से कम ऐसी जगह जरूर होनी चाहिए जहाँ दो बूँद गर्म पानी मिल सके। जब हम शुरू में पेरिस आये थे तो आते ही हमको एक अच्छा घर ढूँढ़ लेना चाहिये था। यही तो तुमने भी वादा किया था न?'

'अच्छा.... हूँ.....' वह कुछ बुदबुदाया। फिर बोला—'मेरे पास जो भी पैसा था उसका जितना मैंने उठाया है उतना ही तुमने। मेरे साथ तुमने भी मोटी-मोटी बढ़िया रोटियाँ खाई हैं....। खैर इस बारे में झगड़ा करना ठीक भी नहीं है।'

जरवेस ने जैसे उन शब्दों पर ध्यान नहीं दिया, वह कहती ही गई—

'तब भी, घबड़ाने की कोई बात नहीं है। वह ला रू न्यू में कपड़ा धोने वाली है न, मैडम फाकनियर, मैं उससे मिली थी। उसने सोमवार के दिन से मुझे बुलाया है और अगर तुम भी इसी बीच अपने मित्र के साथ लगे जाते तो फिर क्या है, छः महीने में हम लोग फिर ठीक हो जायँगे। इस बीच हम कोई ऐसी सस्ती जगह ढूँढ़ें जहाँ कुछ ठीक से रहा जाय। अब तो सिर्फ एक ही रास्ता रह गया है, हम दोनों जुट जायँ, खूब काम करें.....'

इतने में लैन्टियर ने अपना मुँह जैसे ऊब कर दीवाल की ओर फेर लिया। जरवेस और जल उठी:—

'मैं जानती हूँ, अच्छी तरह जानती हूँ कि तुम काम नहीं करना चाहते। तुमको तो चाहिए अच्छे-अच्छे कपड़े पहिनने को और घूमने के लिए रात, दिन। जब से तुमने मेरे सारे कपड़े उस कबाड़ी के यहाँ गिरवी रख दिये हैं तुमको मेरी शकल भी नहीं अच्छी लगती। लेकिन हटाओ इन बातों को छोड़ो। तुमने रात जहाँ बिताई वह भी मैं जानती हूँ। अपनी आँखों से देखा है कि तुम उस आवारा एडील के साथ ग्रैंड वाल्कन में गये थे ? बड़ी अच्छी लड़की चुनी है तुमने, वह अच्छे कपड़े पहनती है, साफ-सुथरी रहती है। ठीक है, इसके भी कारण हैं। उस रेस्ट्राँ का एक-एक आदमी उसको अच्छी तरह जानता है और अगर वह न जानी जायगी तो क्या कोई पवित्र और ईमानदार लड़की जानी जायगी·····।'

लैन्टियर बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। उसके आँखों के आगे अँधेरा भर गया था, चेहरा पीला पड़ गया था।

'मैं जो कुछ कहती हूँ, ठीक कहती हूँ। मैडम बाश अब उसको या उसकी बहन को बिल्कुल ही न रहने देंगी, जब देखो आदमियों का ताँता लगा रहता है·····'

लैन्टियर ने जोर से दोनों मुट्ठियाँ बाँधी, पर न जाने कैसे मारने से अपने को रोक कर उसको जोर से पकड़ कर झकझोर दिया। कमरे में बिल्कुल स्तब्धता छा गई। कोई एक दूसरे से न बोल रहा था। लैन्टियर जैसे किसी का इंतजार कर रहा हो और जरवेस जैसे किसी बात के लिए जल्दी कर रही हो। उसने गंदे-मटमैले कपड़े इधर-उधर से इकट्ठे किये और एक बंडल बना लिया। तब वह बोला—

'यह क्या, कहीं बाहर जा रही हो ?'

पहले तो उसने जवाब न दिया, पर जब उसने गरज कर वही सवाल दुहराया तो बोली—

'हाँ जा रही हूँ, कपड़े जो धोने हैं, लड़के तो गन्दे नहीं रह सकते!'

इस पर उसने दो, तीन रूमालें और उसकी ओर फेंकीं। फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद पूछा—

'तुम्हारे पास कुछ पैसे हैं?'

वह एकदम उछल पड़ी और गंदे कपड़ों को उठाते हुए बोली—

'पैसा, पैसा मेरे पास कहाँ से आया, मैं चोरी तो करती नहीं! परसों ही तो तुम मेरी काली वाली स्कर्ट दे कर तीन फ्रैंक लाये थे! उसी से हम लोगों ने दो बार नाश्ता किया है, फिर पैसा रुकता कहाँ है! मेरे पास सिर्फ चार सूज बचे हैं, वे गुसलखाने में देने पड़ेंगे, मैं दूसरी औरतों की तरह रुपया कमाती तो हूँ नहीं, मेरे पास पैसे कहाँ से आये!'

उसने कुछ जवाब न दिया और फटे पुराने कपड़ों पर नजर डालता हुआ बिस्तर से उठा। उसने पतलून और शाल लिये और आलमारी खोल कर दो अन्डरवियर और मोजे लिये। इन सबका उसने एक बंडल बनाया और जरवेश की ओर फेंकते हुए बोला—

'लो, ये ले जाओ और कबाड़िये के यहाँ से जल्दी आओ!'

'तुम कहो तो मैं बच्चे को भी ले लूँ। भगवान! अगर कहीं कबाड़ी बच्चों को भी गिरवी रखते होते तो कितना अच्छा होता!'

इसके बाद ही माँट डी पिटी तक गई और जब एक घंटे बाद लौटी तो उसने पाँच चाँदी के फ्रैंक मैन्टिलपीस पर रख दिये और रसीद को उन्हीं मोमबत्तियों के बीच डाल दिया। उसने धीरे से कहा—

'उसने बस इतना ही दिया है। मैं छः फ्रैंक माँग रही थी लेकिन उसने नहीं दिये। वे हमेशा अपना ही फायदा देखते हैं, फिर भी वहाँ इतनी भीड़ रहती है!'

लेन्टियर ने पैसा एक दम नहीं ले लिया। उसने उसे मॉट डी सिटी तक सिर्फ इसलिए भेजा था कि वह पैसे ले आये जिससे वह जरवेस को कुछ भोजन या पैसा जरूर देकर जाय, पर जैसे ही उसने एक कागज में लिपटा हुआ थोड़ा सा माँस और रोटी देखी तो उसने चुपचाप सारे पैसे जेब में किये। बोल उठी—

'दूध वाली के आठ दिन के पैसे पड़े हैं, इसलिए मेरी हिम्मत उसके यहाँ जाने की पड़ी ही नहीं। लेकिन मैं जल्दी ही आ रही हूँ, तुम जब तक थोड़ी रोटी और टिकियाँ ले आओ और ठीक-ठाक करो। हाँ, थोड़ी शराब भी लेते आना!'

उसने कुछ जवाब नहीं दिया। ऐसा लगा कि दोनों में समझौता हो गया है; पर ज्योंही जरवेस बक्स की ओर लेन्टियर से कुछ कपड़े लेने के लिए बढ़ी, वह गरज उठा—

'नहीं, उसे रहने दो!'

'क्या, क्यों रहने दूँ? कितने मैले हैं? ये कपड़े पहनने लायक तो नहीं हैं, क्यों न लूँ?' उसने कुछ ताज्जुब से कहा।

और जरवेस के मुँह पर चिंता की लकीरें उभर आईं। उसने गुस्से में आकर सारे कपड़े उसके हाथ से छीन लिये और बक्स में फिर भर दिये।

'बेवकूफ.....कहना ही नहीं मानती! मैं अगर कोई बात कहता हूँ तो किसी मतलब से कहता हूँ!'

'लेकिन क्यों, तुमको इन कमीजों की क्या जरूरत है; कहीं जा तो रहे नहीं, क्यों न ले लूँ?' इस बार जरवेस का मुँह पीला पड़ गया और एक आशंका उभर आई। वह कुछ रुका, जरवेस की मासूम निगाह के आगे जरा डगमगाया।

'क्यों न रोकूँ, मेरे कान सुनते-सुनते पक गये हैं कि तुम मेरे कपड़े धोती हो, सीती हो, सुधारती हो; जाओ अपना काम करो मैं अपना कर रहा हूँ?'

जरवेस जैसे पिघल गई। उसने क्षमा माँगी; कहा कि उसने यह कुछ किसी बुरे इरादे से नहीं कहा। लेकिन उसने अनसुनी करके बक्स को जोर से बन्द कर दिया और उसी पर चढ़ कर बैठ गया। बीच-बीच कुछ उसने ऐसा कहा, मानों वह कम से कम अपने कपड़ों का मालिक तो है ही। लेकिन वह जरवेस की निगाह से डरता था, इसलिए फिर बिस्तर पर लेट गया। बहाना किया कि उसको नींद लगी है, इतनी बातों से उसका सिर दर्द करने लगा है और वह सोने का स्वाँग करने लगा।

जरवेस का मन दुविधा में पड़ गया। वह अब गुसलखाने न जा कर बैठ कर कपड़े सीना चाहती थी। पर जब लैन्टियर खर्राटे भरने लगा तो उसने साबुन और नील का डब्बा उठाया और बच्चों के पास जाकर जो नीचे किसी कार्य से खेल रहे थे धीरे से कहा—

'देखो, तुम बड़े अच्छे लड़के हो, शोर न मचाना। पापा सो रहे हैं।'

जब वह कमरे से गई तो वहाँ सब कुछ निस्तब्ध था। सिर्फ बच्चों की हल्की हँसी ही गूँज रही थी। उस समय दस से ज्यादा बजा था और खिड़की पर तेज धूप आ गई थी।

गुसलखाना एक बड़े से 'शेड' की तरह था। उसकी छत कुछ नीची थी, धन्नियाँ यों ही रंगी थीं, उसमें बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ थीं जिसमें रोशनी भी आती रहती थी। वहाँ कमरे में हल्का धुँधलका था, साबुन के झाग की महक भर रही थी। बीच के रास्ते के दोनों ओर बड़े-बड़े टब रक्खे थे और औरतें दो कतारों में अपने लबादे समेटे बाँहें सिकोड़े हुए बैठी साबुन लगा रही थीं, उनके रङ्गीन मोजे और जूते दिख रहे थे।

'इधर आओ, इधर.....' कहते हुए मैडम बाश ने उसे बुलाया। इसके बाद ही जोर-जोर साबुन घिसती हुई बड़े ढङ्ग से बातें करने लगी।

'यह तुम्हारी जगह है, मैंने ले रक्खी थी, मुझे थोड़े से कपड़े धोने हैं; मि० बाश अपने कपड़े तो देते नहीं और शायद तुम्हारे भी कपड़े कम ही

हैं। बण्डल बड़ा छोटा है। दोपहर तक खतम हो जायगा। पहले मैं अपने कपड़े वेलट की एक धोबिन को देती थी। लेकिन भगवान्.........वह सब चीर-फाड़कर ले आती थी। तब से मैंने सोचा है कि स्वयं ही धो लिया करूँगी। सस्ता भी पड़ता है, साबुन का ही खर्च है।'

जरवेश ने अपना बंडल खोलकर रंगीन कपड़े अलग कर दिये और सादे अलग। मैडम बाश ने उससे कहा, 'चाहे तो सोडा ले सकती है।' पर उसने नाहीं कर दी। इसके बाद ऊपर तक अपनी बाँहें चढ़ा कर नंगी और सुडौल बाँहों को दिखाती हुई बच्चे की कमीज में जल्दी से साबुन लगाने लगी। उसकी फुर्ती देखकर मैडम बाश बोली—

'तुम सचमुच बड़ी मजबूत हो, बाँहें हैं तो दुबली-पतली पर हैं बिल्कुल लोहा!' वह कपड़े एक-एक करके भिगो कर सबुनाती रही। इतने में बातें शुरू हुईं।

'नहीं, मैं झूठ क्यों बोलूँ, हम लोग विवाहित नहीं हैं। फिर लैन्टियर कोई इतना अच्छा आदमी भी नहीं है, कौन आसानी से उसकी पत्नी बनना स्वीकार कर लेगी? अगर मेरे बच्चे न होते तो शायद.........। जब पहला लड़का हुआ था तो मैं चौदह की और वह १८ साल का था। इसके बाद चार साल तक कुछ नहीं। मैं घर में सुखी भी न थी। पापा मैकर्ट जब देखो तब पीटते ही रहते थे। लेकिन अब मैं समझती हूँ कि हम लोगों को विवाह कर लेना चाहिए।'

'अच्छा, तो वह तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार नहीं करता?'

'कभी बड़ा अच्छा था, लेकिन जब से हम पेरिस आये हैं कुछ बदल गया है। पिछले साल उसकी माँ मरी थी। करीब सत्रह सौ फ्रैंक छोड़ गई थीं। वह पेरिस आना चाहता था और मैं भी पापा की मार-पीट से छुटकारा पाना चाहती थी। इसलिए मैं भी राजी हो गई। तब हम दोनों दो बच्चों सहित पेरिस आये। मैं एक अच्छी लान्ड्री चलाना चाहती थी और वह हेटों की दूकान। हम लोग काफी खुश रहते; लेकिन शायद आप नहीं

जानतीं, लैन्टियर बड़ा खर्चीला है। उसे अच्छी-अच्छी चीजें चाहिए, अच्छे-अच्छे मनबहलाव के साधन चाहिए। अब उसको विशेष अच्छा नहीं कह सकते। पहले हम लोग आकर मांटमात्रे होटल में ठहरे थे, खूब खाते-पीते थे, खूब घूमना-फिरना होता था, नाटक-दावतें होती थीं। उसने अपने लिए घड़ी खरीदी थी, मेरे लिए सिल्क के कपड़े ले दिये थे। हाँ, जब पैसा अधिक होता है तो वह स्वार्थीपन नहीं दिखाता। इस हालत में आप खुद ही सोच सकती हैं, दो महीने बाद सब कुछ खतम हो गया। इसके बाद हम बाँकोवर होटल में आये और यह जिन्दगी शुरू हुई।'

जरवेस का गला भर आया था, आवाज भर आई थी। उसने किसी तरह अपने को सँभाला। आँखों में आँसू छलक आये। रेशमी कपड़ों में साबुन लग चुका था—

'मैं समझती हूँ, कि वह कुछ चिड़चिड़ा हो गया है,' मैडम बाश ने जरा गम्भीरता से कहा।

जरवेस ने सिर हिला दिया मानों वह मानती है। उसने ही फिर कहा—

'मैंने इधर बहुत-सी बातें देखी हैं।'

पर जैसे ही जरवेस का पीला चेहरा और काँपते हुए होंठ उसने देखे वह चौंक कर रुक गई; पर फिर उसने ही कहा।

'नहीं, मुझे कुछ नहीं मालूम! हाँ उसे हँसना अच्छा लगता है यही सब कुछ है और वे दोनों लड़कियाँ जो हमारे साथ ही हैं, शायद तुम जानती होगी, एडील और वरजिनी वे भी बड़ी हँसोड़ हैं। वे सब मिल-जुलकर थोड़ी बहुत हँसी-मजाक कर लेते हैं, बस इसे ही चाहे जो कुछ समझो, और तो कुछ है नहीं।'

जरवेस की भौंहों पर पसीना फूट आया, उसके हाथ भीगे ही थे, इसी तरह उसने तीखी दृष्टि बाश पर डाली मानों वह कुछ जानना चाहती

हो। मैडम बाश को इस पर कुछ ताव-सा आ गया। वह अपनी छाती पर हाथ ठोंकते हुए बोली।

'मैं सच कहती हूँ मैंने जो कुछ कहा है इसके अलावा मुझे कुछ नहीं मालूम। लेकिन………' उसने कुछ संयत होकर कहा, 'लेकिन उसकी आँखों में ईमानदारी जरूर दिखती है, बेटी तुम चाहो तो वह विवाह जरूर कर लेगा। मुझे विश्वास है कि वह नहीं न करेगा।'

जरवेस ने अपने गीले हाथों से माथे का पसीना पोंछा। फिर थोड़ा सिर को झटका दिया; लेकिन इस बीच वह अपना काम करती ही रही थी और लगभग सारे रंगीन कपड़े धो चुकी थी। उनको उसने तार से टाँग दिया था।

'तुमने तो करीब सब कपड़े धो डाले। मैं निचोड़ने में तुम्हारी मदद कर सकती हूँ।'

'जरूरत तो नहीं है, बड़ी कृपा है, हाँ अगर मेरे पास चादरें होतीं तो जरूर ही मदद लेनी पड़ती' कहते-कहते जरवेस ने कपड़ों को पानी में डालकर हिलकोरा। इसी बीच बाश चिल्ला उठी—

'देख-देख! वरजिनी आ रही है। अपना कंबल धोयेगी, रूमाल में बाँध रक्खा है।' जरवेस ने निगाह उठाई। वरजिनी की उम्र करीब-करीब वही थी जो जरवेस की; लेकिन कद में लम्बी थी, कुछ मोटी भी थी। वैसे तो उसका चेहरा लम्बा था पर देखने में सुन्दर लगती थी। उसने रोएँदार काले कपड़े पहन रक्खे थे और गले में एक लाल फीता बाँधे थी। उसके जालीदार बाल अच्छी तरह सजे हुए थे।

बीच के रास्ते में आकर वह कुछ सकुची, आँखें मूँदी। मानों किसी चीज को या किसी को ढूँढ़ रही हो, लेकिन जब उसने जरवेस को देखा तो अकड़ती हुई व्यंगात्मक ढंग से हँसती हुई उसी ओर गई और उससे थोड़ी ही दूर पर बैठ गई। मैडम बाश भुनभुना उठी—

आज सूरज पश्छिम में निकला है, इसके पहले किसी ने इसको एक टुकड़ा धोते नहीं देखा। बड़ी काहिल है। अपने जूते के बटन तक नहीं टीक रखती। बिल्कुल अपनी बहन की तरह है। वही चुड़ैल एडील। दूकान से तीन दिन में दो दिन गायब रहती है। अब क्या धो रही है, शायद लबादा है? कितना गन्दा है छिः छिः।'

इन बातों से प्रकट होता था कि वह सिर्फ जरवेस को खुश करना चाहती थी। जरवेस ने कुछ ध्यान नहीं दिया। बल्कि वह अपने काम में और तेजी से लग गई थी। अब वह नील तैयार करके कपड़ों को टब में डुबो रही थी और साथ ही निचोड़ कर तार पर फेंकती जाती थी।

जरवेस ने इस बीच वरजिनी की ओर देखा तक नहीं। लेकिन उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह उसकी ओर देख जरूर रही है। इतना ही नहीं। उसने चिढ़ाने वाली कुछ 'ऊँह' 'आँह' भी सुनीं। वास्तव में वरजिनी उसको चिढ़ाने के ही लिए आई थी। जैसे ही जरवेस ने उधर अपनी निगाह उठाई तो दोनों काफी देर तक एक दूसरी से नजर मिलाये देखती ही रहीं।

'छोड़ो भी इससे क्या, यह क्या कर लेगी!' मैडम बाश ने बुदबुदा कर कहा। तभी जरवेस ने अपना आखिरी कपड़ा निचोड़ते हुए दरवाजे के पास हँसने और बातें करने की आवाज सुनी। सब औरतें इधर-उधर देखने लगीं। जरवेस ने पहचान लिया कि क्लाड और एटीन थे। माँ को देखते ही वे जोर से (पानी में फच-फच करते हुए) उसकी ओर दौड़े, उनके जूते खुल रहे थे। क्लाड बड़ा होने के नाते एटीन को घसीट रहा था। एकाएक ऐसा लगा कि बच्चे सहम गये हों, उन्होंने माँ के लबादे में अपना मुँह छिपा लिया। जरवेस ने पूछा—

'क्यों, तुमको पापा ने भेजा है?'

और जैसे ही वह एटीन का फीता बाँधने के लिए झुकी तो उसने क्लाड के हाथ में कमरे की चाभी देखी।

'तुम चाभी क्यों उठा लाये बताओ ?' उसने कुछ ताज्जुब से पूछा। लड़का चाभी वाली अँगुली की ओर देख रहा था, वह अब तक भूल ही गया था। उसे एकाएक कुछ याद आया और धीरे से बोली।

'पापा चले गये ?'

'नाश्ता लेने गये हैं, क्यों ? उन्होंने तुम्हें मेरे पास यहाँ भेजा है न ?'

क्लाड ने इस पर एटीन की ओर देखा, जैसे कुछ कहने में संकोच कर रहा था। एटीन ही बोला—

'पापा चले गये। उन्होंने बिस्तर से उठकर अपना सामान बक्स में रक्खा था। फिर सीढ़ी से उतर कर बक्स गाड़ी में चढ़ाया था। हमने उनको देखा है—वे चले गए।'

जरवेस झुककर एटीन का फीता बाँध रही थी। धीरे-धीरे खड़ी हुई। उसका मुँह उतर गया। दोनों हाथों से सिर थाम लिया। उसे लग रहा था कि सिर फटने वाला है। वह कुछ कह न सकी, सिर्फ यही शब्द बार-बार रटती रही, 'हे भगवान, हे भगवान्........., हे भगवान !'

मैडम बाश ने तभी बड़ी उत्सुकता से बच्चे से पूछा, बाश इस समय अपने को महत्त्वपूर्ण समझकर खुशी हो रही थी।

'ठीक से बताओ, उन्होंने दरवाजा बन्द किया था ? और कहा था कुँजी माँ को दे आओ ?' और फिर बड़ी धीमी आवाज में, 'गाड़ी में कोई औरत तो न थी ?' ऐसा लगा कि बच्चा घबरा गया है। लेकिन फिर उसी तरह कहने लगा—

'वे बिस्तर से उठे, अपना सामान बक्स में रखा और चले गये.....' इतना कह कर वे दोनों उधर पानी से खेलने लगे।

जरवेस रोई तो नहीं, पर उसे लगा कि जैसे घुटी जा रही है। उसने दीवाल की ओर मुड़कर दोनों हाथों से मुँह ढाँक लिया। सिर से पैर तक उसका शरीर काँपा जा रहा था, बीच-बीच सिसकियाँ और भर-भर साँसें लेने की आवाज निकल पड़ती थी। वह अपनी आँखों को और ज्यादा

तेजी से दबाये जा रही थी मानों वह अपने चारों ओर एक अँधेरी गुफा बना लेना चाहती हो, ताकि उसे कोई न देखे।

'शान्त हो बेटी, घबराते नहीं, देखो तो सब लोग तुम्हीं को ताक रही हैं। तुम तो अभी ऐसी थीं जैसे उसे चाहती ही नहीं हो और अब इस तरह हो जैसे कलेजा ही फट जायगा। तुम भी किसी आदमी की इतनी परवाह करती हो? हे भगवान, हम औरतें कितनी मूर्ख होती हैं?

वह एक मातृत्व-जैसे स्नेह में कहती ही रही—

'तुम जितनी सुन्दर हो, उतनी ही भोली भी। अच्छा, मैं तुमको अब पूरी बात बता दूँ। जब सबेरे नीचे से मैं तुमसे बातें कर रही थी तुमको याद है न, उस समय मैंने देखा था कि लैन्टियर एडील के साथ आया था। मैंने उसका मुँह तो नहीं बल्कि कोट देखा था। मि० बाश ने तो सबेरे सीढ़ियों से उतरते तक देखा। उसके साथ एडील थी, अब समझीं। एक आदमी और है जो हफ्ते में दो-तीन बार इस वरजिनी से भी मिलने आता है।'

और वह जैसे साँस लेने रुकी.........और फिर धीमी आवाज में कहने लगी—'इधर देखो, तुम्हारे ऊपर कैसे हँस रही है, पूरी चुड़ैल है, बिल्ली कहीं की! कपड़े धोने थोड़े आई है सब ढोंग है। लैन्टियर और अपनी बहिन को विदा करने और यह देखने आई है कि तुम्हारे ऊपर देखें क्या असर पड़ता है?'

जरवेस ने अपने हाथ मुँह से हटा लिये और चारों ओर देखा। वरजिनी, वह उस समय दो-तीन औरतों के साथ इठला रही थी, उसकी देह में आग-सी लग गई। वह कुछ झुकी और अपने हाथ फैलाये मानों कुछ टटोल रही हो और दो-तीन कदम आगे बढ़कर झट बाल्टी भर साबुन का फेन जोर से वरजिनी की ओर फेंका। फेन पड़ते ही वह तड़प उठी—

'डाइन कहीं की, भाग यहाँ से !'

सारी औरतें तुरन्त ही इकट्ठा हो गई और बेंचों पर चढ़-चढ़कर तमाशा देखने लगीं। वरजिनी ने दुहराया—

'पूरी डाइन है। क्या हो गया है इसको ?'

जरवेस शान्त खड़ी रही। उसका चेहरा जलता-बुझता था और होंठ खुले के खुले थे। वरजिनी कहे जा रही थी—

'देहात से ऊबकर यहाँ भागी है पर ऐसा लगता है एक टाँग वहीं छोड़ आई है, लँगड़ी !' सब औरतें हँस पड़ीं। वरजिनी जैसे जीत गई हो और उत्साहित होकर जोर-जोर से कहने लगी—

'जरा और नजदीक आ तो बताऊँ। गाँव में रहती तो अच्छा था जंगलिन !·········यह तो कहो कि अच्छा हुआ कि फेन मेरे पाँव पर ही पड़ा, अगर कहीं एक भी बूँद आँख में पड़ जाती तो घुटनों के बीच दबा कर अच्छी तरह उसी में गोते लगवाती, जाने क्या हो गया है·········?' इसके बाद औरतों की तरफ मुँह करके बोली, 'आप ही पूछिए मैंने इसका क्या बिगाड़ा है ? बता न मूर्ख, मैंने क्या किया है ?'

अब जरवेस बोली—'अच्छा हो, अगर तुम इस तरह बड़-बड़ न करो !' पर उसकी आवाज धीमी थी, 'तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि कब मेरा आदमी कहाँ था। अच्छा अब चुप रहो नहीं अच्छा न होगा। मैं एक क्षण में तुम्हारा गला घोंट दूँगी ?'

'इसका आदमी·········ह ह हह·········इसका आदमी ! कहती है 'मेरा आदमी', भला यह इस लायक दिखती है कि इसके कोई आदमी हो ? फिर अगर वह इसे छोड़ गया तो उसमें मेरा क्या दोष ? क्या यह समझती है कि उसे मैंने चुरा लिया ? खैर, वह इसके लिए बहुत अच्छा था, प्यारा था, श्रीमतीजी का आदमी गुम गया है·········अगर कोई इसके आदमी को ढूँढ़ देगा तो बड़ा इनाम पायेगा !'

वरजिनी ने ये शब्द बड़ी ही तिरस्कृत मुद्रा में कहे। सब औरतें हँस रही थीं। जरवेस ने धीमी पर संयत आवाज में कहा—

तू.........तू अच्छी तरह जानती है, तेरी बहिन.........हाँ तेरी बहिन...... ...मैं तेरी बहिन की गर्दन मरोड़ दूँगी—

'ठीक है.........हाँ, अगर तुम चाहो उसकी गर्दन मरोड़ दो ? मुझे क्या पड़ी है ? मेरी ओर क्यों घूर रही हो ? मुझे कपड़े भी न धोने दोगी। छोड़ो, मैं ऊब गई, जाओ यहाँ से !'

पर अब जरवेस न सँभाल सकी, वह कुछ न कुछ कहती ही गई। थोड़ी देर बाद वरजिनी फिर कहने लगी—

'हाँ, मेरी बहिन है, दोनों एक दूसरे को चाहते हैं; तुम क्यों नहीं चाहतीं कि वे दोनों रहें। उसने तुम्हें इन गंदे पिल्लों सहित छोड़ दिया है और तुमने इसके पहले भी तीन आदमी किये थे जिनको तुमने पहले छोड़ दिया था। यह सब बातें तुम्हारे आदमी ने ही मुझे बताई थीं.........वह.........वह तो तुमसे पक गया था.........'

'मूर्ख कहीं की !' दाँत किटकिटाते हुए जरवेस बोली।

वह घूमी और जमीन पर नींव के पानी का टब ही दीख पड़ा। वही उठाकर उसने वरजिनी के मुँह पर फेंका। वरजिनी का कंधा और हाथ रंग गये, वह तड़प उठी, 'मेरे कपड़े भर दिये.........एक मिनट ठहर।'

और उसने भी एक टब लेकर उस पर डाला। दोनों में अच्छी खासी लड़ाई ठन गई। दोनों औरतें कमरे में इधर-उधर भाग-दौड़ करने लगीं। कभी कोई टब पा जाता तो दूसरे पर डालता, कभी पानी, कभी कुछ और हर बार जोर की गुहार उठती। सब लोगों के लिए जैसे एक तमाशा था, वे तालियाँ बजा-बजाकर हँस रहे थे। फर्श पर एक इंच गहरा पानी भर गया था। उसी में वे दोनों फच-फच करती हुई झगड़ रही थीं। एकाएक वरजिनी को बाल्टी भर खौलता हुआ पानी दिख गया; तुरत ही उसने लेकर जरवेस पर फेंका। सब तमाशाई काँप उठे। जरवेस किसी तरह बच

गई पर एक पैर पर पानी पड़ ही गया। वह झुलस कर रह गया। मारे गुस्सा के उसने एक बाल्टी जोर से वरजिनी की ओर फेंकी, वह उसकी टाँग में लगी और गिर पड़ी। एक औरत चिल्ला पड़ी—

'पाँव टूटा—

'ठीक हुआ, उस पर गर्म पानी फेंका था!' दूसरी बोली।

'इस बात पर तो अच्छा ही हुआ, उसके आदमी को नहीं ले लिया!'

अब तक मैडम बाश अपने भर खूब जोर-जोर चीखे जा रही थीं, पर खड़ी थीं। वह काफी डरी थी उसी के पास दोनों बच्चे भी थे। वे दोनों उसके लबादे में लिपटे-लिपटे एक ओर रोते-सिसकते जा रहे थे और दूसरी ओर डरते-डरते 'अम्माँ-अम्माँ' चिल्लाते भी जाते थे। जब बाश ने वरजिनी को देखा कि वह गिर पड़ी तो दौड़कर जरवेस के पास आई और उसे पकड़ कर खींचने लगी। पर जरवेस ने उसे एक ओर ढकेल दिया। बाश फिर वहीं टबों के पीछे जाकर खड़ी हो गई। इस बार वरजिनी जरवेस की गर्दन की ओर लपकी और उसका गला घोंटने को ही थी कि जरवेस ने अपने को छुड़ा लिया। तभी उसकी पकड़ में वरजिनी के बाल आ गए। लड़ाई फिर शुरू हो गई। इस बार न वे चीखीं न चिल्लाईं। कोई एक भी शब्द न बोला। पर इस बार मुठभेड़ काफी गम्भीर थी। वे अपने हाथ बढ़ा-बढ़कर एक दूसरे को नोचतीं, जहाँ पकड़ पातीं खरोंच लेतीं। वरजिनी का फीता और बालों की जाली फट गये थे, जो कपड़ा पहन रक्खा था उसका गला नीचे तक फट गया था, कंधे खुल गए थे, नीचे की सफेद खाल दिखने लगी थी। जरवेस का सलूका फट गया था। उसकी एक बाँह नुच गई थी। कपड़ों के टुकड़े इधर-उधर पड़े थे। जरवेस को ही पहले चोट लगी थी। मुँह से लेकर गले तक तीन लम्बे खरोंचे लग गये थे। उनसे काफी खून निकल रहा था, पर वह आँखें मूँदे लड़े जा रही थी। वरजिनी के अभी तक कोई चोट न लगी थी। जरवेस ने एकाएक उसका इयरिंग पकड़ कर खींच

लिया, कान फट जाने से खून बह निकला। कई औरतें आपस में कहने लगीं—

'इनको अलग तो करो, लड़ते-लड़ते दोनों मर जायँगी।'

चारों ओर औरतें इकट्ठा हो गई थीं। देखने वालों में दो वर्ग थे। एक तो ऐसा था जो समझता था कि दो कुत्ते लड़ रहे हैं और उन्हें लड़ने के लिए बढ़ावा दिये जा रहे थे। दूसरा वर्ग मन ही मन सहम रहा था, वह घबरा रहा था, वे अपने मुँह फेरे हुए थीं। इधर देखने की उनमें हिम्मत ही न थी। अब मुठभेड़ बड़ी जोर की होगी ऐसे आसार बिल्कुल साफ थे।

दोनों औरतें जमीन पर गुथी पड़ी थीं और एक दूसरे की छाती पर चढ़ने के लिए झगड़ रही थीं। एकाएक वरजिनी को एक लकड़ी का टुकड़ा मिल गया। वह बैठी हुई आवाज में बोली—

'ठीक यह तेरे और तेरे कपड़ों दोनों के लिए ठीक होगा!'

इतने में जरवेस ने भी दूसरी औरत से एक डंडा छीन लिया।

'मैं भी तेरी हड्डी-पसली तोड़ दूँगी। जैसे कपड़े कूटती हूँ ठीक उसी तरह.....?' वे दोनों थोड़ी देर तक एक दूसरे की ओर देखती रहीं, उनकी आँखों से एक आग जैसी निकल रही थी। नथुने फड़फड़ा रहे थे। दोनों ने लम्बी साँसें खींचीं। जरवेस ने ही पहले एक डंडा वरजिनी के कंधे पर भरपूर मारा और स्वयं प्रतिघात से बचने के लिए एक ओर झुक गई, वार खाली तो न जा सका, छटता हुआ उसकी भी कमर पर पड़ गया। अब क्या था, वार पर वार होने लगे। अब भीड़ से हँसी की आवाज न आती थी। बहुत लोग खिसक भी गये थे। मैडम बाश बच्चों को लिये दूसरे कोने में दुबुक गई थीं। वे दोनों अब भी सिसक रहे थे, उनकी सिसकियाँ भी उस मारपीट में साफ सुनाई देती थीं।

एकाएक जरवेस बिजली-जैसी लपक कर वरजिनी की कमर से लिपट गई और झूल पड़ी, वरजिनी बेबस हो गई। जरवेस ने नीचे से अपना

डंडा निकाल कर भदाभद पीटना शुरू किया। इसी में उसका लबादा भी उठ गया। वरजिनी के कपड़े जगह-जगह से फट जाने के कारण सफेद खाल खुनाई-सी झलक रही थी। सब औरतें 'बस', 'बस' चिल्ला रही थीं पर वहाँ सुनने वाला था कौन? लोगों ने बीच-बिचाव कराना आवश्यक समझा और वरजिनी को जरवेस के चंगुल से बलपूर्वक खींच कर अलग किया। रोती सिसकती हुई शर्म से लाल वरजिनी कमरे से आँधी की तरह भागी। जरवेस ही वहाँ रह गई। मानों मैदान उसी के हाथ रहा। उसने बड़े इत्मीनान से अपने कपड़े सँभाले और मैडम बाश की सहायता लेकर कपड़ों का बंडल कंधे से लटका लिया। अन्य औरतें दौड़-दौड़कर उसकी मदद कर रही थीं। एक ने कहा—'जरा डाक्टर को दिखा देना, कहीं कुछ टूट-फूट गया हो।'

जरवेस ने जैसे सुना ही न हो, और सब औरतों को छोड़कर दरवाजे की ओर लपकी। बच्चे दरवाजे के बाहर ही खड़े उसे निहार रहे थे। गुसलखाने की मालकिन सामने आकर खड़ी हो गई। उसने मशीन की तरह कुछ पैसे बढ़ा दिए। उसके सारे कपड़े लथपथ थे, चोटों में दर्द हो रहा था। वह कपड़ों का बंडल उसी तरह कंधे से लटकाये, लँगड़ाती हुई चल पड़ी, उसकी गर्दन और ठुड्डी से खून बह रहा था, एटीन और क्लाड अब भी सिसकते हुए उसके अगल-बगल दौड़ रहे थे।

२. जरवेस और कूपे

इस घटना को हुए लगभग तीन हफ्ते बीत गए। उस दिन सब कुछ बड़ा सुहाना था, लगभग ११॥ बजे जरवेस और कूपे एसोम्वायर होटल में बैठे साथ चाय पी रहे थे। थोड़ी देर पहले कूपे होटल के बाहर ही सिगरेट पीता हुआ यों ही टहल रहा था कि जरवेस उधर से निकली। कूपे ने आग्रह करके जरवेस को चाय पीने के लिए राजी किया था और

वह अपनी कपड़ों की डलिया पास ही रखकर एक छोटी-सी मेज के पास बैठ गई थी। एसोम्वायर होटल फादर कोलम्बे का था और बोलवार्ड तथा पाँसीनियर दोनों के एक कोने पर स्थित था। उस पर पहचान के लिए नीले रंग के बड़े-बड़े शब्दों में लिखा था।

'डिसटिलेशन'

अक्षर एक सिरे से दूसरे सिरे तक लिखे हुए थे। दरवाजे के दोनों ओर कनस्टर के पीपों में दो पौदे लगे हुए थे, उनकी पत्तियों पर धूल जम रही थी, दरवाजे के भीतर बाईं ओर काँच के बर्तनों की कतारें थीं। कमरे में सभी चीजें रंगीन तथा पालिश की हुई थीं, ऊँची-ऊँची अलमारियों में शराब की बोतलें और फलों के बर्तन सजे हुए रक्खे थे। बड़े-बड़े फ्लास्क रखे हुए थे जिनके कारण दीवाल न दिखती थी। हाँ उनका प्रतिबिम्ब सामने के शीशों पर पड़ने से लाल, हरी, पीली, अजीब तरह की चमक पैदा हो रही थी। होटल की सबसे मुख्य चीज थी 'डिस्टिलर'। वह कमरे के पीछे की ओर एक जँगले की ओट में रखा था। उस जँगले पर नशे में चूर मेहनतकश लोग झूमते और लटक-लटक कर उसकी पतली टेढ़ी नलियों को कुछ न समझते हुए से ताकते थे। उसके पीछे ही एक बहुत ही गंदी जैसे म्लेच्छों की, रसोई थी।

इस समय होटल में बहुत कम आदमी थे। फादर कोलम्बे एक लम्बा छरहरे बदन का आदमी था, वह स्वयं एक बारह-तेरह साल की लड़की को स्वयं एक कप में शराब दे रहा था। फर्श पर धूप भर रही थी और काले फर्श पर पड़ कर चमक रही थी। काउंटर, आलमारी, मेजों, कोनों, सभी तरफ से शराब की एक भीनी-भीनी गंध वातावरण में व्याप्त हो रही थी और वहाँ का जर्रा-जर्रा नशे में चूर जैसा दिख रहा था।

कूपे ने तभी एक सिगरेट जलाई। वह एक नीली कमीज और नीला हैट पहने था, कपड़े बड़े साफ थे। हँसते समय सफेद दाँत जगमगा जाते

थे। उसकी ठुड्डी कुछ उठी हुई और नाक चपटी थी और मुँह पर बच्चों का-सा भोलापन। बाल मोटे और घुँघराले थे, रंग कुछ साफ था। उसकी उम्र लगभग छब्बीस की थी। उसके सामने ही एक अच्छा-सा काला लबादा पहने हुए झुकी-सी फलों को जल्दी-जल्दी खाती हुई जरवेस बैठी थी। उसका ध्यान उस समय कूपे की ओर कम था, फलों की ओर अधिक। कूपे सिगरेट जलाए हुए अपनी दोनों कोहनियों को मेज पर टेके हुए झुके-झुके एकटक उसकी ओर देख रहा था। जरवेस के मुँह पर एक तरलता छाई हुई थी, एक मोहक भोलेपन के साथ सुकुमारता मुसकुरा रही थी। वे थोड़ी देर पहले कुछ बातें कर रहे थे। एकाएक उसी को फिर उठाते हुए बोला—

'तब तुम्हारी ओर से बिल्कुल 'नाहीं' है, एकदम !'

'जरूर, नाहीं ही समझो,' पर जरवेस के मुँह पर एक हँसी थी, 'मैं कहती हूँ उस बात को उठाना अब ठीक न होगा। तुमने खुद कहा था कि मैं स्वयं ध्यान रक्खूँगा और अगर मुझे कुछ भी मालूम हो जाता तो तुम्हारा यह निमंत्रण स्वीकार न करती !'

कूपे बोला नहीं, सिर्फ ध्यानपूर्वक देखता ही रहा। उसके मुँह पर एक नम्र विनीत आत्म-विश्वास था। वह उस समय स्वच्छ भोली आँखों, भीगे अधखुले होठों को देख रहा था। उनके पीछे एक मीठी ललाई झलक रही थी। उसने भी मुसकान से भीगी हुई स्नेहभरी एक दृष्टि कूपे पर डाली।

'तुमको ऐसी बातें सोचनी ही न चाहिए, सब बेवक़ूफी है। देखते नहीं हो, मैं बूढ़ी हो चली, मेरे आठ साल का बच्चा है, हम लोग भला विवाह करेंगे ?'

इस पर कूपे ने तिरछी दृष्टि डालते हुए कहा—

'तो क्या हुआ, तमाम विवाह जैसे होते हैं, वैसे यह भी सही !'

जरवेस ने जैसे चौंक कर कंधों को झकझोरा।

'मि० कूपे, शायद आपको कुछ अनुभव नहीं है, मुझे तो कुछ जरूर है।''''मेरे दो बच्चे हैं, उनको पालना है। मैं इस तरह अपना वक्त बरबाद करती रहूँगी तो कैसे करूँगी! फिर अपनी मुसीबतों से मैंने एक बात जरूर सीखी है.........पुरुषों से मैं जितना ही दूर रह सकूँ मेरे लिए उतना ही अच्छा है!'

इसके बाद ही वह बड़ी दृढ़ता से तरह-तरह के तर्क देने लगी। वह एक-एक शब्द बहुत ही तौल-तौल कर बोल रही थी। कूपे चुपचाप सुनता जा रहा था, कभी-कभी इतना ही कह देता—

'जरवेस, तुम मेरी भावनाओं की हत्या कर रही हो। हाँ, हत्या कर रही हो।'

जरवेस कहती जाती थी—

'मैं जानती हूँ और मुझे बड़ा दुःख है, पर मैं क्या करूँ! मैं जिस तरह का जीवन इन दिनों बिता रही हूँ वह मुझे बड़ा प्यारा है, उसे छोड़ा नहीं जाता। यदि उसे छोड़ने की बात जरा भी होती तो फिर किसी दूसरे की जगह तुम्हीं होते तो कोई फर्क न पड़ता। तुम्हें मैं जानती हूँ, तुम्हारा स्वभाव जानती हूँ। मैं इन दिनों मैडम फाकनियर के यहाँ लगभग पन्द्रह दिनों से काम कर रही हूँ। बच्चे स्कूल जाते हैं, मैं खुश रहती हूँ, खाती-पीती हूँ, काम करती हूँ। अब तुम्हीं बताओ मैं जिस तरह रह रही हूँ क्या मेरे लिए ठीक नहीं है?'

और वह अपनी डलिया उठाने के लिए झुकी।

'तुम मुझे बातों के लिए रोक रहे हो और मेरे साथी वहाँ मेरी राह देख रहे होंगे। मि० कूपे, तुम्हें तमाम स्त्रियाँ मिल सकती हैं जो मुझसे ज्यादा सुन्दर होंगी और जिनके पास मेरी तरह दो-दो बच्चे न होंगे, समझे!'

उसने घड़ी की ओर देखा और फिर बिठा लिया।

'रुको न ग्यारह बजने में अभी ३५ मिनट हैं, मेरे पास भी २५ मिनट हैं। मुझसे डरती क्यों हो ? फिर हमारे तुम्हारे बीच यह मेज तो है ही। क्या तुम्हें मुझसे ऐसी नफरत है कि पाँच मिनट भी नहीं रुक सकतीं; मेरी थोड़ी-सी बातों को सुन भी नहीं सकतीं ?'

उसने डलिया रख दी, उसके आग्रह को टाल न सकी और खूब घुलमिल कर उसी तरह बातें करती रही। वह नाश्ता घर से करके चली थी और कूपे भी जल्दी ही कुछ खा-पीकर बाहर आकर उसकी प्रतीक्षा करने लगा था। पर यहाँ भी वह मेज पर बैठे-बैठे कुछ खाते-पीते कूपे की बातें सुनती जा रही थी और बीच-बीच आँख उठा कर खिड़की में से होकर बोतलों और फ्लास्कों के बीच से सड़क पर उमड़ती हुई भीड़ को भी देख लेती थी। ये सभी लोग मजदूर थे; काम करने जा रहे थे। नाश्ता-पानी किये हुए वे लोग काफी स्फूर्त दिखते थे। कुछ लोग बेकर† से रोटियाँ लेकर व्यू डी टीटीज में नाश्ता करने घुसे जा रहे थे; कुछ दूसरी दूकानों से और चीजें ला रहे थे। लड़कियाँ दौड़-दौड़कर सबको दूकानों पर चीजें दे रही थीं। एसाम्वायर के सामने भी एक भीड़ इकट्ठी हो रही थी।

एक ने पूछा—

'क्यों ग्रिलेड, आओ, थोड़ी पी ली जाय ?'

और पाँच मजदूर एक साथ भीतर घुस पड़े, उनमें से एक बोला—

'चाचा कोलम्बे, जरा अच्छी दीजिएगा, खराब न हो !'

तीन मजदूर और आ गये।

'आपको ऐसा कहने की जरूरत न थी।' इसी बीच जरवेस ने कूपे से कहा—

'मैं क्या उन्हें चाहती न थी पर जिस तरह से उन्होंने मुझे धोखा दिया.....।'

---

†Baker—रोटियों वाला

वे लैन्टियर के विषय में बातें कर रहे थे। जरवेस ने तब से उसको फिर नहीं देखा था। वह समझती थी कि वह वरजिनी की बहन के साथ ही रह रहा है—और शायद उसी मित्र के यहाँ होगा जो हैटों का कारखाना चलाने की सोच रहा था।

पहले तो जरवेस ने कहीं डूबकर आत्महत्या करने की सोची पर फिर उसे एकाएक विवेक-सा मिल गया। उसने सोचा जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ। अगर लैन्टियर साथ होता तो लड़कों की बरबादी थी। वह उनके लिए कुछ कर ही न पाती, कैसे करती उसका खर्च बेशुमार था। इस दशा में अगर वह कभी चाहे तो बच्चों को देखने आ भी सकता था पर वह खुद आने को न कहेगी और जहाँ तक उसका सम्बन्ध है अपने पर उँगली तक न रखने देगी।

जरवेस ने अपने ये विचार इतनी दृढ़ता से प्रकट किये कि ऐसा लगता था मानो उसके सामने सारी राहें स्पष्ट हैं, उसे अब किसी की आवश्यकता नहीं है। पर कूपे उसे आसानी से छोड़ने वाला न था। इसीलिए वह बार-बार उससे लैन्टियर को लेकर तरह-तरह के प्रश्न पूछता और उसे खिझाता था, वह भी सहूलियत से नहीं, बल्कि काफी जिद्द से। लेकिन उसके चेहरे पर एक ऐसी हँसी थी, बातों में कुछ ऐसा भाव था कि वह बुरा न मान सके। अंत में वह बोला—

'क्या तुमने उसे पीटा था? मैंने सुना है तुम लोगों को कभी-कभी पीट भी देती हो, तो क्या समझा जाय कि तुम जैसी दिखती हो उतनी शरीफ नहीं हो?'

इस पर वह हँसी। यह बात तो सही थी। उसने उस लम्बी, तडङ्गी वरजिनी को पीटा ही था। उस दिन वह कुछ ऐसी हालत में थी कि किसी का भी गला बिना किसी डर के घोंट देती। तभी कूपे ने बताया कि वरजिनी ने मारे शरम के वहाँ रहना छोड़ दिया है, दूसरी जगह चली गई है। इस पर वह और जोर से हँसी। जरवेस जब हँसती थी तो

बचपन की-सी मासूमियत उसके चेहरे पर उभर आती। उसने तभी अपना पतला सुन्दर हाथ फैलाकर कहा—'दुख देना तो मैं एक मक्खी को भी नहीं जानती। हाँ चोटें मैंने भी अपने जीवन में बहुत सही हैं।' इसके बाद वह अपनी जवानी और फ्लासंस की सभी बातें बताने लगी। उसके कहने का मतलब था कि उसके जीवन में अविवेक को कभी स्थान नहीं मिला और न वह कभी पुरुषों के पीछे पागल ही हुई है। पहले जब उसका लैन्ड्रियर से प्रेम हुआ था तो वह केवल १४ वर्ष की थी। वह उसको पति ही मानती आई थी। तब से आज तक उससे जो गलती हुई थी वह यही थी कि वह हमेशा बड़ी ही सौम्य रही है, अक्सर लोगों की बातें स्वीकार कर लेती रही है और लोगों को बड़ी जल्दी अपना लेती रही है। यदि वह किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम करती होती तो अब उसकी इच्छा यह जरूर थी वह बड़ी ही शांतिपूर्वक उसके साथ आराम से हमेशा रहे और किसी तरह की कटुता न आने दे।

इसी बीच कूपे ने पूछा कि क्या उसके बच्चे उसके लिए परेशानी के कारण नहीं हैं? उसने एक हल्की सी चपत लगाते हुए कहा—

'मैं भी तो दूसरी औरतों की तरह हूँ। मुझमें और किसी दूसरी स्त्री में विशेष अंतर नहीं है; पर स्त्रियाँ पुरुषों की तरह नहीं होतीं। वे घर गृहस्थी सँभालती हैं, सब काम करती हैं। मैं आखिरकार उसी माँ की बेटी तो हूँ जो मेरे जालिम बाप की लगभग २० साल तक नौकरानी बनी रही, सब सहती रही। और मेरा वह लँगड़ापन.....'

'लँगड़ापन कैसा? नहीं तो, मालूम तो जरा भी नहीं होता।'

इस पर जरवेस ने केवल सिर भर हिलाया और कुछ हँस कर बोली—

'है क्यों नहीं और जब मैं बूढ़ी पड़ूँगी तो और भी साफ हो जायगा। पर, तुम भी हो विचित्र.....एक लँगड़ी के पीछे मर रहे हो।'

कूपे उसी तरह मेज पर कुहनियाँ रक्खे उसकी प्रार्थना-विनती करता रहा और वह उसी तरह नाहीं करती रही। कूपे जो कुछ कहता बाहर भीड़ की ओर देखती हुई अनसुनी करती रही। इसी समय कई कारखानों की सीटियाँ बज उठीं पर मजदूरों में जैसे कुछ हुआ ही नहीं। वे बड़े इत्मीनान से शराब उड़ाते, सिगरेट पीते रहे और धीरे-धीरे उठ-उठ कर काम पर जाते रहे।

जरवेस ने एकाएक तीन आदमियों का एक गुट देखा। एक बहुत बड़ा था, दो छोटे थे। वे, ऐसा लगता था कि कुछ सोच ही नहीं पा रहे हैं कि क्या करें और अंत में उसी होटल में घुस आये। कूपे कहने लगा—

'मैं इनको जानता हूँ विशेषकर लम्बे सज्जन को, वह मि० मेस बाट्स हैं, मेरे साथी हैं।'

इस समय एसाम्वायर में काफी चहल-पहल थी। दो आदमी अपने-अपने गिलास जोर-जोर खटखटा रहे थे, थे तो लाइन में, पर अपनी बारी के लिए बड़े ही बेचैन थे। चाचा कोलम्बे सब को शराब दे रहे थे।

इतने में मेस बाट्स कूपे के पास पहुँच गया और पीठ पर धीरे-से घूँसा जमाते हुए बोला, 'वह, क्या बढ़िया कमीज पहन रक्खी है और कितनी मस्ती से सिगरेट पी जा रही है। किसने पैसे दिये हैं? जरा आपसे मेरी भी जान-पहिचान कराओ!'

कूपे इस पर कुछ गुस्सा होकर बोला।

'चुप रहो, बको मत।'

पर उसने जरा तिरछी नजर से देखते हुए कहा—

'मुझसे मत कहो, मैं सब जानता हूँ। अक्लमन्द के लिए इशारा बहुत होता है।'

कहते हुए उसने डरते-डरते जरवेस की ओर देखा। जरवेस कुछ सहमी और सिकुड़ गई। तम्बाकू की गन्ध और उस पर शराब की बदबू

दोनों मिलकर उसको असह्य हो रही थीं। उसका दम घुटने लगा, उसे खाँसी आ गई। धीरे से कूपे से बोली—

'शराब पीना भी कितना खराब है। मैंने लड़कपन में अपनी माँ के साथ प्लासंस में ही थोड़ी सी एनीसेट (शराब) पी थी। तभी मेरी तबियत इतनी बिगड़ गई थी कि आज तक मेरी कभी भी हिम्मत नहीं पड़ी कि एक भी बूँद छू सकूँ। मुझे उसकी गन्ध तक से नफरत हो गई है।'

'मेरी भी समझ में नहीं आता कि लोग कैसे ब्रांडी और पानी गिलास पर गिलास पीते चले जाते हैं। मैं जब देखता हूँ कि कोई ऐसा पियक्कड़ जमा है तो दरवाजे के बाहर ही रहता हूँ। मेरा बाप भी मेरी ही तरह लुहारी का काम करता था। एक दिन काम करते-करते कोकनाड नम्बर२५ की छत से गिर पड़ा था, बस इसी से मुझे एक डर-सा लग गया है। मैं जब कभी उस सड़क की ओर से निकलता हूँ तो ऐसा सोचता हूँ कि चाहे नाली का पानी पी लूँ पर भूलकर भी शराब का एक बूँद न लूँगा..........।

और फिर तुम तो जानती हो कि मेरे काम में आदमी को बहुत होशियार रहने की जरूरत है। दिमाग में जरा भी इधर-उधर हुआ, पैर काँपें कि बस..........।

जरवेस ने डलिया-चलने हाथ में ले ली थी, पर कुर्सी से उठी न थी। उसकी सूनी आँखों में एक ऐसी चमक थी जिससे लगता था कि आज की इन बातों ने उसके दिमाग में कुछ नई बातें पैदा कर दीं हैं और ये बातें उसके भविष्य के निर्माण में बड़ी महत्वपूर्ण साबित होंगी।

वह वैसी ही कुछ सकुचाती हुई धीरे से बोली—

'ईश्वर जानता है कि मैं महत्त्वाकांक्षी नहीं हूँ, मैं इस जीवन में अधिक नहीं पाना चाहती। मेरी अब इतनी ही इच्छा है कि शान्तिमय जीवन बिताऊँ। मेरे पास खाने को काफी अन्न हो, रहने को अच्छी जगह हो, एक-दो मेज कुर्सियाँ हों, बिस्तरें हों, जिनमें सुख से लेटा जा सके। बस और

चाहूँगी कि मेरे बच्चे पढ़-लिखकर अच्छे और मेहनती बनें, दो रोटी खाने-कमाने लायक हो जायँ। हाँ, अब मेरी हड्डियों में इतना बल नहीं है कि किसी की मार-पीट सह सकूँ और वह शायद अब मुझे बहुत ही दुःखदायी हो.........।' कहते-कहते वह कुछ रुकी मानो कुछ कहना चाहती है पर कह नहीं पा रही है, 'और.........अंतिम इच्छा यही है कि मैं अपने घर में अपने बिस्तरे पर सुखपूर्वक प्राण त्याग सकूँ!'

यह कहकर झट उसने कुर्सी को पीछे ढकेला और उठ खड़ी हुई। कूपे उससे बड़ी व्यग्रता से उलझता रहा फिर उसने घड़ी पर दृष्टि डाली। वे दोनों तुरंत ही अलग तो न हो गये पर उस बड़ी मशीन को बड़े विस्मय से देखते रहे। कूपे उसके साथ ही था। वह मशीन कैसे काम करती है, कौन-सा पुर्जा क्या है, कैसे काम करता है। इससे किस प्रकार शराब गिरती है आदि समझता रहा। टेढ़े-मेढ़े तारों से लिपटी नलों वाली वह मशीन, बड़ी ही सूनी लग रही थी। उसमें न साँस का संचार होता था न किसी ध्वनि का प्रस्फुटन, ऐसा लगता था मानो वह कोई ऐसा विराट कार्य है जो रात को शुरू होकर दिन में पूर्ण होता है। ऊपर जँगले पर दो साथियों के साथ मेस-बाटूस लटका खड़ा था। नीचे काउंटर पर भीड़ बहुत थी। खड़े-खड़े वह भी उसी मशीन को देख रहा था। एकाएक शराबियों की-सी विद्रूपपूर्ण हँसी के बीच वह बोला—

'हे बाबा, यह मशीन बड़ी बेढब है। लेकिन अच्छी भी कितनी है। इसी से तो वह पदार्थ निकलता है जिससे उनके गले हफ्तों सींचे जाते हैं। मेरा मन होता है कि इसकी एक नली को ही मुँह में लगा लूँ और शराब की धारा भरती जाय यहाँ तक कि मेरी एँड़ी से लेकर सिर तक सब कहीं शराब ही हो जाय। यह मशीन काम तो बहुत धीरे-धीरे करती है, उसमें न किसी तरह की चमक होती है न ताप आदि ही निकलता है। द्रव का स्राव भी धीरे-धीरे होता है; पर धारा.........अटूट होती है। धीरे-धीरे द्रव सारे कमरे में भर जायगा, बोलवार्ड तथा सड़कों पर फैल जायगा,

और धीरे-धीरे सारे पेरिस को डुबा लेगा।'

जरवेस कुछ सहम कर पीछे हट आई। वह हँसने की कोशिश करते हुए काँपते होठों के बीच बुदबुदाई—

'यह मशीन.........तो मुझे डराती है, लगता है इसकी धारा में मैं घुल जाऊँगी ; पर तुरन्त ही उसकी विचारधारा बदल गई और उसने मनुष्य की प्रसन्नता के विषय में कुछ क्षणों पहले जो शब्द कहे थे फिर कहे—

'क्या तुम यह नहीं मानते कि मनुष्य की सबसे बड़ी प्रसन्नता इसी में है कि काम करे, खाने-पीने को खूब मिले, अपना निजी घर हो, बच्चों को पाल-पोस दे और अपनी ही छत के साये में सुख से प्राण त्याग करे।'

कूपे बीच में बोल उठा—

'और मार न खाये, क्यों ? मैं वादा करता हूँ, जरवेस ! मैं तुम पर न तो कभी हाथ उठाऊँगा और न कभी शराब ही छुऊँगा, सिर्फ मैं जो कुछ कहता हूँ उसे मान लो, 'हाँ' कहो न, 'हाँ' कह दो ?'

कहते-कहते उसकी आवाज धीमी पड़ गई, उसने ये शब्द बिल्कुल उसके कान के पास मुँह ले जाकर कहे थे और वह डलिया लेकर भीड़ से निकलने का रास्ता देख रही थी। पर उसने न तो 'हाँ' कहा और न अस्वीकृति में सिर ही हिलाया। सिर्फ एक मीठी मुसकान के बीच स्नेहपूर्ण निगाह से देखा पर ऐसा लगा जैसे वह उसके शराब न पीने के निश्चय को जानकर पिघल गई है और शायद यदि उसने मनुष्यों से दूर रहने की कसम न खा ली होती तो शायद स्वीकृति भी दे देती। वे दरवाजे तक पहुँच गये थे और होटल से बाहर हो गए। भीड़ आती-जाती रही, शराब की गन्ध गूँजती रही, गिलास खड़खड़ाते रहे।

जरवेस बोली—

'यहाँ खुल कर साँस भी ले सकते हैं, अच्छा मि० कूपे, मैं तो चली। सबके लिए धन्यवाद, मुझे जल्दी पहुँचना है।'

वह चल दी पर कूपे ने उसका हाथ ले लिया और जोर से दबाते हुए कहने लगा—

'थोड़ी दूरी क्या साथ भी नहीं चल सकतीं ? अधिक नहीं कुछ ही दूर साथ चलो, मैं अपनी बहिन के घर के पास ठहर जाऊँगा। दूकान भी तो जाना है।' उसने स्वीकार कर लिया और साथ-साथ चलने लगी। कूपे ने अपने परिवार के विषय में कई बातें बताईं। उसकी माँ दर्जिन थी, वही मालिकिन थी, उसकी आँखें खराब हैं, इसलिए दो-तीन बार उसे काम भी छोड़ना पड़ा था, उसकी उम्र ६२ साल की है, वही, सबसे छोटा लड़का है। उसकी एक बहन मैडम लेरट ३६ वर्ष की है, विधवा है और म्योन्स रोड पर बेटीनाल के यहाँ रहती है। माला बनाने का काम करती है। दूसरी बहिन ३० वर्ष की है लोरिले, एक जंजीर बनाने वाले को ब्याही है। वह इस समय लोरिले के यहाँ ही जा रहा है। वे बाईं ओर ऊपर के कमरों में रहते हैं, वह रोज खाना भी वहीं खाता है। इसमें उनकी भी बचत है। इस समय मैं उन्हें बताने जा रहा हूँ कि आज मैं वहाँ खाना न खाऊँगा, मेरे एक मित्र के यहाँ दावत है। वे इस समय गाउट रोड की ओर मुड़ गए थे। वह एकाएक रुका और ऊपर की ओर ताकने लगा।

'यही घर है, काफी बड़ा है, मैं इससे कुछ घर हटकर एक घर में यहीं पैदा हुआ था।'

जरवेस ने घर की ओर देखा। सचमुच बड़ा भारी था, पञ्चमंजिला। उसकी हर मंजिला में कई कमरे और खिड़कियाँ थीं। पर्दे काले पड़ गये थे, छतों की स्लेटें टूट रही थीं, दरवाजे भी टूटे-फूटे थे। घर पुराना लगता था। दरवाजा काफी ऊँचा था, अन्दर कुछ दूरी पर एक बड़ा-सा आँगन दिखता था। इधर होकर रास्ता भी था। कूपे बोला—

'आओ न, तुम्हें खा तो लेंगे नहीं ?

पर जरवेस ने कहा कि वह बाहर ही रहेगी। वह चला गया और वह टहलते हुए मालिक के कमरे के पास तक चली गई। मालिक बाहर ही था, पूँछ बैठा—

'आप किसको चाहती हैं?'

'किसी को नहीं; एक मित्र की प्रतीक्षा कर रही हूँ!' वह सड़क की ओर लौट पड़ी। कूपे देर कर रहा था। वह फिर आँगन में आ गई। शायद वहाँ उसे कुछ अच्छा लगा था। इस समय लगभग सभी खिड़कियाँ खुली थीं। भीतर गन्दे-नंगे खेलते हुए बच्चे और काम-काज में लगी हुई औरतें दिखाई पड़ती थीं। इस समय काफी शान्ति थी। आदमी लोग अपने-अपने कामों पर चले गये थे। सिर्फ कुछ ही थे जो अपना-अपना काम कर रहे थे। उन्हीं के कारण कुछ शोर होता था। लेकिन वातावरण अच्छा था और जरवेस को बहुत अच्छा लगा। वह सोच रही थी, 'आँगन में सीलन है पर ऊपर के कमरे जरूर ठीक होंगे, अगर उसे वहाँ रहने को मिले तो कोई ऐसी जगह ले जिसमें धूप आती हो।' वह यह सोचते-सोचते कुछ और अन्दर चली गई। गरीबों के घरों से एक अजीब दुर्गन्ध, सीड़न आदि की बू आ रही थी; पर रंगसाज के रंगों की खुशबू उसे दबाये थी। वह सोच रही थी, 'यह जगह बाँकोवर होटल से काफी अच्छी है।' उसने खिड़की भी पसंद कर ली। उसके पास एक बड़ा-सा टीन का सन्दूक रखा था और सेम की लतर उसके ऊपर फैल रही थी।

'मैंने तुमसे बड़ी प्रतीक्षा कराई क्षमा करना। जब मैं यहाँ न खाने की बात करता हूँ तो हजार सवाल होते हैं और आज तो विशेष रूप से बहिन चाहती थी कि कहीं बाहर न खाना खाऊँ। आज कुछ विशेष प्रबन्ध कर रही हैं। तुम यह घर देखती हो। इसमें सैकड़ों तो किरायेदार हैं, हमेशा चहल-पहल रहती है। अगर मेरे पास सामान होता तो मैंने कबका एक कमरा ले लिया होता। क्यों तुम्हें नहीं पसंद है क्या?'

'क्यों नहीं, बड़ी अच्छी जगह है।' फिर कुछ रुककर, 'प्लासंस में

इतने आदमी पूरी सड़क पर न थे। जरा उस खिड़की की ओर देखो, पाँचवीं मंजिल पर जहाँ सेम की लतर है कितनी अच्छी लगती है, क्यों ?'

और कूपे ने योंही कह दिया कि कोई बात नहीं, वह वहीं कमरा ले लेगा। उसी में दोनों रहा करेंगे। इस पर जरवेस कुछ मुसकुरा दी और बोली—

'अच्छा बेकार बातें मत करो। क्या समझते हो हम लोग कभी साथ रहेंगे ?'

मैडम फाकनियर की लाँड्री के पास पहुँच कर जब कूपे ने जरवेस का हाथ पकड़ लिया और बड़ी देर तक लिये रहा जरवेस ने कुछ आपत्ति न की। दोनों अलग हो गए।

एक महीना उन दोनों के बीच और इसी तरह बीता। दोनों मिलते, मीठी-मीठी बातें करते। कूपे ने समझा कि वह बहुत ही निर्भीक स्त्री है और कई मित्रों से बात उठने पर कहा भी—गजब की औरत है! बच्चों के लिए दिन-रात एक किये रहती है, लोगों के कपड़े सी-सी कर पैसे कमाती है, सचमुच वह खपी जा रही है इस मेहनत में। मैं तो समझता हूँ कि मैं जितनी स्त्रियों को जानता हूँ कोई भी इसके टक्कर की नहीं है।'

कभी-कभी जरवेस के आगे भी ऐसी ही बातें आतीं तो वह हँस देती। एक-दो बार वह स्वयं अपनी गलतियों को उसके सामने बताने लगती—पहले-पहल जब बच्चा होने को था तो मैं सिर्फ चौदह वर्ष की थी और तभी मैंने अपनी माँ के साथ एनिसेट (शराब) की कई बोतलें खाली कर दीं थीं। कुछ शर्मा कर फिर कहती—'लेकिन मैंने अपनी भूलों से सीखा काफी है। लेकिन जो तुम यह समझते हो कि मैं बड़ी मेहनत करती हूँ, बड़ी मजबूत हूँ, गलत है। मैं वास्तव में बड़ी कमजोर हूँ, मेरे ऊपर दूसरों का असर बड़ी जल्दी पड़ता है। इसके कारण मुझे काफी तकलीफ भी सहनी पड़ी है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं अच्छे लोगों के

बीच रहूँ, मेरा जीवन सुन्दर हो। बुरी संगत एक स्त्री की जिन्दगी को चौपट कर देती है। पर जब मैं अपने भविष्य की बात सोचती हूँ तो काँप उठती हूँ, मुझे तो लगता है कि मैं बिल्कुल ऊपर फेंके हुए एक सू* की तरह हूँ जिसका पता नहीं कि चित्त गिरे कि पट्ट और कहाँ गिरे, कीचड़ में कि किसी अच्छी जगह पर। लेकिन मैंने अभी तक जो कुछ बुरा देखा है, जितनी भी विकृति मेरे सामने आई है उस सबसे मुझे बड़ी अच्छी नसीहतें मिली हैं जो मुझे अक्सर सँभाल देती हैं.........।'

कूपे उसकी इस उदासीनता पर हँसता और उसके कंधों को थपथपा कर उत्साहित करता। जरवेस भी उसकी हथेली को हाथ में लेकर थप-थपाती पर कुछ न कहती। कूपे ही कहता, 'इतनी कमजोर क्यों बनती हो, मुझे इससे बड़ी ग्लानि होती है। देखो मैं खुद कितना खुश रहता हूँ, खाता-पीता हूँ, इतवार को अच्छे कपड़े पहन कर कुछ सज-बज कर लोगों से मिलता-जुलता हूँ। मैं सचमुच उतना खुशदिल और मस्त हूँ जितना पेरिस का कोई भी मजदूर हो सकता है।'

इसमें सब के साथ वे एक दूसरे की बड़ी मदद करते थे। वे रहते भी उसी बाँकोवर में थे। कूपे उसके लिए दूध ले आता, छोटे-मोटे काम कर देता गाहकों के कपड़े भी कभी-कभी दे आता, अक्सर बच्चों को लेकर टहला लाता। और जरवेस भी इन सब कामों के बदले कभी-कभी उसके छोटे से कमरे में जाती, उसको ठीक-ठाक कर देती, कपड़े सुधार देती, फटे होते तो सी देती, बटन लगा देती। इस तरह दोनों बड़े अच्छे मित्र बन गए। जरवेस के लिए वह एक मनोरंजन का साधन भी था। वह उससे गाने सुनती, हँसी-मजाक में आनन्द लेती, उस सबमें उसे काफी नयापन दिखता, परन्तु कूपे ऊब चला था, उसकी मुसकानें फीकी पड़ चली थीं। और अब जब कभी वे मिलते तो बार-बार वह यही प्रश्न पूछता, 'अब

---

*फ्रेंच सिक्का

कब ?' धीरे-धीरे उसकी व्यग्रता बढ़ती जाती थी और जून के अंत तक वह बहुत ही उदास हो गया। वह अब न जाने कैसी आँखों से जरवेस को ताकता। जरवेस अब काफी परेशान होने लगी थी, डर भी लगने लगा था। वह रात को जहाँ तक होता काफी सावधानी से दरवाजा तक बन्द रखती थी। लेकिन एक दिन शाम को वह जरवेस के घर आ पहुँचा। दरवाजा बन्द था ही, पहले तो उसने खोलने से ही इन्कार किया; लेकिन कूपे का स्वर कुछ ऐसा करुण और दीनतापूर्ण था कि उसने अंत में जंजीर खोल दी। जब वह अंदर घुसा तो जरवेस एकाएक चौंक उठी। पहले तो उसने समझा कि वह बीमार है उसका चेहरा बिल्कुल पीला पड़ गया था, आँखें बुझी-बुझी थीं। जरवेस के पूछने पर उसने कहा—

'नहीं तबियत तो ठीक है पर.....पर ऐसे अब नहीं चल सकता। मुझे रात-रात भर नींद नहीं आती! जरवेस जरा सुनो तो,.....' यह कहते-कहते उसकी आँखें डबडबा आईं, आवाज भर आई.....

'जरवेस, अब हमको विवाह कर लेना चाहिए तुरन्त ही, बस इतना ही करना है।'

सुनकर जरवेस विस्मित हो गई।

'ओह, मांशियर कूपे,.........मैंने ऐसा स्वप्न में भी नहीं सोचा था, मैंने तुमसे कई बार अपनी मजबूरी भी जाहिर कर दी है, मैं कहती हूँ जो कुछ मैंने कहा है बहुत सोच-विचार करके कहा है।'

पर इस पर वह जिद्द करता ही गया। वह निश्चय ही करके आया था। वह इस प्रश्न को इतनी जल्दी निबटा लेना चाहता था कि सुबह तक रुकना भी उसके लिए असह्य हो रहा था, वह आज उससे 'हाँ' कराकर ही जायगा और जब तक वह स्वीकृति न देगी वह न टलेगा। वास्तव में वह बहुत ही परेशान था। उसे नींद दूभर हो गई थी। उसका विरोध करते हुए जरवेस ने कहा—

नहीं, नहीं, मैं इस तरह इतनी जल्दी 'हाँ' नहीं कर सकती। यह बात इतनी मामूली नहीं है। मैं नहीं चाहती कि तुम फिर कभी मुझसे कह सको कि मैंने तुमको इस विपत्ति में फँसा दिया है। सोचो, तुम भूल कर रहे हो। मुझे विश्वास है कि यदि तुम मुझे एक हफ्ते तक न देखो तो जरूर भूल जाओगे। मेरा कुछ भी तुम्हें याद न रहेगा। आदमी कभी-कभी मोहवश विवाह कर लेते हैं, और चौबीस घंटे के भीतर बदल भी जाते हैं। जरा बैठो, हम लोग शांत होकर बातें करेंगे।'

और वे उसी अँधेरे कमरे में बातें करते रहे। एक मोमबत्ती बराबर टिमटिमाती रही। जरवेस बार-बार समझाती और कूपे बार-बार जिद् करता—इस प्रकार आधी रात बीत गई। वे धीरे-धीरे बोलते थे ताकि लड़के न जग जाँय। दोनों लड़के पास ही सो रहे थे। जरवेस ने उनकी ओर उँगली उठाते हुए कहा—

'देखते हो जो कुछ तुम्हें दहेज में मिलेगा? कभी किसी को ऐसा न हुआ होगा?'

'फिर इतना सारा बोझ मैं कैसे अकेले तुम पर लाद दूँ, मेरा मन ही नहीं गवाही देता। सभी तुम पर हँसेंगे। कहेंगे, सब पहले ही से तय था। मेरा प्रेमी पहले ही से आता-जाता था आदि तमाम तरह की बातें उठ खड़ी होंगी.....'

जरवेस जो कुछ समझ में आता कहती जा रही थी पर वह उत्तर में सिर्फ कभी मुँह बना देता या कंधे हिला देता।

'तुम्हें इन बातों की क्यों फिक्र है, कहते हैं कहने दो। मैं कभी किसी के बीच नहीं पड़ता तो कोई दूसरा क्यों हमारे बीच पड़ेगा? तुम्हारे दो लड़के हैं, ठीक है तो क्या हुआ जैसे तुम वैसे वे। मैं सच कहता हूँ तुम्हारी जैसी भली और हिम्मती स्त्री नहीं देखी? इसके अलावा इससे क्या होता है, अगर तुम बदसूरत होतीं, काहिल होतीं, एक दर्जन गंदे लड़के होते, तो भी मैं तुम्हीं से विवाह करता। मुझे तुम्हारी जरूरत है सिर्फ तुम्हारी.....हाँ,

मैं तुम्हीं को चाहता हूँ और किसी को नहीं, इस बारे में तुम कुछ नहीं कह सकतीं……।'

जरवेस धीरे-धीरे पिघल रही थी। उसकी दृढ़ता लुप्त होती जाती थी। एक आवेग उस पर छाता जा रहा था, हृदय कमजोर हो रहा था। उसने सिर्फ एक-दो बार नम्रतापूर्वक और विरोध किया। उस समय उसका मुख-मण्डल एक दीप्ति से चमक रहा था, हाथ घुटनों पर फैले हुए ढीले पड़ते जा रहे थे।

जून की रात थी। खिड़की से होकर एक हवा का झोंका भीतर घुस आया। मोमबत्ती की शिखा काँप उठी। सड़क पर किसी शराबी का बच्चा कराह रहा था। कहीं दूर से हवा पर बहती हुई वायलिन की धुन—शायद किसी के विवाह के अवसर पर किसी होटल में बजते हुए वायलिन की धुन आ रही थी, सब कुछ बहुत ही स्निग्ध था………।

कूपे ने देखा कि जरवेस के सारे तर्क खतम हो गये हैं, विरोध ढीला पड़ता जा रहा है। उसने दोनों हाथ पकड़ कर उसे अपनी ओर खींच लिया। जरवेस की मनःस्थिति इस समय कुछ ऐसी थी कि वह किसी का भी किसी वस्तु में विरोध न कर सकती थी। वह अपनी इसी मनःस्थिति से बहुत डरती थी। पर नवयुवक कूपे इसको समझ न सका। उसने केवल उन हाथों को अपने हाथों में लेकर जोर से दबाया और फिर चूम लिया।

'तो तुम हाँ कहती हो, क्यों ?'

जरवेस एक मीठी मुसकान के बीच बोली—

'क्यों तङ्ग करते हो ? लेकिन तुम चाहते हो तो सही। ईश्वर करे कभी ऐसा दिन न आये कि तुमको आज के लिए पछताना पड़े।'

जरवेस उस समय अपने में सिकुड़ी जा रही थी, कूपे जैसे खिल पड़ा और उसको अपने में खींचकर समेट लिया और जोर-जोर कई चुम्बन जड़ दिये। फिर एक निगाह बच्चों की ओर डाली।

'हम लोग कहीं बच्चों को न जगा दें, अच्छा अब चलूँ।'

और वह तुरंत कमरे के बाहर हो गया। जरवेस उसी तरह बिना कपड़े बदले अपने बिस्तर पर बैठी रही। उसके सारे शरीर में सिहरन हो रही थी। मन चंचल हो उठा था। एक अतृप्त आकांक्षा जाग उठी थी। बैठी-बैठी कूपे के विषय में सोचती रही, कैसा सीधा-साधा, ईमानदार है.........।' सड़क पर शराबी की चीखें तेज हो उठीं थी, दूर से आने वाले वायलिन का स्वर रुक चुका था।

दूसरे दिन शाम को कूपे ने आग्रह किया कि वह उसके साथ चले और उसकी बहिन से मिल आये; परन्तु वह किसी भय से सहम गई। वह लोरिले से मिलने में हिचकती थी। उसे पूरा आभास था कि कूपे इन लोगों से बहुत डरता है।

लोरिले उसकी बहिन तो थी, पर सबसे बड़ी न थी और वह उसके सहारे भी था। जहाँ तक उसकी माँ का सवाल था वह राजी हो जायगी क्योंकि उसने उसका कभी विरोध नहीं किया था। लोरिले की ही आमदनी उन सब में ज्यादा थी। इसलिए उसका प्रभाव जरूर काफी था। कूपे की भी हिम्मत बिना बहिन-बहनोई की आज्ञा के विवाह करने की न पड़ती थी।

'मैंने तुम्हारे बारे में उन्हें सब कुछ बता दिया है.........। जरवेस तुम कितनी अच्छी हो। चलो आज मेरे साथ। मेरी बहिन कुछ रूखी जरूर है और बहनोई भी; पर वे क्या करें—काफी परेशान रहते हैं। अगर मैं विवाह करता हूँ तो फिर उनके यहाँ थोड़े खाऊँगा, इससे उनकी बचत भी होगी? यह तो कुछ नहीं, खैर, तुम चलो तो वे घर से खदेड़ थोड़े देंगे। मैं जो कहता हूँ मान लो, क्योंकि बिना चले छुटकारा नहीं है।'

ये बातें सुनकर जरवेस काफी घबरा गई। उस दिन तो न जा सकी। पर शनिवार को चलने के लिए राजी हो गई। कूपे साढ़े आठ बजे ही आ पहुँचा। दोनों साथ-साथ चल दिये।

'वे तुम्हारा इन्तजार करते होंगे। वे अब चाहते हैं कि मैं विवाह कर लूँ। आज वे कुछ खुश भी हैं। चलो मैं तुमको सोने की जंजीर बनाना दिखाऊँगा। तुमने अभी देखा तो न होगा। बड़ा अच्छा लगता है। वे लोग एक जंजीर बना ही रहे होंगे, सोमवार तक बना कर दे देनी है·····।"

'तो क्या सोना इन्हीं कमरों में यहीं हैं·········?' जरवेस ने पूँछा।

'और नहीं तो क्या दीवारों के फर्श पर, सब कहीं यहीं तो है ही।" वे इस समय दरवाजे के पास थे और आँगन में घुस रहे थे। उसकी बहिन छठवीं मंजिल पर रहती थी। वे ऊपर चढ़ने लगे। कूपे ने कहा—

'देखो जँगले को अच्छी तरह पकड़ना, कहीं छूट न जाय तो·····' चौथी मंजिल पर लोग आपस में लड़ रहे थे पर बगल वाले अपने-अपने काम में लगे थे जैसे कुछ बात ही न हो। जब वह पाँचवी मंजिल पर पहुँची तो हाँफने लगी थी। उसके लिए इतने जीने लगातार चढ़ना नई बात थी। सीढ़ियों के चक्करों से उसको चक्कर-सा आने लगा था। कूपे ने उसे कुछ कह कर उत्साहित किया। अंत में वे ऊपर पहुँच गए। उसने वहाँ एक पतली तेज आवाज सुनी। वह उस घर के सारे खड़खड़-भड़भड़ के ऊपर थी। एक बूढ़ी स्त्री की आवाज थी, वह गुड़ियाँ बनाने का काम करती थी और काम के साथ गाती भी जाती थी। हाँफते हुए जरवेस ने जंगले पर लटक कर नीचे देखा, बिल्कुल नीचे जलता हुआ गैस बर्नर एक तारे की तरह दिख रहा था। ऐसा लगा कि घर भर का सारा शोर दीवारों और तमाम कमरों से उमड़ती हुई सीलन भरी गंध, सब एक साथ जरवेस पर छा गई। उसे जम्हाई सी आई और उसका मुँह उतर गया।

'हम अभी पहुँचे थोड़े हैं, अभी और चलना है।'

कूपे बाईं ओर मुड़ गया। फिर दाईं ओर के बरामदे पर चलने लगा। बरामदे में एक धुँधली सी रोशनी थी। सारे के सारे दरवाजे खुले

पड़े थे, जैसे कोई जेल हो, वहाँ से वे आगे एक दूसरे बरामदे में पहुँचे। वहाँ बिल्कुल अंधेरा था।

'अब हम आ गए, अच्छी खासी यात्रा है। अच्छा, यहीं कहीं तीन सीढ़ियाँ हैं, दीवाल पकड़े-पकड़े चली आओ!'

इतने में कूपे ने एकाएक दरवाजा खोल दिया। बरामदे में रोशनी की एक धारा-सी फूट पड़ी और वे अंदर चले गये। वह कमरा उसी बरामदे के एक ओर बना था। एक गंदा, भद्दा, ऊनी पर्दा पड़ा हुआ था, वह उसे दो भागों में बाँटता था।

एक भाग में पलंग, स्टोव, दो कुर्सियाँ, एक मेज और वार्डरोब था जो काफी ऊँचा था, हमको रखवाने के लिए छत का एक हिस्सा तक खोदना पड़ा था। कमरे में कुछ बर्तन और पड़े थे, लगता था अभी कुछ बना है। दूसरे भाग में दूकान थी, एक कोने में भट्ठी थी दीवाल से बिल्कुल लगी हुई, उसमें लोहे के टुकड़े रक्खे गर्म हो रहे थे। बाईं ओर एक मेज थी, उस पर पटरी, खुर्दबीन, छेनी, तार के टुकड़े सबके सब मटियाए तेल में सने-से पड़े थे।

ऊनी पर्दे के पास पहुँच कर कूपे बोल उठा, 'हम आ गये।'

जरवेस चुप रही। वह अब भी यही सोच रही थी कि वह ऐसी जगह जा रही है जहाँ सोना ही सोना भरा है। इसलिए यह सब कुछ देख कर भी इसी असमंजस में थी कि रुके कि लौटे। भट्ठी से आने वाली आँच और दिए की तेज रोशनी दोनों से वह और अधिक परेशान हो उठी। उसने देखा कि एक छोटे कद की साँवली मजबूत और स्फूर्तिवाली स्त्री अपने दोनों हाथों से चिमटे से पकड़े हुए एक काला तार खींच रही थी। वह कूपे की बहिन थी। लोरिले खिड़की के पास रक्खी हुई मेज के सामने बैठा था। वह भी अपनी पत्नी की भाँति छोटे कद का बड़ा परिश्रमी दिखता था। उसके हाथ में एक छोटी सी चिमटी थी और कोई इतना महीन काम कर रहा था कि दिखाई मुश्किल से पड़ता था। सबसे

पहले लोरिले की ही निगाह उन पर पड़ी। उसने अपना सिर ऊपर उठाया। उसका मुँह कुछ रूखा और लंबा था।

'अरे, तुम हो, अच्छा, आओ लेकिन मुझे बड़ा काम है, जल्दी भी है, तुम तो जानते ही हो मुझे एक आर्डर पूरा करना है। अच्छा हो कि उसी कमरे में बैठो, यहाँ ठीक न होगा।'

यह कह कर वह अपने काम में फिर लग गया। पास ही एक छोटे से वर्तन में पानी भरा था, दिए की चमक के साथ उसके मुँह की परछाईं उसी में जगमगा रही थी। इतने में उसकी बहिन बोल उठी—

'कुर्सियाँ ले लो, बैठो, यही हैं, बहुत अच्छा!'

और उसने अपना तार समेट कर भट्टी के पास जा धरा। पंखा लेकर कोयलों पर हवा करने लगी। कूपे ने दो कुर्सियाँ घसीट लीं, एक में पर्दे के पास जरवेस को बिठा दिया। कमरे में इतनी भी जगह न थी कि वह उसकी बगल में बैठ सकता। इसलिए उसने अपनी कुर्सी उसके पीछे कर ली और उसकी कुर्सी की पीठ पर कुछ बातें बताने लगा। भट्टी के चलने और खटपट के कारण उसे कुछ सुनाई भी न पड़ता था, दूसरे वह इस तरह का स्वागत देखकर कुछ आश्चर्य में भी पड़ी थी, वे लोग कभी-कभी उसे दूर से तिरछी आँखों से देख लेते थे, इससे वह और दब-सी जाती। जरवेस बहिन को देख कर सोच रही थी कि तीस से तो अधिक की दिखती है। वह कुछ गंदी भी थी। बड़े-बड़े बाल कंधों पर बिखर रहे थे। उसका पति जो कहा जाता था सिर्फ एक ही वर्ष बड़ा है, बिल्कुल बूढ़ा ही दिखता था। उसके होंठ पतले थे, दबा-दबा सा जाने कैसा था। एक कमीज पहने हुए था, पाँवों में स्लिपर थे। वह छोटे-छोटे कमरों को देखकर तो और भी ताज्जुब में थी, वहाँ की गर्मी, काली दीवारें, गंदगी सभी उसे उबाये दे रही थीं। लोरिले के माथे पर पसीने की छोटी-छोटी बूँदें छहर आई थीं। बहिन भी अपना बोरा फेंक कर बाँहें समेटे हुए थकी सी-खड़ी थी।

'और सोना कहाँ है?' जरवेस ने बिल्कुल धीरे से कहा।

उसकी आँखें इधर-उधर कोनों के ढेर में भटक रही थीं कि शायद कहीं दिख जाय। उसने उसकी चमक की कल्पना पहले ही से कर रक्खी थी। लेकिन कूपे इस पर हँसा, 'सोना''''' यहीं तो है'''' यह रहा तुम्हारे पाँव के ही पास।'

और उसने बहिन के हाथ में जो पतला महीन तार था उसी की ओर संकेत किया। फिर थोड़ा झुक कर उसने अपनी उँगली में थूक लगा कर जमीन से कुछ छोटे-छोटे नुकीले टुकड़े उठा लिए और उसे दिखाया। जरवेस कह उठी—

'नहीं यह सोना नहीं हो सकता, यह काली-काली धातु'''''यह लोहा है।' कूपे हँस पड़ा। उसने और कई बातें उस तार और सोने के बारे में बताईं। वे जब तक बातें करते रहे लोरिले उसकी ओर अक्सर चुपचाप देखता जाता था, एकाएक खाँसते हुए बोला—

'मैं जंजीरें बनाता हूँ!'

कूपे को जैसे सहारा मिल गया।

'हाँ जंजीरें चार तरह की होती हैं एक'''''

लोरिले बीच में बोल उठा 'हाँ' और अपनी चिमटी लेकर फिर उसी में उलझ गया।

जरवेस को यह सब कुछ बड़ा भद्दा दिख रहा था बल्कि उबा देने वाला था। वह लोरिले को खुश करने के लिए एक फीकी हँसी हँसी। वह सोच कर आई थी कि वहाँ कुछ बातें उसके और विवाह के बारे में होंगीं, पर इस चुप्पी को देख कर उदास हो गई थी, काफी परेशानी भी होने लगी थी। थोड़ी देर में उनमें बातें शुरू हुईं, तो पास-पड़ोस के लोगों पर आ टिकीं। समय काफी हो रहा था। जरवेस के लिए अब अधिक ठहरना मुश्किल था। गर्मी के मारे वह परेशान थी, दरवाजा खोलना भी मुहाल था, हवा के झोंके से काम में गड़बड़ी होती। अंत में उसने कूपे की बाँह जोर से खींची। वह समझ गया कि जरवेस चलना चाहती है वह भी परेशान

आ गया था, ऐसी भी चुप्पी क्या ? उसने धीरे से कहा, 'अच्छा, हम लोग चलें, आपके काम में बाधा पड़ती है।'

और वह कुछ रुका कि शायद कुछ कहें पर फिर अपने ही आप कहने लगा—

'मैं समझता हूँ कि इस विवाह में आप गवाह तो होंगे ही।'

अब लोरिले ने अपनी आँख उठाई, मानों कोई अनहोनी बात है। पर बहिन उसी तरह खींचे खड़ी रही। उसने ध्यान भी न दिया।

'तो आप लोग सचमुच विवाह करना चाहते हैं·····' फिर जैसे अपने आपसे 'और इस बेवकूफ़ कूपे के साथ सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि वह स्वयं नहीं जानता कि वह क्या चाहता है। हम लोगों की तो बात ही दूर है।' बीच ही में बहिन बोल उठी।

'मुझे तो कुछ कहना ही नहीं है, यह विवाह ही नासमझी है। मैं समझती हूँ, कोई खुश न रहेगा।' उसने पिछले शब्द कुछ धीरे-धीरे कहे और फिर 'मेरा भाई बिल्कुल स्वतन्त्र है। वह जो चाहे कर सकता है।' (फिर जरवेस की ओर ध्यान से देखकर) 'हो सकता है कूपे के परिवार के और लोगों को यह विवाह पसन्द आवे·····लेकिन तब भी लोग न जाने क्या-क्या स्कीमें बनाते हैं और काम होता है कुछ और·····पर इससे मुझे क्या, मेरा इससे कोई मतलब नहीं है। वह अगर नीच से भी नीच स्त्री लाता तो मैं कहती 'हाँ विवाह कर लो हम लोग साथ ही रहेंगे!' उसे हमारे साथ सारे सुख थे, काफी खाया-पिया शरीर है, देखने में ऐसा नहीं लगता कि भूखों मरा है। मैंने सदा ठीक समय से खाना दिया है, अच्छी तरह रक्खा है। पर लोरिले तुम्हीं बताओ कि यह स्त्री क्या बिल्कुल उसी थेरेसा की तरह नहीं है, वही थेरेसा जो सामने रहती थी और क्षय से मरी है?'

'बिल्कुल, वैसी ही तो है!' लोरिले ने जैसे कुछ सोचते हुए उत्तर दिया।

'और तुम्हारे दो बच्चे भी तो हैं क्यों ?' उसने जरवेस की ओर देखते हुए कहा, 'मैंने कई बार अपने भाई से पूछा भी है कि ऐसी कौन सी बात है जो वह ऐसी स्त्री से विवाह करने को तैयार है ? मैं इस समय उसकी ओर से सोच रही हूँ और यह स्वाभाविक भी है इसमें बुरा मानने की कुछ बात नहीं है तुम्हारी तन्दुरुस्ती भी ठीक नहीं है क्यों न लोरिले, मैडम कुछ दुबली तो हैं ही ?' शिष्टतावश उस दम्पति ने उसके लँगड़ेपन की बात तो नहीं की पर जरवेस को लगा कि जैसे उनके दिमाग में यह बात है जरूर। वह उन दोनों के सामने चुपचाप तनी हुई बैठी रही, बीच-बीच अपना शाल और कस लेती या 'हाँ' 'हूँ' में उनके सवालों का जवाब दे देती। कूपे ने उसके मानसिक कष्ट को ताड़ लिया और बीच में ही बोल उठा—

'ये सब बातें बेकार हैं। मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूँ कि २९तारीख आपके लिए ठीक होगी या नहीं ?'

इस पर भी बहिन ने ही उत्तर दिया—

'हमारे लिए सब दिन बराबर हैं। जहाँ तक गवाही देने की बात है उसको तो लोरिले ही जानें, जैसा जी आवे करें।

जरवेस अपनी उसी परेशानी में अपने जूते की नोक से कोई चीज जमीन पर रगड़ रही थी, उसे सहसा लगा कि कुछ हो गया, इसलिए वह देखने के लिए झुकी। लोरिले तुरन्त ही दिया लेकर आ पहुँचा और संदेहपूर्ण दृष्टि से उसकी उँगलियों की ओर देखने लगा।

'देखो, जरा ध्यान रखना, ये सोने के छोटे-छोटे टुकड़े अकसर जूते में चिपक जाते हैं और साथ चले जाते हैं।

बात तो महत्वपूर्ण जरूर थी क्योंकि उसके मालिक जो कुछ उसे देते थे तोल कर देते थे। इस मामले में उसे बहुत सावधान रहना पड़ता था। उसने एक ब्रुश दिखाया जिससे वह कणों को झाड़ कर इकट्ठा करता था। एक चमड़े का टुकड़ा भी दिखाया जिसको वह रेतते समय घुटनों पर लगा

देता था, जिससे रेतन बाहर न जाती थी। उसकी बहिन की निगाह अब भी जरवेस के जूतों पर लगी हुई थी—

'जरा कृपा करके अपने जूते का तल्ला देख लीजिए। इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है!'

जरवेस गुस्से से लाल पड़ गई, झट उठ खड़ी हुई और अपने पाँव उठा कर तल्ले दिखा दिये। कूपे ने बढ़ कर दरवाजा खोला। बिदा माँग कर चल दिये। पीछे उन्होंने जब कुछ कहा तो ये दोनों बरामदे में आ गये थे।

३. विवाह

जरवेस तो चाहती थी कि विवाह सीधे-सीधे ढंग से हो जाय पर कूपे इसका विरोध करता था। बिना कुछ हुए अच्छा नहीं लगता—'मैं सिर्फ इतना ही चाहूँगा कि किसी रेस्ट्राँ में दावत और थोड़ा मनबहलाव हो जाय, बस! हम लोगों में से कोई ज्यादा शराब भी नहीं पियेगा।' जरवेस भी राजी हो गई। सब कुछ आरजेन्ट होटल में होना तय हुआ, पर हर आदमी पर पाँच फ्रैंक खर्च होगा। अतिथियों की सूची बनाई गई, उसमें बीबी ला ग्रिलेड मेस बाट्स भी थे। मेस वाट्स जरा फक्कड़ी था और कम ठीक पड़ता था पर बुलाया अक्सर जाता था, इस पर जरवेस ने अपनी मालकिन मैडम फाकनियर को भी निमंत्रित कर लिया। कुल पन्द्रह व्यक्ति हो गये, काफी थे।

आरजेन्ट में सबको एक बजे का समय दिया गया था। वहाँ से वे सेन्ट डेनिस प्लेन भी जाने को थे, रेल से लौटना था। शनिवार के दिन जब कूपे कपड़े पहन कर तैयार हो गया तो उसने अपनी जेब देखी, पैसे थोड़े ही थे। गवाहों को कम से कम एक गिलास शराब और एक रोटी तो देनी ही है फिर भोजन के समय न जाने क्या-क्या खर्च निकल आये।

कम से कम २० सू से कम से काम तो न चलेगा। इसलिए वह एटीन और क्लाड को मैडम बाश के पास छोड़ने गया। वह उनको लेकर दावत पर आ जायँगी और स्वयं वहाँ से अपने बहनोई के पास गया। उससे दस फ्रैंक उधार माँगे। कहने में उसे डर तो लग ही रहा था, शब्द भी साफ न निकल पाते थे। बहनोई ने किसी तरह बेमन से पैसे दे दिए। पहले तो वह कुछ भुनभुनाया और नाराज भी हुआ। उसी समय उसने बहिन को कहते सुना 'शुरुआत अच्छी है।'

दोनों का सिविल विवाह होना था, समय १०॥ बजे था। दिन साफ था, धूप भी काफी थी। चलना भी दूर था, सब लोग अगर साथ चलेंगे तो लोग घूर-घूर कर देखेंगे, न जाने क्या-क्या कहेंगे, इसलिए चारों गवाह, माँ, दूल्हा-दुलहिन अलग-अलग हो गये। जरवेस सबसे आगे लोरिले के बगल में थी, मैदनियर कूपे की माँ को सहारा दिये था। दूसरी ओर कूपे बाश और ग्रिलेड चल रहे थे। वे लोग मेयर के दफ्तर लगभग आधा घंटे पहले पहुँच गए। उनकी बारी भी ११ बजे के पहले नहीं आई। वे सब लोग एक कोने में चुपचाप बैठे रहे। अपनी-अपनी कुर्सियाँ पीछे कर ली थीं, ताकि किसी को आने-जाने में परेशानी न हो। जब कभी मजिस्ट्रेट निकलता, वे उठ खड़े होते और उसके कहने पर फिर बैठ जाते। इस तरह बैठे-बैठे काफी समय हो गया। उनके सामने ही तीन विवाह हो चुके थे। सभी दुलहिनें अच्छे, सफेद और नौकरानियाँ लाल, नीले कपड़े पहने हुए थीं। जब इनकी बारी आई ग्रिलेड कहीं पाइप पीने चला गया था और बाश उसको ढूँढ़ने के लिए गई थी। सभी फार्म इतनी जल्दी भर गए कि तुरंत ही गवाहों की आवश्यकता पड़ गई। अब सब एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। ऐसा लग रहा था मानों इन लोगों ने जान-बूझकर धोखा दिया है। इन कानाफूसियों को जरवेस सुनती रही। उसकी आँखें छलछला आईं, माँ तो रोने तक लगी पर आवाज बाहर न निकली।

की बूँदों को पोंछ-पाँछ कर कपड़े ठीक किये। इसी बीच कुछ क्षणों के लिए पानी रुका पर आँधी और जोर की आई। इसके बाद पानी भी टूट पड़ा। मूसलाधार वर्षा होने लगी। आदमी लोग दरवाजे पर अपनी-अपनी जेबों में हाथ डाले पानी का बरसना देख रहे थे और औरतें सिकुड़ी हुई, हाथों से मुँह ढापे बैठी थीं। जोर-जोर बिजली चमकती और बादल गरजते थे। औरतें डरी हुई बातें भी न कर पाती थीं। पानी ऐसा लगता था रुकेगा ही नहीं। मैडम लोरिले ने परेशान होकर कहा—

'तो हम लोग क्या करें?'

'देखिए शायद बादल जल्दी ही निकल जायँ तो हम लोग देहात की ओर चलेंगे!' रेमांजन के इस कथन पर सभी बहुत हँसे।

समय तो बिताना ही था; कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। डिनर के लिए काफी समय था। ग्रिलेड ने ताश खेलने का प्रस्ताव किया, मै० लिरेट ने कहानी सुनाने की बात रक्खी। प्रत्येक प्रस्ताव पर तमाम बहस होतीं। तभी कूपे ने जरवेस के पास पहुँच कर बड़ी मीठी आवाज में कहा—

'तुम कुछ न कहोगी?'

'नहीं, पर तुम जो भी कहो मैं करने को तैयार हूँ!'

जरवेस का मुँह इस समय सुनहले प्रभात की तरह खिल उठा था। एक-एक शब्द में प्यार और मधुरता छलकती थी। आँधी के सभी क्षण वह अपनी सूनी दृष्टि बादल-बिजली की ही ओर लगाये हुए थी मानों उनकी चमक और गर्जन में उसे अपना भविष्य दिख रहा हो। तभी सब की ओर मुँह करके कूपे ने कहा—

'मैं तो कहता हूँ कि हम लोग मुसी डी लोवर चलें। वहाँ पुरानी मूर्तियाँ हैं, तसवीरें हैं। बहुत सी चीजें हैं, अच्छा रहेगा। आप में से कोई गया है?'

सब लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे। जरवेस ने उस जगह का नाम भी न सुना था। मै० वाश फाकनियर आदि भी न जानती थीं। कूपे को याद था कि वह भी किसी इतवार को ही गया था। सब लोग राजी हो गए। होटल से पुराने छाते किराए पर लिये गये और मुसो डि लोवर की ओर चल दिये।

सब लोग बारह थे। एक छाते में दो-दो चल रहे थे। मै० लोरिले मैदनियर के साथ थी, वह उसी से उलझती चल रही थी।

'हम लोगों को उसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम। पता नहीं वह कहाँ से ढूँढ़ लाया है। मेरे पति से अभी दस फ्रैंक ले गया है। भला कोई ऐसी भी स्त्री होगी, जिसका एक भी नातेदार, रिश्तेदार न हो क्यों बहिन! वह कहती थी कि उसकी एक बहिन यहाँ पेरिस में है, पर वह है कहाँ; अब बताती क्यों नहीं?'

और कुछ रुक कर उसने जरवेस की ओर संकेत किया। वह इस समय पहाड़ी से नीचे उतर रही थी।

'जरा देखो, कैसी हुमचती चलती है, लँगड़ी है, पाँव क्या हैं जैसे चैले हों!'

यह बात मै० फाकनियर ने भी सुन ली और उसने उसकी ओर से कहा—

'कितनी साफ-सुथरी रहती है और काम; काम जैसे बैलों की तरह करती है!

अब वे लोवर पहुँच चुके थे। मैदनियर ने कहा—

'अच्छा अब मैं सब से आगे-आगे चलता हूँ। जगह इतनी बड़ी है कि आप भटक सकते हैं। मैं यहाँ आ चुका हूँ। बहुत से सुन्दर-सुन्दर कमरे हैं, बड़ी अच्छी-अच्छी चीजें हैं, सब देखने योग्य हैं।'

और वह दल का दल उसमें घुस पड़ा। घुसते ही काले संगमरमर की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ और जानवर दिखाई दिये। वे मूर्तियाँ राक्षसों और

दानवों की थीं। सब देख-देखकर काँप रहे थे। इतने में मैदनियर ने ऊपर से पुकारा, 'यहाँ आओ देखो, वहाँ क्या है। यहाँ बड़ी अच्छी चीजें हैं।' सब लोग बड़ी सावधानी से चुपके से उस भाग में पहुँचे। ढेरों मूर्तियाँ और तसवीरें थीं। सबका जी हो रहा था कि सबकी सब खरीद लें; पर पास में इतना पैसा कहाँ था? वे थोड़ी देर और इधर-उधर देखते रहे, इतने में बन्द होने का समय आ गया। लोग बाहर आ गये। सबके सब बड़े प्रसन्न थे। अपने-अपने छाते लगाकर फिर चल दिये। जब वे आर्जेन्ट आये तो मैडम बाश बच्चों को लिये हुए पहले से आ गई थीं और कूपे की माँ से बातें कर रही थीं। मेज पर डिनर लगा हुआ था। बच्चों ने जैसे ही जरवेस को देखा दौड़कर लिपट गए। उसने बड़ी सरलतापूर्वक मै० बाश से पूछा—

'ठीक से रहे थे न; परेशान तो नहीं किया?'

बाश ने तो कोई उत्तर न दिया पर कोने से मै० लोरिले की आवाज सुन पड़ी—

'कूपे को इस समय न जाने कैसा लग रहा होगा?'

सारा दिन जरवेस उसी तरह प्रसन्न रही। मुसकानों के बीच खिंची हुई वह सब का स्वागत करती रही। पर वह कूपे को देखती थी कि वह बराबर मै० लोरिले के ही साथ रहा। वह अपनी बहिन से डरता था। उसने सोचा, 'कायर कहीं का—अभी कल शाम को कह रहा था—मुझे उनकी बिल्कुल परवाह नहीं है, उसके दिमाग ही नहीं मिलते दूसरे वे ईर्ष्या भी करते हैं पर अब कैसे साथ दुम हिलाता घूम रहा है जैसे कोई पालतू कुत्ता हो। कैसा बात-बात में उनका मुँह जोह रहा है।'

और वह कुछ उदास हो उठी; पर फिर यह सोचकर कि यह मौका इसका नहीं है, फिर खुश हो गई। सब अतिथि अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठ गये और हँसी-मजाक के बीच खाना शुरू हो गया। कमरे में भिन्न-भिन्न चीजों की सुगन्ध भर रही थी। बर्तनों की खटपट और कहकहे भी

गूँजने लगे थे। तरह-तरह की बातें हो रही थीं। मै० बाश ने हँसी में पति को झेंपाया कि वह मेज के नीचे मै० लिरेट का हाथ पकड़े हुए रोमांस कर रहा है। मैदनियर राजनीति में उलझ रही थी। लोरिले अपने जन्म-दिवस के दिन चैम्बर्ड का जन्म-दिन जानकर काफी खुश था। आखीर में फलों की प्लेटें आईं। लोगों ने खूब डटकर भोजन किया था। मेस बॉट्स ने पनीर के बाद रोटियों पर नम्बर लगाया था। थोड़ा रसा प्लेट में था, उसे पीते हुए बोला—

'वाह क्या कहना ?' मैदनियर ने भी वही दुहरा दिया। सब लोग उठ पड़े और सिगरेट पीने लगे। मेसबॉट्स को ग्रिलेड ने हाथ पकड़ कर उठाया—

'बाबा रे, खाते-खाते वजन दुगुना हो गया है।'

इतने में कूपे बोल उठा—

'अभी क्या ? अभी तो उन्होंने शुरू किया है। बैठा दो, तो खाते-खाते सबेरा हो जाय।'

'तब तो किसी भी दावत में बुलाना खतरनाक है ?' मैडम गाड्रन ने परिहास किया। इसी बीच मेस बॉट्स ने कहा—

'भाई अब तो लंच मिलनी चाहिये !'

इस पर कूपे ने जरवेस की ओर देखा। जरवेस ने सुनकर न जाने कैसा मुँह बना लिया। उसे यह बात अच्छी न लगी थी। जरवेस को ऐसा देखकर कूपे ने जोर से कहा—

'नहीं, अब पीने के नाम पर कुछ भी नहीं, काफी हो चुका है।'

कूपे की इस बात का कुछ ने तो समर्थन किया पर कुछ ऐसे भी थे जो बाट्स की ही बात दुहराने लगे—

'तब भी जिनको पीना हो पियें, जो नहीं चाहते न पियें, खैर इस बार उन्हीं लोगों के लिए है जो पीना चाहते हैं,' कूपे ने और आगे जोड़ दिया, 'पर पैसे की बात मित्र ही जानें मुझसे कोई मतलब नहीं।'

बाट्स के पास सिर्फ तीन फ्रैंक थे। जरूरत कम से कम पाँच फ्रैंक की थी। कूपे को भीतर ही भीतर बड़ा गुस्सा आया पर क्या करता। दो फ्रैंक के लिए लोरिले से फिर कहा, लोरिले ने अपनी पत्नी से छिपाकर पैसे दे दिये। थोड़ी देर बाद जब मैदनियर ने मालिक को बिल देने को कहा तो उसमें दाम कुछ अधिक थे। कदाचित् कुछ अतिरिक्त चार्ज था। इस पर ये लोग कुछ आना-कानी करने लगे। मालिक ने बताना शुरू किया कि उसने बीस के बजाय पचीस लिटर शराब दी है। बाद का नाश्ता भी ऊपर से ही था, सब इसी के कारण है। इस पर कुछ लोगों ने नाश्ते की आलोचना शुरू की 'रद्दी था, थर्ड क्लास था' आदि, काफी झगड़ा शुरू हो गया। कूपे ने कहा—

'मैं एक भी सू ज्यादा न दूँगा, अपना पैसा लो और अब दुबारा होटल में कोई कदम न रक्खेगा।'

'लेकिन मुझे छः फ्रैंक और चाहिये!'

औरतें भी बिगड़ गईं। कहने लगीं, 'एक भी छदाम अधिक न देनी चाहिए, घर में होता तो इतने पैसे से जाने कितना अच्छा खाना मिल सकता था।' जरवेस यह सब देखकर काफी लज्जित हो रही थी। वह अपनी सास के पास जाकर खड़ी हो गई, जैसे उससे कुछ मतलब ही न हो। मैदनियर पहले तो लड़ते-झगड़ते बाहर चला गया पर थोड़ी ही देर में फिर आ गया और बातचीत को वैसी ही पाकर बोला—

'अच्छा, हम तुमको तीन फ्रैंक और दे सकते हैं।'

बात सुलझ तो गई पर सन्तुष्ट कोई न हुआ। पूरी शाम लड़ाई-झगड़े में खराब हो गई थी। मै० लिरेट के कपड़े पानी में चौपट हो गए थे। वह अलग नाक-भौं सिकोड़ रही थी। मै० लोरिले भी कपड़ों पर कुछ धब्बे पड़ जाने के कारण बिगड़ रही थी। 'मैं आज विवाह कभी न चाहती थी सब इसीलिए हुआ है।' और भी तरह-तरह की बातें करके अपना असंतोष प्रकट कर रहे थे। इतने में मै० लोरिले निकल कर चल पड़ीं। कूपे और

जरवेस भी उसके पीछे दौड़े। थोड़ी दूर पहुँच कर उन्होंने क्षमा माँगी। लोरिले ने बात खत्म करने की गरज से कहा—

'अच्छा चलो तुम्हारे ही घर चलते हैं, देख लें।'

पर मै० लोरिले झल्ला उठी, 'तुम्हारे घर क्यों ?' पर फिर न जाने कैसे शान्त होकर बोली, 'मैं चाहती थी कि तुम लोग पहले थोड़ा समान खरीद लेते कोई अच्छी जगह ढूँढ़ लेते, तब विवाह करते न कि वह गंदी माँद !'

'लेकिन मैंने वह कोठरी छोड़ दी है बहन मैं अब नहीं रहूँगा। जहाँ जरवेस रहती है वह कमरा काफी बड़ा है।'

'क्या, तू इस मरगुल्ली के साथ रहेगा।'

जरवेस का मुँह उतर गया। यह शब्द उसने अपने लिए पहलेपहल प्रयोग होते सुना था। उसे लगा कि किसी ने उसके मुँह पर एक थप्पड़ जड़ दिया। उसे इस नाम में बहुत कुछ सुनाई दिया। जिस कमरे का उल्लेख किया गया था वह वही था जिसमें वह महीने भर लैन्टियर के साथ रही थी, सुख-दुख के दिन काटे थे, पर कूपे ने यह कुछ न समझा। वह सिर्फ शब्द सुनते ही बिगड़ उठा—

'किसी को इस तरह कहते हुए आप अपने को बड़ा अक्लमंद समझती होंगी ? मेरी समझ में नहीं आता इस तरह चिढ़ाने में क्या मजा आता है। फिर तुम्हारा भी तो नाम है 'भैंस की पूँछ' । नाम कोई अच्छा तो नहीं है, तुम्हें भी शायद पसन्द न होगा पर तुम्हें लोग कहते हैं तुम्हारे बालों की वजह से ! फिर वह कमरा तो काफी अच्छा है, क्यों न उसमें रहा जाय ?'

इस बार मै० लोरिले की हिम्मत न पड़ी कि कुछ कहे। 'भैंस की पूँछ' से वास्तव में वह भी काफी कटती थीं। वे चुपचाप चलने लगे और बाँकोवर होटल के पास पहुँच कर जब कूपे ने सबमें मेल कराने की दृष्टि से जरवेस को धक्का देकर इशारा किया कि वह बहिन से अच्छी तरह मिल

ले। तभी एक आदमी बगल से धक्का देता हुआ निकला और फिर घूम कर खड़ा हो गया। लोरिले ने कहा—

'आप चाचा बैजो हैं, लगता है आज काफी छाने हैं।'

देखते ही जरवेस दरवाजे की ओर भागी। चाचा बैजो की उम्र पचास की रही होगी, नशे में वह शायद किसी नाली में गिरे पड़े थे, कपड़े कीचड़ में लथपथ हो रहे थे।

'डरो मत, वह कुछ न करेगा। हमारा पड़ोसी है, हमारे कमरे से तीन कमरे आगे रहता है।' लोरिले ने जरवेस की ओर देख कर कहा। चाचा बैजो ने जरवेस से कहना शुरू किया—

'मैं.....मैं तुम्हें खा तो न लूँगा। यह बात जरूर है कि आज मैंने कुछ ज्यादा पी ली है, पर काम करने के बाद पीना जरूरी भी तो हो जाता है.....'

जरवेस अंदर घुसती ही चली गई। वह उसकी आँखों से डर गई थी। न जाने कैसी पशुता उनमें झलक रही थी। उसने डरते हुए कूपे से कहा, 'इसे यहाँ से किसी तरह भगाओ।' बैजो कहता ही गया—

'यह कोई बुरी बात तो नहीं है और शायद इन दिनों औरतें इसे बुरा भी नहीं कहतीं। मैंने भी औरतें देखी हैं। शुरू में वे बड़ा हल्ला मचाती हैं पर धीरे-धीरे सब ठीक हो जाती हैं.....।'

४. सुखी जीवन

इस घटना को चार साल बीत गए। इस बीच कूपे और जरवेस काफी सँभल गये थे। दोनों ने बेहद मेहनत की थी, दिन-रात काम करना ही उनका जीवन था। वे इतवार को भी कम विश्राम करते। मै० फाकनियर के यहाँ चौबीस में बारह घंटे काम करती और फिर भी घर आकर सारे काम-काज देखती, कोई बात न उठने पाती। पति भी खूब

मेहनत करता, जो कुछ पाता जरवेस के हाथ में धर देता। इन दिनों के बीच कभी भी वह शराबी की तरह झूमता-झामता घर न आया था। वह आराम से खिड़की के पास बैठकर पाइप पीता, काम-काज में हाथ बँटाता और सुख की नींद सोता था। वे लोग आस-पास भलेमानस गिने जाते थे। दोनों मिलकर प्रतिदिन नौ फ्रैंक कमाते थे। उनके लिए इतना बहुत कुछ बच भी जाता था। शुरू-शुरू में उन्हें जरूर कठिनाई हुई थी, खर्चे घटाने पड़े थे, जरूरतें काटी थीं। पर अब तो बाँकोवर होटल अच्छा न लगता था। वे चाहते थे कोई अच्छा घर हो, निजी सामान हो। वे सब खर्चे का अंदाजा भी लगाते, करीब साढ़े तीन सौ फ्रैंक की ही बात है। इतना पैसा आये कहाँ से? वे दोनों इसी यत्न में रहते कि कहीं कुछ हो जाय, और एकाएक उन्हें अवसर भी मिल गया।

प्लासंस में एक सज्जन थे। वे कुछ बूढ़े हो चले थे। उन्होंने क्लाड को जरवेस से ले लिया और स्वयं पढ़ाने-लिखाने लगे। क्लाड के चले जाने से जरवेस को काफी बचत हो गई। यद्यपि अब भी एटीन तो था ही, तो भी किसी तरह उन्होंने सात महीने में साढ़े तीन सौ फ्रैंक बचा ही लिए। उसी से उन्होंने कुछ सामान खरीद लिया। अब फर्नीचर उनका अपना हो गया। उस दिन वे लोग बड़े खुश थे क्योंकि सामान सिर्फ उनकी ही आँखों में नहीं बल्कि टोला-पड़ोस के लिए भी बड़ा महत्त्वपूर्ण था। दो महीने तक वे किसी जगह की खोज में रहे। पहले तो विचार हुआ कि जहाँ कूपे की बहिन थी उसी घर में कोई जगह मिल जाय तो ले ली जाय। परन्तु एक तो वहाँ कोई कमरा खाली भी न था दूसरे जरवेस स्वयं मै० लोरिले से दूर रहना चाहती थी, इसलिए यह विचार छोड़ दिया गया। अब दूसरी जगह की खोज प्रारम्भ हुई। जरवेस चाहती थी कि ऐसा घर मिले जहाँ से उसकी मालकिन की भी दूकान पास पड़े और जान-पहिचान वाले भी निकट हों। उनका परिश्रम सफल हो गया। मै० फाकनियर के ठीक सामने ही एक अच्छा कमरा खाली था। उसके साथ रसोईघर

और एक कमरा और था। घर दुमंजिला था, छोटा था, दो भागों में बँटा एक सकरा-सा जीना था। उसके दाएँ-बाएँ दोनों ओर कमरे थे। नीचे एक गाड़ीवाला रहता था।

जरवेश बड़ी खुश थी। जगह खुली थी। उसे अपना देहात फिर याद आ गया। न ज्यादा पड़ोसी, न गुल-गपाड़ा। दूकान में लोहा करते समय उसे घर की खिड़कियाँ दिखतीं। कमरे के भीतर का काफी हिस्सा भी दिखाई पड़ता। वे अप्रैल के महीने में उस घर में आये। जरवेस के बच्चा होने को था पर फिर भी उसने सब कुछ झाड़ा पोंछा, चीजों को ठीक-ठिकाने लगाया। घर बहुत ही खुला था। सुखदायक था, वह अगर किसी से कहती कि अनुमान से किराया बताये तो वह जरूर अधिक बताता, तब जरवेश ही मुसकराती हुई कहती—

'सिर्फ डेढ़ सौ फ्रैंक, एक कौड़ी ज्यादा नहीं।'

एक दिन उसके बच्चा हुआ तो उसने कूपे को जल्दी बुलवाने भी न दिया। शाम को जब वह स्वयं आया तो उसने जरवेस को देखा कि वह काफी शिथिल और पीली पड़ गई थी। तभी जरवेस ने बताया भी कि लड़की है और कूपे ने कहा—'तो क्या हुआ? मैं तो लड़की ही चाहता था।' पर कूपे के मन में ऐसा लगा कि विचार कुछ दूसरा ही था। जरवेस भी सोचती थी कि लड़का होता तो ज्यादा अच्छा था। पेरिस जैसी जगह में लड़कियों का गुजर होना बड़ा मुश्किल था। लड़के तो किसी तरह कुछ कर ही लेते थे।

शनिवार के दिन शाम को मैं० लोरिले का आगमन हुआ। वह बच्ची की बुवा हुई, इसलिए उन्होंने एक सस्ती सी टोपी और कुछ कपड़े खरीद कर दिये। जरवेस को भी लगभग छः पौंड शक्कर दी। शाम को कूपे ने सब की दावत की। लोरिले जब अपनी पत्नी के साथ आया तो दो बोतलें शराब की भी लेता आया। उसकी पत्नी स्वयं खाली हाथ न आई एक रेस्ट्राँ से कई चीजें ले आई थी।

पर ये लोग ऐसे थे कि जो कुछ भी करते, सबसे कहते फिरते थे। उन्होंने सबसे बताया कि इसमें उनके पचीस फ्रैंक खर्च हुए हैं। उन्होंने इतना सामान दिया है। बात जरवेस तक भी पहुँची, उसका मन खिन्न हो उठा। इसी दावत से जरवेस की जान-पहचान और भी बढ़ गई। वह मैं० गूजेट और उसके लड़के गूजेट के सम्पर्क में आई। अब तक सिर्फ आते-जाते दुआ-बंदगी हो जाती थी। कभी-कभी मैं० गूजेट थोड़ा-बहुत काम भी कर देती थीं क्योंकि जरवेस अकेली ही थी। ये लोग नार्ड में रहते थे, माँ फीतों का काम करती थी और बेटा लुहारी का काम एक फैक्ट्री में करता था। ये लोग इस जगह पाँच साल से रह रहे थे। ऊपर से इनका जीवन बड़ा शांत था पर भीतर ही भीतर एक आग सुलग रही थी। पिता गूजेट ने नशे में एक आदमी को मार डाला था और जेल के अन्दर स्वयं रूमाल से फाँसी लगा कर आत्महत्या कर ली थी। तभी से उसके पुत्र और विधवा पत्नी लैली छोड़कर पेरिस आ गये थे। पर ये लोग थे बड़े साहसी और सुशील। लोगों से न ज्यादा मतलब-गरज, न मिलना-जुलना। अपनी राह आना अपनी राह जाना यही इनका स्वभाव था। विधवा पत्नी तो हमेशा उदास और दुखी दिखती थीं पर गूजेट २३ वर्ष का छरहरा सुन्दर युवक था। आँखों में एक चमक थी। छोटी-छोटी दाढ़ी बहुत अच्छी लगती थी।

जरवेस को ये लोग बड़े अच्छे लगे। जब पहली बार उनके घर गई तो वहाँ की सफाई देखकर बड़ी प्रभावित हुई। मैं० गूजेट ने लड़के का भी कमरा दिखाया, छोटा-सा सफेदी से पुता हुआ सुन्दर कमरा। लगता था कोई लड़की रहती है। एक छोटा-सा बिस्तर, सफेद पर्दे, रजाई गद्दे, किताबों की अलमारी बस यही सामान था। दीवार पर कुछ चित्र बने हुए थे। गूजेट पढ़ता कम था, तसवीरें उसे ज्यादा अच्छी लगती थीं। जरवेस वहाँ लगभग एक घंटा रही और माँ को फीते, विनो गद्दों इत्यादि के बीच काम करती देखती रही। जरवेस जितना अधिक उनके विषय में जानती

गई उतना ही निकट होती गई। ये लोग मितव्ययी थे, कंजूस नहीं। बस लोग इनकी तारीफ करते थे। गूजेट बहुत साफ-सुथरा रहता था, सबसे नम्रता से मिलता था। गली की सभी लड़कियाँ उसे देखना पसन्द करतीं थीं। वह जब उनको देखता तो आँखें फिरा लेता, शर्मा जाता, इस पर वे और जोर-जोर हँसतीं। एक दिन उसने शराब भी पी और जब नशे में चूर घर पहुँचा तो माँ ने डाटा और उसके पिता का उदाहरण सामने रक्खा। उस दिन से उसने कसम खा ली हालाँकि शराब से उसे घृणा न थी।

पहले तो जरवेस उसे बिल्कुल न अच्छी लगी पर शीघ्र ही एकाएक बहुत घनिष्ठता हो गई और बहिन की तरह मानने लगा। जरवेस समझती थी कि गूजेट कुछ बुद्धू है। सभी लड़कियों से इस तरह डरना क्या उचित है ? पर फिर भी वे दोनों निकट आते गए कोई भी चीज उन्हें रोक न सकी।

तीन वर्ष तक जीवन स्थिर गति से बहता रहा। कोई विशेष घटना न हुई। जरवेस को लाँड्री में उन्नति मिल गई थी, वेतन बढ़ गया था। उसने एटीन को पढ़ाना भी सोचा था। सब खर्चों के बाद भी तीस-पैंतीस फ्रैंक बच ही जाते थे, बैंक में भी काफी पैसा हो गया था। पर जरवेस को इतने से संतोष न था। वह अपनी निजी दूकान चाहती थी। स्वयं किसी की गुलाम न रहकर दूसरों को अपने यहाँ रखना चाहती थी। पर वह कुछ संकोच करती थी, कुछ निश्चित रूप से कर न पाती थी, हाँ एक अच्छी जगह की तलाश में जरूर रहती थी कि जिसमें दूकान और घर सभी हो सके। इसी बीच जरवेस ने तमाम सामान भी खरीद लिया था।

धीरे-धीरे गूजेट और कूपे परिवारों में बहुत घनिष्ठता बढ़ गई। ये लोग साथ-साथ चर्च जाते, किसी रेस्टराँ में बैठकर नाश्ता-पानी करते पुरुष लोग एक-दो गिलास शराब भी पी लेते, जो पैसा होता मिल-जुल

कर दे देते और फिर स्त्रियों को लिए हुए घूमते-घामते घर लौट आते। कूपे के बहिन-बहनोई उसके इन मित्रों से बहुत जलते और कहा करते 'अजीब बात है जब देखो तब न जाने किसको-किसको लिए घूमा करती है जैसे कूपे के परिवार में कोई है ही नहीं।' मै० लोरिले ने तो तरह-तरह की भद्दी बातें भी उड़ा रक्खी थीं। मै० लिरेट जरूर जरवेस का पक्षपात करती, कूपे की माँ तो सबके सामने सबकी जैसी कहती, किसी को नाखुश न करती।

उस लड़की का नाम नाना रक्खा गया था। जिस दिन उसकी वर्ष-गाँठ थी उस दिन शाम को जब कूपे घर आया तो उसने जरवेस को बड़ी ही अस्त-व्यस्त स्थिति में पाया। बार-बार पूँछने पर भी उसने यही कह कर टाल दिया, 'कुछ तो नहीं, है क्या ?' पर वह स्वयं इतनी परेशान और डूबी हुई दिखने लगी कि एक बार डिनर की प्लेट लाकर मेज के पास बड़ी देर तक यों ही खड़ी रही, उसकी आँखें फटी-फटी सी कुछ खोजती रहीं। तब कूपे ने बड़ी ही नम्रता से इस स्थिति का कारण पूछा।

'अच्छा अगर पूछते ही हो तो गाउट डोट पर जो एक छोटी-सी दूकान है न, वह खाली है। मुझे अभी घंटे भर पहले पता चला है। मेरे दिमाग में ये सब बातें एकाएक आ भी गईं।'

वास्तव में वह दूकान अच्छी थी। दूकान के अलावा उसमें पीछे की ओर एक कमरा और अगल-बगल दो कमरे और थे। वे छोटे जरूर थे लेकिन कामचलाऊ थे, दाम तो ज्यादा था—पाँच सौ फ्रैंक।

'क्या तुमने दाम पूछा था ?'

'हाँ वैसे ही पूछा लिया था, लेकिन बहुत महँगा है, बहुत महँगा है। मैं समझती हूँ खरीदना ठीक न होगा क्यों ?'

कहने को उसने यह कह तो दिया पर पूरी शाम वह दूकान छोड़कर और किसी की बात ही न कर सकी। एक अखबार के टुकड़े पर बार-बार उसका नक्शा बनाती अपना फर्नीचर नापती देखती रही कि उसमें आ

सकेगा कि नहीं। ऐसा लगता था मानों कल ही जाने वाली है। कूपे ने जब यह दशा देखी तो बोला—'अच्छा, मैं कल जाऊँगा, उसके मालिक से बात करूँगा। हो सकता है वह कुछ कम पर राजी हो जाय। लेकिन एक बात बताओ, दूकान तो बिल्कुल लोरिले के पास है, वहाँ रह लोगी ?'

जरवेस पहले तो काफी बिगड़ी, कहने लगी कि उसकी किसी से दुश्मनी तो है नहीं। फिर लोरिले लोग खराब तो हैं नहीं। और जब कूपे सो गया तो स्वयं दिमाग में कमरे के सजाने आदि की बात सोचती रही, जैसे उसने ले ही लिया हो। दूसरे दिन उसने जब कूपे चला गया तो घड़ी के पीछे से अपनी पास-बुक निकाला। उसकी दूकान, उसका सारा भविष्य उन्हीं दो-तीन गंदे पन्नों पर निर्भर था। काम पर जाने के पहले उसने मै० गूजेट से भी सलाह ली। वह भी बड़ी खुश हुई और कहने लगी कि जिसका आदमी ऐसा मेहनती हो, शराब, आदि कुछ नशा ही न करता हो, उसके लिए क्या है, वह कुछ भी कर सकती है। दोपहर में वह अपनी ननद से भी मिली और सारी बात बताया। उसका कहना था कि अगर कोई काम किया जाय तो परिवार वालों से क्या छिपाना ! मै० लोरिले पहले तो सकते में आ गई। 'क्या, यह मरगुल्ली अपनी निजी दूकान चलाएगी ?' उस पर बाज जैसे गिरी और मारे डाह के कुछ क्षण ठीक से बोल न निकले। लड़खड़ाती जबान से उसने भी कहा—'ठीक तो होगा ?' लेकिन कुछ सँभल जाने पर कहने लगी, 'आँगन में बड़ी सीलन है, कमरों में अँधेरा बहुत है, वहाँ के रहने वालों को बाई तो शर्तिया हो जाती है, पर अगर तुमने सोच ही लिया है तो कोई बात नहीं, सब ठीक हो जायगा।'

रात को बातचीत करते हुए उसने पति से भी कहा—

'अब देखो तुम कोई अड़ङ्गा मत लगाना, नहीं तो मेरे मरने-जीने का सवाल हो जायेगा।' उसकी इच्छा इतनी तीव्र थी पर सब कुछ तय करने के पहले उन लोगों ने दाम कम कराना ही उचित समझा।

'अच्छा हम दोनों आदमी कल चलेंगे, मुझे चाहो तो छः बजे बुला लेना !' कूपे ने यही उत्तर दिया।

उस समय कूपे एक तिमंजिले मकान की छत ठीक कर रहा था, उस पर टीन छाई जा रही थी, वह आखिरी चादर थी। मई का दिन था। आसमान बिल्कुल साफ था। सूरज पश्चिमी क्षितिज में धँसता जा रहा था। उस सुनहले प्रकाश में कूपे का मुँह चमक रहा था। वह जस्ते की चादर बड़ी सावधानी से जैसे कोई दर्जी सूट काट रहा हो, काट रहा था। उसकी मदद करने के लिए लगभग सत्रह साल का एक लड़का था। वह उधर की ओर धौंकनी से भट्टी को तेज कर रहा था, आँच काफी तेज थी, हर बार चिनगियाँ उड़-उड़कर फैल जाती थीं।

'जिडोर, और टुकड़े रखना !' कूपे चिल्लाता जाता।

इस बार कूपे ने आखिरी चादर उठाई। उसको मुडेर के पास ही रखना था। उस जगह छत बड़ी ढलवाँ थी पर वह स्लिपर पहने धीरे-धीरे गुनगुनाता हुआ चल रहा था जैसे कोई बात ही न हो। फिर जरा-सा फिसल कर चिमनी को पकड़ कर जिडोर को चिल्लाया—

'क्यों रे, टुकड़े क्यों नहीं लाता ? क्या निहार रहा है ?'

और फिर चादर को ठीक करने लगा। उस ढाल पर अपने को एक ही पाँव बल्कि एक उँगुली के सहारे रोके हुए था। उसके मुँह पर बहुत ही विश्वास तथा स्वच्छन्दता थी। वह समझता था कि वह चाहे जो कुछ करे घबरा नहीं सकता। पाइप लगाये हुए बार-बार झुक-झुक कर थूकते-थूकते वह काम करता जाता था, तभी उसको मै० वाश दिख गई। वह सड़क पार करके उधर जा रही थी। पुकारने पर उसने सिर उठा कर देखा। और ऊपर नीचे से बातचीत दो क्षण के लिए शुरू हो गई। तभी एक गाड़ी निकली, उसमें बैठी हुई बुढ़िया कूपे को रह-रह कर ताक रही थी कि कहीं फिसल न जाय।

'अच्छा, गुडनाइट, मैं आपका ज्यादा समय न लूँगी !'

कूपे ने मुड़कर लोहे के टुकड़े जिडोर से लिए। तभी जरवेस वहाँ आ पहुँची। मै० बाश ने चाहा कि कूपे को पुकारे पर जरवेस ने रोक दिया और धीरे से बोली—

'मेरा तो हमेशा जी काँपा करता है और खासकर ऐसी स्थिति में तो मैं आँख उठाकर ऊपर देख तक नहीं सकती।'

'बहिन मेरे साथ तो बड़ा अच्छा है। मेरा आदमी दर्जीगीरी करता है। मुझे यह सब डर नहीं रहता!'

'पहले तो मुझे हमेशा ही घबराहट रहती थी, लगता था कि अब डोली में लद कर आ रहे हैं पर अब धीरे-धीरे आदत सी पड़ गई है।'

उसने नाना को अपने पीछे कर लिया कि कहीं चिल्ला न पड़े तो वह चौंक पड़े। उस समय वह बिल्कुल मुंडेर के सिरे पर था। उसने चादर के पास जुड़ते हुए लोहे और उठने वाली लौ को भी देखा। जरवेस भय और आशंका से पीली पड़ गई और ईश्वर से कल्याण मनाने लगी। तभी कूपे धीरे-धीरे उस ढाल से नीचे उतरा और पत्नी को देखते ही चिल्ला उठा—

'अच्छा तुम मुझे देख रही हो, इस तरह चुपके-चुपके? क्यों मै० बाश, हैं न ये पूरी बुद्धू, मुझसे बोलने में डरती थीं। खैर दस मिनट रुको।'

दोनों औरतें चुपचाप एक ओर खड़ी होकर बातें करने लगीं और कूपे जल्दी-जल्दी काम निबटाने में लग गया। जिडोर लोहे गर्म कर रहा था। उस समय सूरज करीब-करीब डूब रहा था। सारे पश्चिमी आसमान पर लाली उमड़ आई थी। उस पच्छिम प्रकाश में दोनों आदमियों की छायाएँ काफी लम्बी होकर घरों पर पड़ रही थीं। कूपे की हाथ की जस्ते की चादर भी विचित्र मालूम होती थी। एकाएक कूपे चिल्लाया—

'जिडोर, लोहा लाओ!'

और जब उसने गर्म लोहों को लेकर लगाना शुरू किया तो एक तरह की सी-सी की आवाज उठने लगी और वह उसी के बीच बोला, 'आया'। तभी नाना तालियाँ पीटते हुए चिल्ला उठी—

'पापा, पापा देखो।'

कूपे ने चाहा कि मुड़कर देख ले और तभी उसका पाँव फिसल गया। वह लुढ़कता हुआ नीचे आ गिरा। बीच में कोई ऐसी चीज थी भी नहीं कि पकड़ सकता।

'हे भगवान!' उसके गले से यही शब्द निकले। रास्ते में उसके शरीर ने दो बार पलटा खाया और अन्त में आकर जमीन पर भद्द की आवाज के साथ गिर पड़ा जैसे गीले कपड़ों की गठरी हो।

जरवेस सन्न खड़ी रह गई, एक चीख निकलने वाली थी, वह भी होठों पर आकर जम गई। मै० बाश ने झट नाना को पकड़ कर अपने कपड़ों में छिपा लिया जिससे वह उसे न देख सके। सामने अभी तक एक खिड़की के आगे एक बुढ़िया खड़ी थी, उसने धीरे से दरवाजे बन्द कर लिए मानों अभी तक इसी की प्रतीक्षा कर रही थी।

लगभग एक हफ्ते तक कूपे के लिए अब-तब लगा रहा। सारे मित्र और परिवार के लोग एक-एक घण्टे की राह देखते थे। जो डाक्टर दवा करता था वह स्वयं बड़ा अनुभवी था। एक बार में पाँच फ्रैंक लेता था। वह कहता था चोट है, गहरी है। इस गहरी चोट से सब लोग घबरा जाते पर जरवेस पर जैसे कुछ असर ही न होता। वह बिल्कुल निराश न होती। उसके पति का पाँव टूट गया है पर इसलिए वह मर जाय यह उससे न होगा। और वह उसके बगल में दिन-रात रहती, उसे न अपनी फिकर थी न बाल-बच्चों की न परिवार की। उसे बस चिन्ता थी तो कूपे की नवें दिन जब डाक्टर ने कहा, 'अब वह ठीक हो जाएगा।' तभी उसने थोड़ी देर के लिए कुर्सी पर पड़ कर झपकी ली। रात को भी करीब दो घण्टे सोई पर उसी के पैताने।

जब कूपे खतरे से दूर हो गया तो इसने सबको भेंट करने की भी आज्ञा दे दी। पर उसके ठीक होने में अभी महीनों की देर थी। इसी बात को लेकर मै० लोरिले अक्सर बिगड़ उठतीं—

'यह भी क्या बेवकूफी है कि उसे घर ले आई। अगर किसी अस्पताल में होता तो जल्दी से ठीक हो जाता।'

अक्सर वह इन महीनों का लेखा-जोखा भी लेकर बैठ जाती। पहले तो जो समय बरबाद हुआ फिर डाक्टर, दवा, शराब, गोश्त नाश्ता आदि।

'मेरे ख्याल में तो काफी खर्च होगा यदि ये लोग अपनी बचत से बर्दाश्त कर ले जायँ तो अच्छा हो। लेकिन मैं समझती हूँ कि अन्त यही होगा कि आखिर में ये कर्ज से लद जायँगे। और अगर ये अपने परिवार से किसी तरह की मदद की आशा करें तो भी बेकार है क्योंकि कोई भी इतना धनवान नहीं है।' और एक दिन तो जैसे उसकी ईर्ष्या का घड़ा फूट सा गया।

'और वह दुकान, दुकान कब खरीद रही हो, मालिक अभी प्रतीक्षा कर रहा है। कब लोगी?'

जरवेस कट गई। इतने दिनों तक उसे दुकान की याद भी न थी। वह देख रही थी कि ये लोग किसी का काम बिगड़ जाने पर कितने खुश होते थे। उस दिन से वे लोग उसे रोज चिढ़ाते थे। वह धीरे-धीरे आदी हो गई पर समझती थी कि ये लोग अपने भाई के गिरने के कारण दुखी तो जरा भी नहीं हैं पर खुश इसलिए हैं कि सब बना-बनाया काम बिगड़ गया।

वह हमेशा हँसती रहती और दिखाती कि जो रुपया उसके पति के अच्छे होने में खर्च हुआ उसे जरा भी दुःख नहीं है। उसने बैंक से अपना सारा रुपया भी एक साथ नहीं निकाला क्योंकि उसे लगता था कि अचानक कुछ घटना ऐसी अवश्य हो जायगी कि जिससे उसका सारा त्याग सफल हो जायगा और यह रुपया ख़र्च करने की जरूरत न पड़ेगी। अक्सर

मै० गूजेट आती और पूछ जाती कि उसके लिए कोई काम तो नहीं है या कोई ऐसा काम जो वह कर सकती हो वही बताए। वह अपने मन से न जाने कितने प्याले रस दे जाती। जरवेस को काम में व्यस्त देखकर बर्तन धुला लेती। गूजेट उसे ताजा पानी ला देता। इससे कम से कम दो सू की बचत हो जाती, और शाम को कूपे के पास बैठकर उसका जी बहलाये रखता। वह स्वभाव से कोमल और दयालु तो था ही। जरवेस जब अपने पति से बातें करती तो उसकी आवाज के मीठेपन से वह खिल उठता। गूजेट ने भी शायद ऐसी साहसी स्त्री न देखी थी। उसे विश्वास ही न होता कि वह दिन भर में सिर्फ पन्द्रह मिनट विश्राम करती थी लेकिन फिर भी न कभी थकती और न झुँझलाती। वह जरवेस को देखते-देखते ही उसका होता गया। उसकी माँ ने उसका विवाह भी एक लड़की से तय किया। वह भी उसी तरह फीते का काम करती थी। चूँकि गूजेट माँ का कहना टालना न चाहता था इससे राजी हो गया कि विवाह सितम्बर में हो जाय। पर जब जरवेस ने उससे उसके भविष्य के विषय में पूँछा तो वह उदास होकर बोला—

'मै० कूपे, सभी स्त्रियाँ तुम्हारी तरह नहीं होतीं, अगर हों तो मैं इस तरह दस से विवाह करने को तैयार हूँ !'

दो महीने बीतते-बीतते कूपे चलने-फिरने लगा और किसी तरह खिड़की तक चला जाता था। इस दुर्घटना से वह जर्जर हो गया था। वह कोई बड़ा विद्वान तो था नहीं कि अपने मन को समझा लेता, इसलिए सुबह से लेकर शाम तक उस घड़ी को कोसा करता। उसका दिमाग इससे परेशान हो गया था। अगर किसी नशे आदि से उसकी यह दशा हुई होती तो कोई बात न थी। वह अक्सर गम्भीर रहता था। उसे सारी चीजें बेकार लगने लगी थीं।

'अगर मेरे बाप की गर्दन टूट गई तो उसका कारण था और ठीक भी था, पर मैंने एक बूँद शराब तक नहीं पी, उस पर भी मेरा यह हाल

हुआ, वह भी सिर्फ इसीलिए कि मैं अपनी लड़की से बात करना चाहता था। अगर कहीं भी स्वर्ग नाम की कोई चीज है और सब का प्रबन्धकर्ता कोई ईश्वर उसमें रहता है तो मैं कहता हूँ कि वह ईश्वर अलबेला है जैसा उसका विधान है, निराला है।'

दो महीने तक वह सहारा लेकर चलता रहा फिर वह इस लायक हो गया कि सड़क तक चला जाए। फिर बोलवार्ड सड़क पर धूप में अक्सर बैठा रहने लगा। धीरे-धीरे उसकी हँसी लौट आई, वह प्रसन्न हो उठा। उसे बेकार बैठे रहने में ही आनन्द आने लगा। उसे जीवन में नया अनुभव हुआ, उसका जी होता था कि वह कुछ न करे, सुस्ती उसके सारे शरीर में व्याप्त हो गई थी। वह इधर-उधर टहलने चला जाता, आस-पास जो घर बन रहे थे वहाँ देखता-सुनता और लोगों से गप्पें हाँकता। वह कहता जरूर था कि अच्छा होने पर फिर काम शुरू करेगा पर इस समय तो काम करने की बात ही से उसका मिजाज बिगड़ जाता। दोपहर को कभी-कभी बहिन के यहाँ चला जाता। बहिन भी उस पर विशेष कृपा दिखाती और उसका काफी ध्यान रखती। विवाह के शुरू में तो वह अपने पत्नी-प्रेम के कारण उनके प्रभाव से बच गया था पर अब धीरे-धीरे उन्हीं के चंगुल में फिर आ गया। उन्होंने कहना शुरू किया कि कूपे के ऊपर जरवेस हमेशा हावी रहती है और वह अपनी पत्नी से डरता है।

उनके घर में सबसे पहले एटीन को ही लेकर झगड़ा प्रारम्भ हुआ। कूपे अपनी बहिन के घर में था और रात में जब देर करके घर लौटा तो देखा कि लड़के खाना के लिए हल्ला मचा रहे हैं। उसने एटीन के कान गर्म किए, डाटा और करीब एक घंटे तक घुड़कता रहा। वह कहता, 'मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इसको अब तक अपने घर में रख कैसे सका, वह उसका कौन है?' दो तीन दिन बाद ही उसने बच्चे के एक लात भी मार दी और अब ऐसा होने लगा कि जब वह कभी भी कूपे को आते हुए

सुनता तो भागकर गूजेट के यहाँ ही रहता। वे लोग उसे खाना खिलाते और आराम से बैठाते। जरवेस अपने काम पर बहुत दिनों से जाने लगी थी, हाँ अब वह कभी भी घड़ी का पर्दा खोल कर अपनी पास-बुक न देखती। उसका सारा पैसा तो खर्च हो चुका था और अब एक-एक कौड़ी दाँत से पकड़ने की जरूरत थी क्योंकि अब उसको दो ही हाथों का सहारा था और खाने वाले चार आदमी थे। फिर भी जब कोई कूपे को दोष देता तो वह उसी का पक्ष लेती। उसकी आँखें भर आतीं—

'सोचो तो उन्होंने कितना सहा है। उन्हें कितनी बड़ी चोट लगी है और उस पर अगर वह कुछ बदमिजाज हो गए हैं तो क्या। थोड़े दिन में उन्हें सुधर जाने दो फिर देखना कि उनका स्वभाव वैसा ही सुन्दर हुआ जाता है कि नहीं?'

और अगर कोई यह कहता कि वह अब बिल्कुल ठीक है, उसे काम पर जाना चाहिए तो भी कहती—

'नहीं सचमुच अभी नहीं, मैं नहीं चाहती कि वह फिर पड़ जायँ। फिर डाक्टर ने भी तो कहा है खूब ठीक हो जाने दो।' वह कभी-कभी कूपे को कुछ पैसे भी दे देती। कूपे चुपचाप ले भी लेता, और अक्सर तमाम झूठ-मूठ दर्दों की बात करता ताकि उसे और अधिक आवारागर्दी के लिए समय मिल जाय। वैसे तो लगभग छः महीने बीत चले थे पर अब वह अपने को बिल्कुल अपाहिज समझने लगा था।

वह रोज किसी न किसी साथी के साथ एक शराबखाने में जा बैठता—उसे गप्प लड़ाने के लिए एक वही जगह तो रह गई थी। और फिर उसमें नुकसान ही क्या था? एक-दो गिलास शराब से कभी कोई मरा तो है नहीं। पर वह अपने मन में कसम खाता कि अब वह शराब के अतिरिक्त और कुछ छुएगा भी नहीं। शराब फायदेमंद होती है, उससे हाजमा ठीक रहता है, उम्र बढ़ती है पर ब्राँडी—ब्राँडी तो बिल्कुल ही नाशक है। इतना सोचने पर भी वह कई बार अपने घर नशे में

बुत्त पहुँचता। ऐसे मौकों पर जरवेस अपने दरवाजों पर ताला लगा देती और कहती कि उसकी तबियत ठीक नहीं है ताकि गूजेट उसके पति को इस हालत में न देख सकें।

बेचारी जरवेस दिन पर दिन उदास होती जा रही थी। वह रोज उस दूकान के सामने से निकलती और जी मसोस कर रह जाती। जाने कब से वह उसे खरीदने की सोचती आई है पर………वह रोज हिसाब लगाती, अपने पैसे देखती। इससे उसका दिमाग चकरा उठता। दो सौ पचास फ्रैंक किराया, एक सौ पचास सामान की ढुलाई और बर्तन-भाँड़े तथा करीब सौ फ्रैंक दूकान के लिए; क्योंकि दूकान एकदम से तो चलने न लगेगी किसी भी हालत में पाँच सौ फ्रैंक से कम में न होगा।

पर उसने यह बात किसी से नहीं कही कि कहीं लोग यह न समझने लगें कि जो रुपया आदमी की बीमारी में लग गया है उसका उसे तनिक भी अफसोस है। वह अनुमान लगाया करती थी कि अगर वह इसी तरह काम करती गई तो कहीं पाँच वर्ष बाद इतना पैसा बचा सकेगी। तब वह हार-सी जाती और उसका जी बैठने लगता।

एक दिन जब जरवेस अकेली ही थी, तभी गूजेट ने प्रवेश किया। उसके पास ही एक कुर्सी में बैठ कर उसकी ओर देखता हुआ सिगरेट पीने लगा। ऐसा लगा कि वह कुछ सोच रहा है। एकाएक उसने सिगरेट मुँह से हटाई और बोला—

'मे० जरवेस अगर मैं तुम्हें जितना रुपया तुम्हें चाहिए दे दूँ तो तुम्हें कोई आपत्ति तो न होगी?'

जरवेस एक दराज के आगे झुकी हुई तौलिये तहा-तहा कर रख रही थी। एकाएक चौंक उठी उसका मुँह आश्चर्य से रंग उठा। गूजेट ने आज देखा था कि जरवेस लगभग दस मिनट तक उसी दूकान के आगे अपने को भूली हुई खड़ी रही। उसे यह भी न पता चला था कि वह कब उसके पास से निकल गया। उसने पहले तो नाहीं कर दी, 'जब कोई ठीक

नहीं है कि मैं कब लौटा पाऊँ कब न लौटा पाऊँ, तो ऐसी हालत में उधार लेना कहाँ की अकलमंदी है।' पर जब उसने जिद किया तो बोली—'अरे विवाह.........तुमने यह रुपया विवाह के ही लिए तो इकट्ठा किया है न ?' इस पर गूजेट कुछ भावावेश में बोला—

'उसकी कुछ चिंता न करो, मैं विवाह ही न करूँगा। यह मेरे माँ की बात थी, मैं माँ की बात न मानकर तुमको रुपया देना ठीक समझता हूँ !'

दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। उसकी इस घनिष्टता के पीछे कहीं कोमलता भी थी। उसी का अनुभव आज दोनों को हुआ। जरवेस अंत में राजी हो गई और गूजेट के साथ ही उसके घर गई। गूजेट ने अपनी बात माँ से कही। माँ का चेहरा गिर गया, काम करते हुए अपने लड़के का विरोध न करना चाहती थी पर उसकी बात को स्वीकार भी न कर सकी और उसने कारण भी बताया। जरवेस से ही उसने बड़ी नम्रतापूर्वक कहा कि कूपे में अब खराब आदतें पैदा हो गई हैं और वह अब काम-धाम न करेगा बल्कि उसी की ही कमाई खाता उड़ाता रहेगा। पर अंत में यह निश्चय हुआ कि पाँच सौ फ्रैंक उधार दे दिए जायँ और वह बीस फ्रैंक हर महीने लौटा दिया करेगी ! जब कूपे को इस बात का पता चला तो वह बहुत ही खुश हुआ।

"बहुत अच्छा, हमारी तकदीर जागी है। हम लोगों को रुपया देने में तो किसी तरह का खतरा ही नहीं है, हाँ अगर किसी धूर्त से लेन-देन किया होता तो उसे कानी कौड़ी से भी भेंट न होती !"

दूसरे ही दिन दूकान ले ली गई और जरवेस इतनी खुश-खुश दौड़ धूप कर रही थी कि लोगों ने कहना शुरू किया कि एक आपरेशन हुआ था और उससे उसका लँगड़ापन भी ठीक हो गया है।

५. महत्वाकांक्षा

पहली अप्रैल को बाश दम्पति भी गाउट डोर ही पहुँच गए। सब कुछ बड़ी आसानी से ठीक हो गया। जरवेस हमेशा डरा करती थी, 'पता नहीं कैसे ज़ालिम से पाला पड़े, हो सकता है पानी ही गिरने-गिराने पर रोज झगड़ा खड़ा रहे या और छोटी-मोटी चीजों पर झंझट उठ खड़ा हुआ करे।' पर मालिक अच्छा था, कोई बात नहीं हुई। मैं० बाश को भी कोई परेशानी न हुई। जिस दिन समझौते पर हस्ताक्षर होने थे, जरवेस बड़ी प्रसन्न थी, वह अब इतने बड़े घर में रहेगी जिसमें तमाम बड़े-बड़े बरामदे हैं, इतने लोग हैं, पूरा कसबा का कसबा है। पर जब उसने व्यापार की बात सोची तो हृदय कुछ धड़कने लगा। उसे लगता था कि अब रोटी के लिए जो संघर्ष करना पड़ेगा बहुत ही अधिक है उसके मान का नहीं है, उसने जल्दबाजी में बड़ी मूर्खता का काम कर डाला है, जान-बूझ कर अपने को खतरे में डाला है।

दुकान उनके काम भर के लिए चार दिन में ही ठीक हो सकती थी पर मरम्मत शुरू हो गई तो तीन हफ्ते तक चलती ही रही। पहले सोचा कि सारी रँगाई छोड़ दी जाय पर सब कुछ ऐसा उखड़-पुखड़ गया था कि जरवेस को फिर से कराना पड़ा। कूपे रोज काम करने नहीं बल्कि देखभाल करने जाता था। बाश भी आकर अपने पतलून या कपड़े डाल जाता, साथ ही कुछ राय-मशविरा भी देता जाता। दो आदमी लगे थे। दिन सिगरेट पीते थूकते-थाकते बिताते थे। अगर कभी कुछ काम किया तो घंटों उसकी आलोचना करते, किसी-किसी दिन आते भी नहीं। कभी एक-

दो घंटे बाद चले जाते तो फिर लौट कर सूरत ही न दिखाते। जरवेस बिचारी हाथ मलती रह जातीं। पर अंत में जब दो दिन जम कर काम हुआ तो सब कुछ ठीक हो गया। जरवेस नए घर में रहने लगी थी और ऐसी खुश थी जैसे कोई बच्चा। सड़क पर उतर आती, उसे अपना साइन बोर्ड दिख जाता। पीले-पीले अक्षर नीली जमीन पर लिखे हुए थे। पिछली खिड़की पर मलमल का पर्दा पड़ा था, उसके पीछे ही रूमाल, कमीजें, कफ, कालर सभी नीले कागज में सजे लगे थे। जरवेस मुग्ध हो गई। साफ-सुथरा था, जरवेस बैठ गई और इधर-उधर देखने लगी। दूकान के पीछे की ओर सोने का कमरा और रसोईघर था। नाना का बिस्तर दाएँ हाथ वाले कमरे में था, और एटीन के कमरे में गंदे कपड़ों के ढेर लगे रहते थे।

इस नई दुकान की पास-पड़ोस में बड़ी चर्चा थी। कुछ लोगों का अनुमान था, कूपे बरबाद हो रहे थे। उन लोगों ने सारा पैसा खर्च कर डाला था और अब उनके पास एक पाई न थी। व्यापार चल ही कैसे सकता है। एक दिन सवेरे जब उसने दरवाजा खोला तो उसके पास सिर्फ छः फ्रैंक थे पर वह घबराई नहीं। हफ्ते के अंत में उसने कुल हिसाब लगा कर पति से बताया कि उसके पास इतना पैसा आ गया है कि खर्च चल जाएगा।

यह सब देख कर बहन-बहनोई बहुत कुढ़े थे। एक दिन जब नौकरानी स्टार्च गर्म कर रही थी, वह आँधी-पानी की तरह आ पहुँची और जरवेस पर बिगड़ने लगी कि उसने उन सब की इज्जत मिट्टी में मिला दी है, उसी दिन से सारे सम्बन्ध टूट गए। मै० लोरिले ने तुनकते हुए कहा, 'मुझे तो सब पर बड़ा ताज्जुब लगता है। समझ ही में नहीं आता कि सारा रुपया आता कहाँ से है, मुझे शक है.........।' और फिर, 'गूजेट और तुम इतनी घुल-मिल कर रहती हो.....यह सब क्या है? तमाम बातें फैल रही हैं, क्या कानों में कार्क लगा ली है। वैसे तो इतनी जानें

कितना खर्च कर गई। पर-पर अब सब कुछ खतम। अगर तुम मरती भी हो तो मैं एक गिलास पानी न दूँ.........।'

जरवेस का जीवन बहुत व्यस्त था और उसे इस तरह की बातें सुनने-सुनाने को समय नहीं था। अगर कोई मित्र आता तो दरवाजे तक आकर मुसकानों से उसका स्वागत करती, इसी बहाने वह दम ले लेती। पड़ोस के सभी लोग उससे बड़े प्रसन्न थे और जब वे कभी उसकी प्रशंसा करते तो वह कहती, 'आदमी अगर भला ही न रहा तो क्या रह गया।' वह खुश भी होती, क्यों न हो, उसकी सारी इच्छाएँ पूरी हो चुकी थीं। उसने कूपे के सामने जो कुछ कहा था उसे अब भी याद था—'मैं चाहती हूँ खूब काम करूँ, खूब खाऊँ, मेरा अपना घर हो जिसमें बच्चों की परवरिस की जा सके, किसी की मार न सहनी पड़े, मरूँ तो अपनी ही छत के नीचे अपनी खाट पर मरूँ—जहाँ तक मरने की बात है मैं अब भी वही चाहती हूँ।' फिर कूपे की ओर मुड़कर कहती, 'कहो तो अभी कुछ दिन और जी लूँ!' कूपे के प्रति जरवेस वास्तव में बहुत कोमल थी। उसने अब अपना काम शुरू कर दिया था पर उसकी दूकान पेरिस के दूसरे कोने में थी, इसीलिए जरवेस उसको प्रति दिन नाश्ता पानी आने-जाने सबके लिए चालीस सू देत थी। छः में दो दिन तो वह किसी न किसी साथी के साथ उतने पैसों की शराब पी डालता और फिर नाश्ते पर नम्बर आता। एक बार तो उसने जरवेस के पास कहला भेजा कि बिल चालीस से ज्यादा का हो गया है, इसलिए कुछ पैसे भेज दे। जरवेस सुनकर हँस पड़ी, उसका सारा शरीर सिहर उठा, 'इसमें नुकसान ही क्या है, पैसे हैं, मनबहलाव में कम ज्यादा खर्च हो ही रहता है, फिर मेरा ही आदमी तो है। एक स्त्री अगर सुख शांति से रहना चाहती है तो उसे पति को स्वतंत्रता देनी ही पड़ेगी।'

इसके साथ यह भी कहा, 'नहीं तो मन-मुटाव हुआ नहीं की मार-पीट की नौबत आ जाती है!'

गर्मी आ गई थी, जून का महीना था। एक दिन स्टोव पर लोहे गर्म हो रहे थे। दरवाजा खुला हुआ था, हवा बिल्कुल न आ रही थी। 'कैसी सड़ी गर्मी है,' जरवेस ने एकाएक कहा। वह उस समय सिर्फ एक सलूका और स्कर्ट पहने हुए स्टार्च की नाँद पर काम कर रही थी। उसके नर्म घुँघराले बाल गले के आस-पास मँडरा रहे थे। वह कमीजों के कफों को स्टार्च में डुबों-डुबों कर फैलाती जाती थी। एकाएक उसने बहुत से कफ समेट कर एक डलिया में रखते हुए एक ओर बढ़ाते हुए कहा—

'लो पुटोस, यह काम तुम्हारा है। देखो जल्दी करो नहीं तो गर्मी के दिन हैं, सब सूख जाएँगे।'

मै० पुटोस छोटे कद की दुबली स्त्री थी। वह अब भी टोपी लगाए, तंग, कसे कपड़े पहने हुए बड़े आराम से मेज के पास खड़ी-खड़ी लोहे को फिराती जा रही थी। तभी उसने अपनी एक साथिन से कहा—

"क्लीमेन्स, ऊपर से कोट डाल लो, वे तीन आदमी इधर ही घूर रहे हैं, मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता………"

वह पहले कुछ भुनभुनाई, 'मुझे जो कुछ अच्छा लगता है करती हूँ, किसी को नहीं अच्छा लगता तो अपने को भून डालूँ।'

पुटोस ने वही बात दुबारा कहीं। इस बार क्लीमेन्स ने कुछ कहा तो पर कोट पहन लिया। उसने एक धक्का एक दूसरी नौकरानी को व्यंग्य के रूप में दिया। दोनों एक दूसरे को देखकर रह गईं। पुटोस इस समय मै० बाश की टोपी पर लोहा कर रही थी, तभी एक लम्बी, तड़ंगी स्त्री ने प्रवेश किया।

'तुम तो बहुत जल्दी आ गई मै० बिजर्ड! मुझे रात ही को लगा था कि इस समय तक तुम्हारा काम दे देना मेरे लिए काफी कठिन होगा पर……'

यह कह कर उसने हाथ का काम रख दिया और गंदे कपड़े ले जाकर दूकान के पिछले भाग में ढेर कर दिये। दोनों औरतों को छाँटते, निशान लगाते घंटों लग गए। तभी कूपे आया।

'उफ ! धूप ऐसी है कि मानों सिर चटक जायगा ।' और अपने को सँभालने के लिए मेज का सहारा लिया। वह नशे में था—उसके बालों में कहीं से मकड़ी का जाला लग गया था, उसके तार-तार झलक रहे थे। एक मूर्खतापूर्ण हँसी भी उसके चेहरे पर थी। जरवेस ने नम्रता से कहा—

'जाओ, और आराम से लेट जाओ !' उसके चेहरे पर एक मीठी मुसकान भी आ गई। 'हम लोगों के पास काम बहुत है, यहाँ हर्ज होगा ।'

'अच्छा मै० बिजर्ड। बत्तीस रूमाल थे न, दो और लो, चौंतीस हो गये ?'

पर कूपे का मन वहीं रहने का था, वह सो न सका। जरवेस कपड़ों को लिखती जाती थी, क्लीमेंस गिन रही थी। लिखते हुए वह हर एक कपड़े को देखती भी जाती थी। बहुत से कपड़े उसके पहचाने हुए थे। जरवेस इन्हीं कपड़ों से घिरी बैठी थी। आगस्टान स्टोव ठीक कर रही थी। इतने में कूपे जरवेस की ओर झुका—

'रानी, तुम कितनी अच्छी हो !'

और वह पास ही लड़खड़ा कर गिर पड़ा।

'देखो, तुम सब गड़बड़ करोगे ।' जरवेस ने जरा-सा धक्का देकर दूर कर दिया। दूसरी औरतें बोल उठीं—

'सचमुच कूपे और दूसरे लोगों में बड़ा फर्क है। लोग जब नशे में होते हैं, तो अक्सर मार देते हैं।'

जरवेस को अपनी गलती का अनुभव तुरंत ही हुआ। वह कुछ बिगड़ गई थी।

फौरन ही उसने कूपे को उठाकर खड़ा किया और हँसते हुए अपना मुँह आगे बढ़ा दिया, कूपे ने पसीने से गीले गालों पर एक चुम्बन लिया। वह शर्म से लाल हो उठी। उसने धीरे से उसे पीछे की ओर ढकेल दिया।

'तुम शरमाते भी नहीं।' पर कूपे ने जैसे न सुना। उसने चाहा कि

हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींच ले। तभी जरवेस उसे ठेलती हुई उसके कमरे की ओर ले गई। उसने कुछ विरोध तो किया पर चला गया। कमरे में जरवेस ने उसके कपड़े उतारे, जूते खोले, और बच्चे की तरह पलंग पर लिटा कर स्वयं लौट आई। दोनों एक लोहे के बारे में झगड़ रही थीं।

इसके बाद ही कूपे के सिर में दर्द रहने लगा और वह सबेरे जल्दी न उठता था। नतीजा होता कि काम पर न जाता। दोपहर तक कहीं उसकी तबियत कुछ सुधरती और शाम तक जब बिल्कुल स्वस्थ होता तो उसकी स्त्री उसे कुछ पैसे देती और कहती, 'जाइए साफ हवा में घूम आइए!' इसका मतलब उसके लिए होता कि जाकर और शराब पिये। गिलास पर गिलास चढ़ा कर चहकता हुआ घर आता। एक दिन आते उसने पूछा—

'तुम्हारा प्रेमी कहाँ है, आजकल दिखता नहीं है, मैं जाऊँ ढूँढ़ लाऊँ?' अब यह मजाक बहुत सामान्य हो गया था। उसका मतलब गूजेट से होता था। गूजेट बहुत कम आता था कि कहीं बेकार की बदनामी न उड़े।

दस-बारह दिन में कभी एक बार आता और दूकान के पीछे की ओर कोने में बैठे-बैठे सिगरेट पीता रहता। बातें तो बहुत ही कम करता, सिर्फ जरवेस की बातों पर हँसा करता। इधर कूपे एटीन के प्रति बहुत ही निर्दयी हो उठा था; बात-बात में पीटता था। गूजेट ने उसे ले जाकर अपने मालिक के यहाँ भट्टी धौंकने का काम दिला दिया था। उसके प्राण बच गए थे। गूजेट और जरवेस में और भी निकटता बढ़ गई थी। जरवेस की सभी साथिनें हँसतीं और कहतीं, 'तुम्हारी तो पूजा करता है। तुम जहाँ पाँव रख दो वहाँ की जमीन भी चूम सकता है, क्यों?' इस पर जरवेस के मुँह पर लज्जा-सी छा जाती और लज्जा के बीच वह कुछ खिली हुई ऐसी लगती, मानो सोलह वर्ष की युवती हो।

'बहुत अच्छा लड़का है, मैं जानती हूँ कि वह मुझे प्यार करता है पर उसने आज तक एक भी शब्द नहीं कहा और शायद न कभी कहेगा!'

जरवेस को इस प्रकार प्यार किए जाने पर अभिमान भी था। उसका मन अगर कभी अशांत होता तो उसके ही पास जाती। अगर कभी वे दोनों अकेले होते तो कभी लगता कि दोनों की मित्रता के पीछे कहीं प्यार भी है। इस तरह का प्यार किसे न अच्छा लगता।

नाना इस समय छः वर्ष की थी पर बड़ी ही नटखट थी। उसकी माँ रोज किसी न किसी स्कूल में भेजती। वह वहाँ रोज शरारत करती। कभी अध्यापक की दावात में मिट्टी भर देती, अपने साथियों के कपड़े पिन से जोड़ देती, मार देती। कई बार वह स्कूल से निकाली जा चुकी थी पर फिर रख ली जाती थी। घर में उसे चुप रहना होता था। पर जब स्कूल बंद हो जाते तो दिन भर शांत कैसे रहती। उसने अपने दो साथी बना लिए थे, पालिन और विक्टर बाश। दिन भर घर में शोर होता रहता, ये तीनों भागते-फिरते, सीढ़ियों पर चढ़ते उतरते, लड़ते-झगड़ते, बाहर निकलते तो हँसते-चिल्लाते। मै० गाड्रन के नौ बच्चे थे, सबके सब गंदे, मैले-कुचैले रहते, कपड़े फटे रहते, जूते अलग, मोजे अलग। पाँचवीं मंजिल पर एक परिवार में सात बच्चे थे। ये सब तीन-तीन, चार-चार करके अपने कमरों से आते। नाना इन सबों की अगुवा थी। इन सबों में छोटे-बड़े सभी होते। पालिन और विक्टर उसके सहायक थे। उसने उन्हें कुछ अधिकार भी दे रक्खे थे। वह अक्सर माँ का खेल खेलती, छोटे बच्चों को नंगा करके उनके कपड़े ठीक से पहनाती, बटन लगाती, कफ़ ठीक करती, इधर-उधर करने पर दो चार चपत भी जड़ देती; अगर कोई बिगड़ जाता तो काफी मरम्मत कर देती; काफी गुस्सैल भी थी। दूकान का जो पानी बहता वह रंगीन होता, वे सब उसमें हिलतीं, उनके पाँव रंगीन हो जाते, नाना दर्जी की दूकान से छोटे-मोटे कपड़े भी मार लाती। उन्हीं से तमाम तरह के खेल खेलती।

एक दिन खेल-खेल में बड़ा अनर्थ हो गया। नाना ने एक नया खेल निकाला था। वह किसी तरह मै० बाश का एक काठ का जूता उठा

लाई, उसमें उसने एक छेद करके एक रस्सी बाँध ली। एक गाड़ी बन गई, विक्टर ने सेब के छिलके भर दिए। नाना उसी को सबके लड़कों के आगे-आगे खींचती हुई निकली, पूरा जुलूस था। सब एक साथ 'एह', 'ओह' चिल्लाते भी जाते थे। आवाज सुनकर मैं० बाश ने सोचा, 'क्या उधम मचा रक्खा है इन लोगों ने!' और वह देखने के लिए बाहर आई, 'हे भगवान् यह जूता इनको कहाँ से मिल गया!'

और उसने दो-एक थप्पड़ नाना के लगाए, पालिन के कान ऐंठे, विक्टर को काफी डाटा। नाना की नाक से खून बह निकला; जरवेस उस समय पानी भर रही थी, देखते ही दौड़ी आई। बाश ने कहा—

'ऐसा ही है तो लड़कों को कुंजी-ताले में क्यों नहीं रखतीं?'

नतीजा यह हुआ कि उस दिन से दोनों की मित्रता खतम हो गई। जरवेस को अपनी गलती काफी दिनों बाद मालूम हुई। और उस दिन जब अक्टूबर के महीने का किराया वह समय से न दे सकी तो मालिक तुरंत ही तकाजा करने आ दौड़ा। बाश ही मैनेजर था। ऐसे समय पर लोरिले ने भी बाश से मित्रता बढ़ा ली।

एक दिन जरवेस को लोरिले के घर जाना पड़ा, वह भी कूपे की माँ के कारण। कूपे की माँ की उम्र इस समय ६७ वर्ष की थी, आँखों से दीख न पड़ता था, कुछ काम करने से मजबूर थी। जरवेस ने सोचा कि अगर सब लोग मिलकर उसका भार सँभाल लें तो अच्छा हो। फिर जिसके लड़के, लड़कियाँ ऐसे हों वह भी मुहताज रहे यह तो शर्म की बात है। चूँकि कूपे ने एक साफ जवाब दे दिया था कि कम से कम वह बहिन से इस बारे में कुछ न कहेगा इसलिए जरवेस ने ही जाना उचित समझा। उसने न तो दरवाजा खटखटाया न आवाज दी, घुसती चली गई। सब कुछ जैसे उसने पहिली बार देखा था वैसा ही था, उसकी चोट अब भी उसे साल रही थी। जाते ही शुरू कर दिया—

'यह तो आप जानती हैं कि वैसे तो मैं कभी न आती सिर्फ 'अम्माँ'

के लिए आना पड़ा है। मैं जानना चाहती हूँ कि क्या आप लोग यही चाहते हैं कि वह दरवाजे-दरवाजे भीख माँगती फिरे।'

'सचमुच !' बड़े तिरस्कार से मैं० लोरिले ने उत्तर दिया और अपना मुँह फेर लिया। लोरिले ने सिर उठा कर देखा।

'तुम क्या चाहती हो ?' पर चूँकि वह सब कुछ समझ गया था इसलिए उत्तर की प्रतीक्षा न करके कहता गया, 'यह भीख माँगने की बात कैसी है ?'

'अभी कल ही अम्माँ ने मेरे यहाँ खाया है। मैं तो समझता हूँ कि जो कुछ भी हमसे हो सकता है हम करते हैं, फिर हमारे यहाँ कोई कारूँ का खजाना तो है नहीं। इस पर अगर वह समझती हैं कि उन्हें मेरे तेरे घर झाँकना पड़ता है तो यह उनकी गलती है। मुझे यह घर भेदिये पसंद नहीं हैं। खैर अगर तुम लोग उनके निर्वाह के लिए पाँच फ्रैंक देने को तैयार हो, तो मैं भी तैयार हूँ !''

जरवेस चुप ही रही। ये लोग हमेशा ऐसे ही बातें करते थे कि जिससे उसकी हड्डी सुलग जाय, विवश होकर अपनी बात कहनी ही पड़ी, 'अगर अम्माँ के लिए उनकी हर औलाद पाँच-पाँच फ्रैंक देती हैं तो यह काफी तो है नहीं। पन्द्रह फ्रैंक में वह कैसे निर्वाह कर सकती हैं ?'

'क्यों नहीं कर सकती ! उन्हें करना चाहिए। वह सिर्फ इतना ही जानती हैं कि उनको अच्छा-अच्छा खाना मिलता जाय ! अपने लिए क्या वह स्वयं कुछ नहीं कर सकतीं ! अगर मुझको ही कहीं से कुछ मिलने का आसरा हो जाय तो मैं ही आलसी बन कर बैठ जाऊँ, हाथ पाँव क्यों हिलाऊँ ?''

इस बार जरवेस जल उठी। उसने उसी तरह जलती हुई आँखों से अपनी नंनद की ओर देखा। उसे लगा कि वह भी उसी तरह जड़ है, उसके भी मन में कहीं कोमलता नहीं !

'अपना पैसा रख लो, मैं तुम्हारी माँ को खिला लूँगी। मुझे तो

ड़क पर कल एक भूखी बिल्ली मिल गई थी, उसे तक मैंने रख लिया, ो क्या तुम्हारी माँ को नहीं रख सकती ? उसे अब किसी चीज की जरूरत ा रहेगी, हे भगवान्! लोग न जाने कैसे होते हैं ?'

और वह भड़ से दरवाजा बंद करती हुई चली गई।

उसी दिन शाम को माँ उसके पास आ गई। नाना के कमरे में एक ड़ी-सी खाट डाल दी गई। सामान उठवाने में देर नहीं लगी। थोड़ा तो ा ही जो फालतू था, बेच दिया गया। शाम को आते ही माँ ने कुछ बर्तन ोए, कमरे में झाड़ू लगाई। मानों वह जताना चाहती थी कि वह कार नहीं, कुछ कर सकती है। तीन साल बीत गए, पुराने झगड़े खतम ो गए, फिर मेल हो गया। जरवेश अब अपने पड़ोस में सबकी प्रिय ात्र बन गई थी। समय से सबके पैसे दे देती थी, ईमानदार समझी ाती थी। जहाँ कहीं भी जाती, लोग देखकर खुश होते थे। अक्सर लोगों से गली-कूचों में बड़ी अच्छी तरह बातें भी कर लेती। पड़ोसियों के ीच कपड़ों की गठरी लिए हुए गप्पें मारा करती।

६. गूजेट

एक दिन जरवेस किसी गाहक के कपड़े देने जा रही थी, घर काफी दूर था। पॉसीनियर्स से गुजरी। इस समय कुछ अँधेरा हो रहा था, हवा बन्द थी, थोड़ी गर्मी थी। वह चलते-चलते थक गई थी, भूख भी लग रही थी। तभी उसने निगाह उठाई तो सड़क का नाम देखा, उसके दिमाग में आया न हो गूजेट से उसकी दूकान पर ही मिला जाय। एटीन के बारे में भी जानने की इच्छा जग आई। पर उसे ठीक पता मालूम न था। माँट-मात्रे पूछते-पूछते पहुँच गई। एक मजदूर वहीं बैठा था। उससे दरवाजा पूछा। उसने बताया कि वही था। उसके पूछने पर यह भी बताया कि गूजेट यहीं काम करता था। जरवेस भीतर चली गई। एक बड़े कमरे में पहुँची

जिसके एक कोने में भट्टी थी। धौंकनी के चलने से सारा कमरा जगमगा रहा था। जरवेस ने दूसरे कोने पर दो आदमियों के साथ बैठे हुए गूजेट को पहिचान लिया। वह उसे देखते ही ताज्जुब से बोल उठा—

'जरवेस.........'और उसका मुँह किसी आंतरिक प्रसन्नता से खिल उठा। इस पर उसके साथी व्यंग्यात्मक ढङ्ग से मुसकुरा उठे। यह देखकर उसने एटीन को माँ के पास भेज दिया।

'तुम शायद एटीन से मिलने आई थीं? एटीन अपना काम बड़ी अच्छी तरह करता है।'

'मुझे बड़ी खुशी है, पर यह जगह बड़ी विचित्र लगती है, क्यों?'

इस पर जरवेस ने ढूँढ़ने की अपनी सारी कठिनाई बता डाली और पूछा, 'लोग यहाँ एटीन को क्यों नहीं जानते?'

'नहीं जानते, क्योंकि इसका यहाँ नाम है जू-जू, उसके बाल देखती हो न, जूब की तरह कट हैं।'

इतवार के दिन अक्सर वह कपड़े लेकर मै० गूजेट के यहाँ जाती थी। पहले साल तो जरवेस ने हर महीने बारह-बारह फ्रैंक दिये थे या कभी अपनी धुलाई काटकर। इस तरह उसने लगभग आधा कर्ज अदा कर दिया था। पर एक दिन जब उसको किसी से पैसा न मिल सका तो वह तुरन्त गूजेट के यहाँ से कुछ पैसे उधार ले आई। इसी तरह उसने दो-तीन बार किया। परिणाम यह हुआ कि उसका कर्ज फिर साढ़े चार सौ फ्रैंक हो गया।

अब वह उनको कुछ दे तो न पाती पर कपड़े जरूर धोती रही।

एक दिन जब जरवेस धुले कपड़े लेकर पहुँची तो कपड़े लेने के बाद, मै० गूजेट ने बड़ी सरलता से कहा—

'मैं तुम्हारे काम को बुरा नहीं कहती। मैं समझती हूँ कि फीतों और कढ़ाइयों पर जितना अच्छा लोहा तुम कर देती हो शायद कोई नहीं करता। सब कुछ ठीक रहता है, पर थोड़ी-सी बात यही है कि माड़ कुछ

ज्यादा हो जाता है। गूजेट को तो परवाह रहती ही नहीं है, जैसा भी मिले पहने सही।

इसके बाद उसने गन्दे कपड़े लिखे और जरवेस को दे दिये। जरवेस ने उनकी गठरी बना कर डलिया में रख ली और बहुत डरती हुई बोली—

'अगर आप बुरा न मानें तो मुझे इस हफ्ते की धुलाई दे दें।'

इस हफ्ते की धुलाई कुछ अधिक थी। करीब दस फ्रैंक। मै० गूजेट ने जरा एक तीखी निगाह से देखते हुए कहा—

'बेटी, तुम जैसा कहोगी होगा जरूर! तुम अगर चाहती हो तो दिये देती हूँ। पर इस तरह कर्ज कभी चुकते नहीं होते। यह मत समझो कि मैं इस बात पर जोर देती हूँ पर जरा ध्यान रखना!'

'मुझे कोयले वाले को पैसे देने हैं, इसीलिए मैंने कहा,' जरवेस ने नीचे देखते हुए सफाई देते कहा।

पर मै० गूजेट की आकृति वैसी ही बनी रही। उसने इस पर यह भी कहा कि उसे अपने खर्च कम करने चाहिए।

जब जरवेस जीने पर आ गई तब उसका मन कुछ हल्का हुआ। अब वह इस तरह की बातों की कुछ आदी भी हो गई थी। उसे इससे लेकर उसको देना यही अक्सर करना पड़ता था। बीच जीने में उसका एक लम्बी-तड़ङ्गी स्त्री से सामना हो गया। वही वरजिनी थी जिसे उसने उस दिन गुसलखाने में मारा-पीटा था। दोनों ने एक दूसरे को देखा। जरवेस ने चुपचाप आखें मूँद लीं। वह समझती कि उसने अब एक थप्पड़ दिया पर वह न जाने मुसकुराई। जरवेस को भी विनम्र होना पड़ा, बोली—

'मुझे क्षमा करना!'

'नहीं, नहीं, क्षमा कैसी, माफी मत माँगो बहिन.........' वरजिनी ने जरा रोब से कहा।

इसके बाद दोनों कई मिनट तक बातें करती रहीं, पिछली बात की जरा भी चर्चा किसी ने नहीं की।

वरजिनी उनतीस साल की युवा स्त्री, अंग-अंग बहुत सुगठित था, लाल उषा-सा मुसकुराता हुआ लम्बा मुँह और उस पर काले घने बाल, देखने में बड़ी ही आकर्षक लगती थी। उसने थोड़े में अपनी सारी बातें कह दीं, वह अब विवाहित थी, पिछले साल ही एक तसवीर मढ़ने वाले से विवाह हुआ था, उसके पति ने अब तो वह काम छोड़ दिया है और बेकार है पर आशा है कि जल्दी ही पुलिस विभाग में नौकरी मिल जायेगी, वह उसी के लिए मछली खरीदने आई थी। अन्त में उसने कहा—

'वह तो स्त्रियों की पूजा करता है। बहन! मेरा तो ख्याल है कि हम स्त्रियाँ ही अपने पतियों को बिगाड़ती हैं। लेकिन आओ ऊपर चलो, हम लोग सर्दी में कहाँ खड़े हैं!'

जरवेस को भी कुछ बातें करना जरूरी था।

'जिन कमरों में अब तुम रह रही हो पहले मैं रहती थी। यहीं एक बच्चा भी हुआ था!'

अब तो वरजिनी और भी जिद्द करने लगी।

'तब क्या है, कम से कम वह जगह तो देख लो जहाँ तुमने इतने अच्छे दिन बिताए हैं। मैं अभी तक ऐसी जगह रहती थी जहाँ बड़ी सीलन थी, अभी दो हफ्ते हुए इस जगह आई हूँ। अभी तो सब ठीक भी नहीं हुआ है।...हाँ मेरा नया नाम जानना चाहोगी, मैं० पॉसन!'

अब जरवेस को भी नाम बताना जरूरी था।

'और मेरा, मैं० कूपे!'

वरजिनी का व्यवहार सरल तो इतना था, पर जरवेस को हमेशा संदेह रहा कि कहीं बदला न ले रही हो, इसलिए ऊपर जाते हुए बड़ी सतर्क रही पर वैसी ही शिष्ट और नम्र बनी रही।

उसके पति पॉसन की उम्र इस समय पैंतालिस थी, मूछों वाला रोबदार चेहरा था। वह खिड़की के पास कुर्सी पर बैठा हुआ कागज की डिबियाँ बना रहा था। औजारों के नाम पर एक चाकू, छोटी-सी आरी और गोंद

यही थे। उसने कई सुन्दर डिबियाँ बनाईं भी थीं पर उनको कभी बेचा नहीं था। मित्रों को भेंट में दे देता था। इन दिनों बेकारी की हालत में और क्या करता, यही किया करता था। जरवेस को देखते ही पॉसन ने उठकर स्वागत किया। वरजिनी ने परिचय कराया, 'मेरी एक सहेली है।' पॉसन अधिक कुछ बातें न कर सका। शायद उसे यह कला थोड़ी ही आती थी। बैठे-बैठे वह कभी मछली की ओर जरूर देख लेता। जरवेस को कमरा देखते ही तमाम बातें याद आ गईं। वह बताने लगी कि उसकी कौन चीज कहाँ रहती थी………। वरजिनी ने और भी नई बातें बताईं।

'मेरे पति को अपनी चाची के मरने के बाद कुछ पैसा भी मिल गया है। मैं स्वयं कभी-कभी कपड़े सी कर कुछ पैदा करती हूँ।'

आधे घण्टे तक बातें करने के बाद जरवेस उठ खड़ी हुई। वरजिनी उसको सीढ़ियों तक भेजने आई। बिदा होते समय दोनों कुछ रुक गईं। जरवेस को लगा कि वरजिनी लैन्टियर और एडील के विषय में कुछ कहना चाहती है पर जाने क्यों न कह सकी और वह चल दी!

इस प्रकार वरजिनी और जरवेस की घनिष्टता का प्रारंभ हुआ। दूसरे ही हफ्ते जब वरजिनी उधर से निकली तो दूकान में जरवेस से मिली। अब वह अक्सर आती। कभी-कभी दो-तीन घण्टे बैठी रह जाती। शुरू में जरवेस को बड़ी उलझन होती, उसे हर दम डर रहता कि वरजिनी अब लैन्टियर की बात चलाने ही वाली है। वह जब तक उसके साथ रहती लैन्टियर उसके दिमाग से न जाता। वैसे लैन्टियर और एडील का कुछ भी हुआ हो उससे कुछ मतलब न था पर फिर भी उनके बारे में उसके मन में एक उत्सुकता थी।

जाड़े के दिन थे, जरवेस को उस मकान में रहते हुए चौथा वर्ष था। इस साल ठंडक बहुत थी। नये वर्ष में लगभग तीन हफ्ते तक लगातार बर्फ गिरी थी, सब सड़कें जम गई थीं। दूकान में काम भी बहुत था, आग जलते रहने के कारण कमरे गर्म थे, किसी तरह का शोर भी न होता था

क्योंकि सड़क पर बर्फ के कारण गाड़ियाँ न चलती थीं। जरवेस को इन दिनों काफी पीने में बड़ा मजा आता था, गर्म-गर्म काफी वह अपनी नौकरानियों को भी देती। एक दिन करीब साढ़े बारह बजे जब सब लोग काफी पी रहे थे तभी दरवाजा खुला और वरजिनी ने प्रवेश किया।

'गजब की सर्दी लग रही है, मेरे तो कान गल गये!'

'अच्छे मौके से आई, लो काफी पियो,' एक प्याला वरजिनी की ओर बढ़ाते हुए जरवेस ने कहा।

'जरूर-जरूर क्यों नहीं।' ठिठुरते हुए वरजिनी ने प्याला ले लिया। 'मैं बिसाती की दुकान पर खड़ी उसका इन्तजार कर रही थी। सच मानो बिल्कुल जम गई, भागी। कमरा काफी गरम है, बड़ा अच्छा है। लोहा किये हुए कपड़ों की गंध कितनी अच्छी होती है, क्यों?' इसके बाद वह काफी चलाने लगी। वह और कूपे की माँ दो जने ही कुर्सियों पर बैठे थे और सब लोग नीचे तख्तों पर। एकाएक वरजिनी ने जरवेस की ओर झुक कर कहा—

'तुम्हें वह गुसलखाने वाली बात याद है?'

जरवेस जैसे बुझ गई। उसे इसी बात का हमेशा डर रहता था। लैन्टियर की बात जरूर आएगी। वह समझ गई कि अब बात शुरू ही हो रही है। वरजिनी उठ कर जरवेस की बगल ही में बैठ गई। इस समय जरवेस की बुरी स्थिति थी। घबराहट के मारे चेहरा सफेद हुआ जा रहा था। उसकी हिम्मत न होती थी कि किसी तरह बात ही बदल दे, या जो कुछ कहा जाने वाला है उससे तटस्थ हो जाय। वह अधीर हो उठी, जो कुछ हो जल्दी हो। हृदय पर एक ऐसी भावना छाई जा रही थी जिसे वह बार-बार हटाना चाहती थी। 'मैं तुमको दुखाना नहीं चाहती बहन, ये शब्द मेरे मुँह तक बीसों बार आए हैं पर मैं संकोच से रुक जाती रही हूँ। सच कहती हूँ मेरे मन में तुम्हारे लिए कोई द्वेष नहीं है।'

और उसने अपना कप उठा कर एक घूँट में खाली कर दिया। जरवेस का हृदय मुँह तक आ गया था। वह बड़े कष्ट से उस क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी। उसने मन ही मन प्रश्न किया, 'क्या वरजिनी ने सचमुच उसको क्षमा कर दिया होगा?' उसने वरजिनी की आँखों में एक चमक देखी जिससे वह बहुत डरती थी। वरजिनी ने आगे कहा—

'उस दिन तो कारण था। तुम्हारे साथ छल हुआ था। मैं होती तो किसी को मार डालती।' इसके बाद उसकी भौंहों के बल कुछ मिट गए और जल्दी-जल्दी कहने लगी, 'वे लोग भी खुश नहीं हुए सच। किसी गंदी सड़क पर रहते थे, गाँठों तक कीचड़ भरा रहता था। मैं दो-एक बार उनसे मिलने गई थी, तभी मैंने देखा कि दोनों में बिल्कुल ही नहीं पटती। तुम तो जानती ही हो एडील बड़ी खराब है यद्यपि वह मेरी सगी बहिन है पर जो सच है कहूँगी ही। और लैन्टियर—उसके विषय में तो तुम जानती ही हो, कहने की जरूरत नहीं है, अगर औरत की जबान से कहीं भी 'न' निकला तो वह मार चला। उनकी भी बड़ी मजेदार जिन्दगी थी। इतनी जोर लड़ते थे कि सारा पड़ोस सुनता था, एक बार तो इतनी गड़बड़ी हुई कि पुलिस को बुलाना पड़ा.....।'

इसके बाद ही वरजिनी ने कई ऐसी घटनाएँ सुनाई जिनको सुन कर रोएँ काँप जाते थे। जरवेस डरती हुई सब सुन रही थी, उसके मुँह का रंग उड़ता जाता था, होंठ ऐसे हिल रहे थे मानों हँस रही हो। सात साल तक उसने लैन्टियर का नाम भी नहीं सुना था पर उस दिन मस्तिष्क काफी अशांत हो उठा। उसने कभी ऐसा न सोचा था। उसे एडील से द्वेष न था, हाँ लैन्टियर की मार-पीट पर थोड़ा विद्रूप ढङ्ग से हँस जरूर रही थी। वह उस समय वरजिनी जो कुछ भी बताती सुन सकती थी पर अपनी तरफ से उसने एक भी सवाल नहीं किया। अंत में पूँछा—

'क्या वे अब भी वहीं रहते हैं?'

'नहीं, अभी मैंने सब कुछ बताया कहाँ ? करीब एक हफ्ते पहले दोनों अलग हो गए हैं ?'

'अलग हो गए !' जरवेस ने जरा आश्चर्य से कहा।

'कौन अलग हो गए ?' बीच में ही क्लीमेंस बोल उठी। वह अब तक माँ से बातें कर रही थी।

'कोई नहीं, तुम उनको नहीं जानती !' वरजिनी ने उधर देखते हुए कह दिया और मुड़ कर जरवेस की ओर देखा। उसे जरवेस को दुखाने में जैसे मजा आ रहा था, एकाएक पूछ बैठी—

'अच्छा, यह बताओ कि अगर लैन्टियर यहाँ आ जाय तो तुम क्या करोगी ? क्योंकि आदमियों का तो तुम जानती ही हो कि कुछ ठीक नहीं रहता, जाने किस समय क्या कर बैठें। हो सकता है लैन्टियर भी तुम्हारे पास फिर आए ?'

बीच में टोक कर जरवेस ने कहा—

'अब मैं विवाहित हूँ और अब अगर लैन्टियर आए भी तो मैं उसे निकाल बाहर करूँ ! मेरा उससे कोई वास्ता नहीं है। हमारे बीच किसी तरह का सम्बन्ध जान-पहचान तक नहीं हो सकती !' जाने कहाँ से जरवेस में इतनी दृढ़ता आ गई थी।

'मै० पॉसन, अब वह मेरी उँगली तक तो छू नहीं सकता, अब कुछ नहीं, सब खतम !' उसे लगा कि बात ही बात में उसने एक कसम खा ली है। और तुरन्त ही उसने बात बदलने के लिए नौकरानियों को पुकार कर कहा—

'अच्छा, क्या समझती हो कि बैठे-बैठे कपड़ों पर लोहा हो जाएगा उठो, काम करो !'

वे न उठीं। गर्म होकर उनका मन फिर काम करने का न था। जरवेस का भी मन कुछ करने का न होता था। पर पर्दे गंदे हो रहे थे, धोना तो पड़ेगा ही। वरजिनी ने बात खतम करते हुए कहा—

'अरे मैं पनीर खरीदने आई थी, यहाँ बैठ गई। पॉसन सोचता होगा कि कहीं जम कर मर गई।'

काम करने का वक्त बीत चुका था। इसी तरह रोज होता। मुहल्ले भर के लिए उसका कमरा सर्दी से शरण था। जरवेस को इससे खुशी ही होती। पर बाश, लोरिले आदि इसकी भी निंदा ही करते। जरवेस अगर किसी गरीब आदमी को सड़क पर ठिठुरते पाती तो अपने कमरे में लिवा लाती। एक पेंटर के प्रति तो वह बहुत ही स्नेहालु हो उठी। वह सत्तर वर्ष का बूढ़ा था, घर की ऊपरी मंजिल पर रहता था और जाड़े से सिकुड़ा करता था। क्रीमिया के युद्ध में उसके तीन लड़के मारे गये थे। अब उसके कोई न था और इधर दो साल से बाई में उसके दोनों हाथ ऐसे जकड़ गए थे कि वह ब्रुश भी न पकड़ सकता था। जरवेस चाचा ब्रू को बुला लाती और स्टोव के पास बिठाकर कुछ रोटी और पनीर खाने को दे देती। चाचा ब्रू की दाढ़ी सन जैसी सफेद हो गई थी और चेहरा झुर्रियों से भरा हुए सूखे सेव की भाँति। वह वहीं चुपचाप बैठे खाया करता, साथ ही गरमाता भी जाता। उसे चुपचाप देख कर जरवेस पूछ बैठती—

'क्या सोच रहे हैं आप!'

'कुछ नहीं, बहुत सी चीजें!' एक विचित्र ढङ्ग से वह उत्तर देता। और काम करने वाले हँसते और अक्सर मजाक भी करते, 'क्यों बाबा जरवेस से मुहब्बत करते हो?' वह कुछ ध्यान न देता, वैसा ही खामोश बना रहता। उस दिन के बाद वरजिनी जरवेस से लैन्टियर के विषय में अक्सर बातें करती और एक दिन तो उसने यह भी कहा कि मैं अभी उससे ही मिल कर आ रही हूँ। जरवेस चुप रही। दूसरे दिन उसने बताया कि लैन्टियर फिर मिला था, तुम्हारे विषय में बड़ी देर तक बड़े प्यार से बातें भी कर रहा था। वरजिनी ने स्पष्ट देखा कि इन बातों से जरवेस बहुत घबरा जाती है। उसका हृदय मरोड़ता और लगता बेहोश हो

जाएगी। जरवेस अब अपनी जिम्मेदारी समझने लगी थी। इस दशा में ऐसी कोई बात न करना चाहती थी, जिससे उस पर कोई उँगली उठा सके। उसे कूपे का विशेष ख्याल न था, पर उसे रह-रह कर मित्र गूजेट का ख्याल आता। वह अपने मन में अब भी एक कोमलता यद्यपि वह कुछ अनिश्चित ही थी, लैन्टियर के प्रति पाती थी। उसके आधार पर उससे किसी तरह का सम्बन्ध रखना, गूजेट के प्रति विश्वासघात होगा। उसके उस मधुर स्नेह के प्रति धोखा होगा। वह इन दिनों अपने मन में बड़ी दुखी रहती। कभी उस दिन को सोचती जब लैन्टियर धोखा देकर छोड़ गया था, और कभी उस दिन को सोचती जब लैन्टियर उसके पास फिर आ जाएगा। जाने कैसी शिथिलता उसके अंगों में भर जाती।

उसके मन में एक भय समा गया था। सड़क पर चलते-चलते वह सोचती रहती अब लैन्टियर आ गया। वह कभी इधर-उधर देखती भी न थी कहीं लैन्टियर देख न ले। वह जरूर ताक में रहता होगा। हो सकता है कि वह किसी दिन दूकान पर ही आ धमके।' सोचते ही उसके पसीना निकल आता, काँप जाती। वह सोचती कि लैन्टियर आया नहीं कि तुरंत ही अपनी बाहों में कस लेगा। उसे लैन्टियर के स्पर्श याद आ जाते, उसकी धड़कन बढ़ जाती। जब वह इस तरह सोचते-सोचते परेशान हो जाती तो गूजेट के पास फैक्ट्री चली जाती। लौटने पर उसका मन हल्का होता, मुँह पर मीठी-सी मुसकान होती। गूजेट के हथौड़े की चोटों से उसकी सारी डरावनी छायाएँ भाग जातीं। उसे लगता ये चोटें उसे इसी तरह हमेशा बचाती रहेंगी। धीरे-धीरे उसका डर कम हो गया।

कूपे इन दिनों काफी बिगड़ चुका था। एक दिन स्वयं जरवेस ने देखा कि मेस बाट्स के साथ एसोम्वायर में जमा है। उसने चाल तेज कर दी कि कहीं देख न ले, पर अपनी कोरों से देखा कूपे बड़ी निश्चिंतता से एक गिलास लिए पी रहा था। कूपे उससे झूठ बोलता था, अब उसने ब्रांडी शुरू कर दी थी। जरवेस शराब को बहुत बुरा न समझती

थी पर ब्रांडी उफ ! सरकार ऐसी चीजें बनने ही क्यों देती है, क्यों नहीं रोकती ? उसका सिर चकराने लगा—जब वह घर पहुँची तो वहाँ भी उसे सब कुछ गड़बड़ दिखा। दूकान में सारे कपड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे, नौकरानियों में से कोई न था। लोहे आग पर गरम होकर तप रहे थे। वह भागी-भागी ऊपर चढ़ गई, पता लगा कि बिजर्ड अपनी औरत को मार रहा है। शराब पीकर आया है। झट छठवीं मंजिल पर पहुँची, काफी लोग इकट्ठा थे। जरवेस बिजर्ड के कपड़े धोती थी, मै० बिजर्ड से उसकी पटती भी खूब थी। मै० बाश दरवाजे पर ही मिली। देखते ही चिल्ला उठी—'बचाओ, बचाओ या जाकर पुलिस को ही बुला लाओ।'

किसी की हिम्मत न होती थी कि भीतर घुस जाय। नशे में बिजर्ड बिल्कुल पागल हो जाता था। ब्रांडी की उसकी लत पड़ गई थी। काम करते हुए वह एक बोतल लिए ही रहता था।

'क्या तुम लोग उसे मर ही जाने दोगे ?' कहते हुए जरवेस भीतर घुस गई। कमरा काफी साफ था और सामान भी कुछ न था। बिजर्ड ने इसी नशे के पीछे सब कुछ बेच डाला था। मार-पीट में मेज उलट गई थी, कुर्सियाँ औंधी पड़ी थीं। जमीन पर बेचारी माँ बिजर्ड पड़ी थी; उसके कपड़े गीले थे, अभी गुसलखाने से आई थी, बाल छितरा कर मुँह पर आ गये थे, तमाम धूल लिपट गई थी और वह नशेड़ी पास ही खड़ा पाँव से बार-बार ठोकरें लगाता जाता था। हर ठोकर पर वह धीरे से कराह उठती थी। शायद जोर से रोने की ताकत उसमें न रह गई थी। इतने में चाचा ब्रू भी कमरे में आ गये। अब दोनों उससे पूछ-ताँछ करने लगे। वह उनकी ओर झुका। उसके मुँह से सफेद फेन निकल रहा था, चेहरा भयानक हो उठा था, आँखों में एक हत्यारेपन की झलक थी। उसने ब्रू को पकड़ कर ढकेल दिया, वह लड़खड़ा कर मेज पर जा गिरा और जरवेस को पकड़ कर इतनी जोर से झकझोरा कि उसका एक-एक जोड़ हिल उठा। इसके बाद फिर वह अपनी स्त्री पर

जुट पड़ा। वह चुपचाप जमीन पर अब भी पड़ी थी, मुँह खुला था, आँखें बंद थी, शरीर में कोई हरकत न होती थी। चार वर्ष की लड़की लैली कोने में खड़ी माँ की ओर ताक रही थी, अपनी बाहों में वह अपनी छोटी दुधमुँही बहिन हेनरीटा को सँभाले थी। उसका मुँह रुआसा था, आँखें धुँधलाई थीं पर वह रो न रही थी।

एकाएक बिजर्ड लड़खड़ा कर वहीं गिर पड़ा। जरवेस ने चाचा ब्रू की मदद से स्त्री को जमीन से उठा कर धीरे-धीरे ले जाकर बिस्तरे पर लिटा दिया। लैली भी पास ही पहुँच गई। जब जरवेस चलने लगी तो उसने लैली की ओर देखा; उस छोटी-सी लड़की के मुँह पर अजीब शक्ति और साहस की ज्योति थी। घर पहुँचते ही क्लीमेंस ने कहा, 'तुम्हारा आदमी भी सड़क के उस पार खड़ा है, कम धूर्त्त नहीं है।'

कूपे लड़खड़ाता अन्दर घुसा। दरवाजा न पकड़ सका तो गिर पड़ा। दो तीन शीशे टूट गये। जरवेस के दिमाग में एसोम्वायर का दृश्य घूम गया, वह कुछ क्रुद्ध हो उठी।

'जाओ पड़ कर सो जाओ!' दूसरे ही क्षण उसने कुछ मुस्कराने की चेष्टा की। उसने जरवेस को पकड़ कर बड़ी जोर से दबा दिया, ऊपर से एक जोर का घूँसा भी मारा। जरवेस सिसक उठी।

'क्या फर्क है, एक जानवर यह भी है। एक ऊपर पड़ा होगा, कितना मारा है उसने.....' उसका हृदय जैसे कचोट उठा, 'सब आदमी एक ही तरह के होते हैं? उसने लैन्टियर को सोचा, कूपे को देखा। 'क्या दुनिया में सुख कहीं नहीं है?' और आँसू की एक बड़ी बूँद ढुलक पड़ी।

७. वर्षगाँठ

कूपे के घर में अक्सर खान-पान होते रहते थे। हरेक के लिए कुछ न कुछ बात मिल ही जाती। उस दिन भी दावत देना निश्चित हुआ। १६ जून जरवेस की वर्षगाँठ पड़ती थी।

सबसे बड़ी समस्या थी किसको-किसको बुलाया जाय ? जरवेस बारह से ज्यादा आदमी न चाहती थी, अपना घर, पुटोस और क्लीमेंस मिलकर आठ हो जाते थे। चार में वह लोरिले और बाश दोनों परिवारों को बुलाना चाहती थी। लोरिले ने तो अक्सर ही कहा था, 'ये पारिवारिक झगड़े स्थाई नहीं होने चाहिये, आज हुए कल भूल जाना चाहिये !' इस प्रकार बच्चों को छोड़ चौदह हो गये। जरवेस कुछ खुश पर कुछ शंकित जरूर थी।

एक दिन वे सब इसी दावत के बारे में बातें कर रहे थे कि वरजिनी ने प्रवेश किया। सब लोग यही सोच रहे थे क्या-क्या रहना चाहिये। अंत में मुर्ग-मुसल्लम तय हो गया। सब लोग उठने लगे। वरजिनी ने मौका पाकर जरवेस से कहा, 'बहिन तुम्हें बताने आई हूँ, जरा सम्भल कर रहना। मुझे लैन्टिर अभी-अभी यहीं मिला है, मेरे पीछे आ रहा है। मैं तुम्हारी बात सोचती हूँ तो डर लगता है !' जरवेस का चेहरा पीला पड़ गया। दावत के लिये सामान लेने जाना ही होगा, कहीं मिल गया तो.....! वह घबरा रही थी। वरजिनी ने कहा—

'लाओ, मैं चली जाती हूँ !'

जब वह लौट कर आई तो बताया कि लैन्टियर का अब वहाँ पता नहीं है। परसों ही दावत थी। खाना बनना शुरू हो गया था। स्टोव के पास उस दिन इसी विषय में बातें होती रहीं। मै० बाश भी वहीं थी। उसने कहा, 'अगर मैं होती तो पति से जरूर कह देती।' जरवेस इस पर भय के मारे सिहर उठी। वह जानती थी कि कूपे के मन में लैन्टियर के प्रति कितनी ईर्ष्या है। चारों स्त्रियाँ बैठी-बैठी यही सोचती रहीं कि किस तरह इससे छुटकारा पाया जाय। स्टोव पर गोस्त फुद-फुदकर पक रहा था। अंत में एक-एक कप काफी पीकर सब चले गये।

सोमवार का दिन था। अतिथि चौदह थे। जरवेस को चिंता थी बैठने का प्रबन्ध कैसे किया जाय। जगह कम थी। जरवेस और कूपे की

माँ दोनों ने मेज लगाना ३ बजे से ही शुरू कर दिया। जो चीजें तैयार थीं लाकर अच्छी तरह सजा दीं। ४ बज गया, मुर्ग-मुसल्लम अभी तैयार नहीं हुआ था, पक रहा था। आगस्टाइन उसे देख रही थी। मेहमान लोग आने लगे थे। सबसे पहले पुटॉस और क्लीमेंस आईं। दोनों चमकदार गहरे रंग के कपड़े पहने थीं। इसके बाद वरजिनी का पदार्पण हुआ। छपी हुई मलमल के कपड़ों में वरजिनी बड़ी सुन्दर दिख रही थी। मै० लिरेट भी आ चुकी थीं। स्त्रियों ने आकर अपने हैट और कोट आदि उतार कर खाट पर ढेर कर दिये। जरवेस सबसे बहुत ही कोमलता से बातें करती थी, वरजिनी से आते ही गले मिली थी। सब लोग इंतजाम ही कर रहे थे। इतने में गूजेट ने दरवाजा खोला और देहरी के पास ही चुपचाप संकोचवश खड़ा हो गया। एक हाथ में फूलों के कई गुच्छे जरवेस को देने के लिये लाया था। जरवेस दौड़कर उसके पास पहुँची और गुच्छे लेते हुये बोली—

'बड़े अच्छे हैं!'

और उसकी ओर देखते ही जरवेस के गाल लाल पड़ गये। गूजेट भी शर्म के मारे कुछ कह न सका, सिर झुकाये खड़ा रहा। थोड़ी देर में गूजेट ने ही कहा, 'माँ की तबियत खराब है, वे न आ सकेंगी!'

जरवेस दुखी तो जरूर हुई पर कुछ कह न सकी। उसको कूपे की चिंता भी लगी थी कि पता नहीं कहाँ है, अभी तक आया नहीं। मेहमान सभी आ चुके थे, सिर्फ लोरिले लोग ही न थे। जरवेस ने लिरेट से ही बुला लाने के लिये कहा। वे लोग आ गये।

जरवेस ने बड़े आदर-सत्कार से बिठाया। सभी मेहमान कुछ न कुछ भेंट जरूर लाये थे। वर्षगाँठ का अवसर था, पर मै० लोरिले ही यह समझ कर कि जरवेस कहीं अपने को मेरे ही बराबर न समझने लगे, कुछ न लाई थी। सब लोग यथास्थान बैठ गये थे। पहले एक-एक

गिलास शराब दी गई। लोग पीने लगे। इतने में जरवेस और माँ कुछ लेने कमरे में गईं।

'देखा, मैं तो तभी से देख रही हूँ जबसे उसने मेज की चीजें देखी हैं, मुँह बन गया है, कितनी ईर्ष्या करती है?'

यह सच ही था कि मै० लोरिले इतनी सजी-वजी मेज को देख न सकी थी। उस पर बढ़िया कपड़े थे, चमकते हुए गिलास, नए बर्तन, सुन्दर, सजी हुई पावरोटियाँ, सब चीजें देख कर यही लगता था मानों कोई रेस्ट्राँ। मै० लोरिले ने मेज-पोश को छूकर देखा कि नया है कि पुराना? इतने में ही जरवेस ने कहा, अच्छा अब तो खाना लाया जाय? पर न जाने कूपे कहाँ है?'

'वह तो हमेशा देर करके आता है, पूरा भुलक्कड़ है,' उसकी बहिन ने कहा। जरवेस बड़ी निराश हुई, सारा खेल चौपट हो जायगा।

'कोई जाकर ढूँढ़ नहीं ला सकता?'

जरवेस ने एक निगाह सबकी ओर डालते हुये कहा। गूजेट तैयार हो गया, जरवेस और वरजिनी भी साथ हो लीं। तीनों बढ़िया कपड़े पहने हुये थे ही, सभी घूर-घूर कर देखते। वे एक-एक करके सभी शराब खानों में हो आये पर कूपे कहीं न दिखा। एकाएक जब वे बोलवार्ड की ओर चले तो जरवेस चीख उठी। गूजेट ने तुरन्त ही उसे थाम लिया, जरवेस का शरीर शिथिल होता जा रहा था। 'क्या बात है?' गूजेट ने पूछा। पर बताता कौन। वरजिनी समझ गई। जरवेस के ऊपर झुककर उसने एक निगाह रेस्ट्राँ की ओर डाली, लैन्टियर बैठा खा रहा था। 'मेरा पैर मिचुक गया था!' जरवेस ने गूजेट को कुछ थम कर उत्तर दिया।

गूजेट अब भी अविश्वासी की भाँति उसे निहार रहा था। अंत में एसोम्वायर में ही कूपे और पॉसन दोनों मिल गए। वे एक भीड़ के बीच

खड़े थे। कूपे किसी से झगड़ रहा था और पॉसन खड़ा हुआ सब देख रहा था। वह उस समय 'ड्यूटी आफ' था।

गूजेट ने जरवेस और वरजिनी को बाहर ही छोड़ दिया और जाते ही कूपे के कंधे पर हाथ रक्खा। कूपे ने जब मुड़कर दोनों स्त्रियों को देखा तो और भी बिगड़ उठा—

'मैं नहीं जाता। मुझे यह बरदाश्त नहीं, जहाँ भी जाऊँ मेरी औरत मेरे पीछे निगरानी करती फिरे। वे जायँ और जो कुछ कूड़ा-भूसा इकट्ठा कर रक्खा है ठूँसे। मुझे नहीं चाहिए ऐसी दावत।'

पर गूजेट ने उसके साथ ही बैठकर थोड़ी शराब पी। अंत में वह भी चलने को तैयार हो गया।

जरवेस इस समय काँप रही थी। दिमाग काम न कर रहा था। वरजिनी से लैन्टियर के बारे में बातें करती जा रही थी और उसकी आड़ में ऐसे चल रही थी कि लैन्टियर की निगाह उस पर न पड़ सके। लैन्टियर डिनर कर रहा था।

पर कूपे को पता था कि लैन्टियर यहाँ है, तभी वह बोला—

'यहाँ पर एक आदमी और भी तो है जिससे तुम्हारी दोस्ती है?'

और उसने जरवेस को हजारों बातें सुनाईं। 'वह क्यों उसे ढूँढ़ने आई? 'वह उसे ढूँढ़ने नहीं बल्कि अपने प्रेमी से मिलने आई थीं। साथ ही तमाम भद्दी गालियाँ लैन्टियर को देनी शुरू कर दी। पर लैन्टियर चुप बैठा रहा जैसे उसने सुना ही न हो या उससे कुछ मतलब न हो। वरजिनी ने कूपे को डाँटा। उसे कुछ होश हुआ और सबके साथ घर गिरते-पड़ते आया। सब लोगों से हाथ मिलाकर किसी तरह एक सीट पर बैठ गया। जरवेस ने धीमी आवाज में सबसे यथास्थान बैठ जाने की प्रार्थना की। जब सब लोग बैठ गये तो एक जगह खाली रह गई। गूजेट की माँ नहीं आई थीं।

'तो हम लोग तेरह हैं!' जरवेस बहुत दुःखी थी, उसे ऐसा लगा

मानो यह कभी उसके उस दुर्भाग्य की ओर संकेत है जो उसके भविष्य में मँडरा रहा है। सब स्त्रियाँ चौंक उठीं। पुटोस ने ही कहा—

'कुछ बात नहीं, मैं जाती हूँ, भाग्य से खिलवाड़ करना अच्छा नहीं होता ? फिर मुझे भूख भी तो नहीं है !

बाश हँस रही थी, उसकी समझ में सब बेवकूफी थी। जरवेस ने रोकते हुए कहा—

'रुको, मैं ठीक करती हूँ।'

और तुरंत ही बाहर जाकर चाचा ब्रू को बुला लाई। संयोग से वह भी उधर ही आ रहा था।

'यहाँ बैठ जाओ, हमारे साथ खा तो सकते हो, क्यों ?'

उसने स्वीकार में सिर हिला दिया। जरवेस ने धीरे से कहा—

'खाएगा क्यों न, आज ही क्यों, कल फिर बुलाओ, मुश्किल से खाने भर को मिलता है। चलो, हमारे लिए भी अच्छा रहेगा, हम इसका खाना देखेंगे। बड़े ढंग से खाता है।'

जरवेस की विनम्रता और आवाज के दर्द पर गूजेट की कोरें गीली हो आईं। सभी स्त्रियाँ मनाने लगीं, 'भगवान करे, सुखी रहें, फलें-फूलें !' एक अकेले लोरिले ही कुढ़ी बैठी थी। उसने झट अपना लबादा जरवेस की ओर से खींच लिया। 'कहीं छू न जाय ?' और अजीब घृणा की दृष्टि से उसके पुराने ब्लाउस की ओर देखने लगी।

जरवेस ने चीजें परोस दीं और जब सब शुरू करने वाले थे कि वरजिनी ने कहा, 'अरे, मि० कूपे कहाँ गये !' किसी ने कहा, 'वह फिर वहीं लौट गए होंगे ?' एक आवाज धीरे से आई, 'उसके लिए सड़क ही ठीक है !' पर लोग रुके नहीं, खाना शुरू कर दिया। थोड़ी देर बाद ही कूपे दो बोतलें बगल में दबाए हुए आ गया। सब लोगों ने तालियाँ बजाकर स्वागत किया, और इस बार बैठने की जगह जरवेस के बगल में ही थी।

'मैं तो भूल ही गया था कि आज तुम्हारी वर्षगाँठ है, मुझे माफ़

करना !' कूपे ने नम्रतापूर्वक जरवेस से क्षमा माँगी। वातावरण ठीक हो गया, सब लोग हँसने-हँसाने लगे। शराब का दौर शुरू हुआ। बच्चों का शोर भी बगल वाले कमरे से सुनाई देने लगा। नाना, पालिन, विक्टर आदि कई बच्चे एक छोटी सी मेज पर बिठा दिये गये थे। नाना ही सबकी अगुवा थी, कुछ देर तक वह काफी शांत रही, और बड़ी जैसा व्यवहार करती रही पर वह कुछ खाऊ थी, इसी में सारी शिष्टता भूल गई। और जब उसने आगस्टाइन को प्लेट से कुछ मटर चुराते देखा तो बिगड़ पड़ी, दो तीन चपतें जमा दीं। आगस्टाइन ने धीरे से कहा—

'देखो, समझे रहो, नहीं मैं तुम्हारी माँ से शिकायत कर दूँगी कि तुम विक्टर के आगे गाल बढ़ा कर चूमने से लिए कह रही थीं !'

धीरे-धीरे सारी चीजें खतम हो गईं। सभी अच्छी थीं। मुर्ग-मुसल्लम ही रह गया था, जरवेस जाकर ले आई। लोरिले पति-पत्नी ने एक दूसरे की ओर विस्मय से देखा। जरवेस ने कहा—

'इसे कौन काटेगा, मुझसे तो नहीं होगा, बहुत बड़ा है !'

पॉसन ने उसे लेकर काटा और सबको बाँटा। फादर ब्रू, कूपे की माँ, सबको मिला। सबने उसे बड़े स्वाद से खाया। दावत में शराब बेहद पी गई थी, खाली बोतलों का ढेर लग गया था, अगर कोई पानी माँगता तो कूपे एक बोतल उठा कर कहता—

'मेरे घर में कोई पानी नहीं पीता, लो।' और गट-गट करके गिलास भर देता। जरवेस ने छः बोतलें छिपाकर रख छोड़ी थीं, वे भी आ गईं। सब लोग बहुत खुश थे, पॉसन ने कुर्सी से उठ कर कहा—

'ईश्वर करे तुम हमेशा ऐसी सुन्दर रहो !'

'तुम अपनी पचास वर्षगाँठें और देखो !' वरजिनी ने जोड़ दिया।

'नहीं, नहीं, मैं ज्यादा जिन्दा नहीं रहना चाहती। जिन्दगी में एक समय ऐसा भी आता है जब जिन्दा रहना भार मालूम होने लगता है।

उस समय बड़ी खुशी से मरा जाता है !' जरवेस बहुत ही भावुक होती बोली।

दरवाजे खुले थे ही, बाहर बहुत से आदमी इकट्ठे होकर इधर ही ताक रहे थे। दुकानों में क्लर्क, नौकर, काम करने वाले, मजदूर काफी थे, सबों के मुँह में पानी आ रहा था। कमरे में बच्चों ने खूब गुलगपाड़ा मचा रक्खा था, तश्तरियों को चम्मचों से बजा कर जोर-जोर गा रहे थे, कभी किसी को ढकेल कर नचाते आदि।

बाद में कुछ फल भी आए। ये भी खूब खाये गये। लोगों को कोई जल्दी थी नहीं, रात अपनी थी। कुछ लोग आराम से पाइप पी रहे थे, कुछ इधर-उधर की बातें कर रहे थे। जरवेस केक काट रही थी। कुछ गाने-बजाने का प्रस्ताव हुआ। बाश 'कामिक' गाने में निपुण था, सब लोगों के साथ गाना शुरू किया। स्त्रियाँ चाकू की बेंटों से प्लेटों के सहारे ताल देने लगीं। कमरा आवाज से गूँज उठा। इसी बीच वरजिनी दो बार बाहर जा चुकी थी। तीसरी बार जब आई तो जरवेस से बोली—

'बहिन, वह अब भी रेस्टूराँ में चुपचाप बैठा है, अखबार आगे रक्खे है मानों पढ़ रहा हो, मेरी समझ में वह कुछ चाल सोच रहा है?'

वरजिनी लैन्टियर की बात कर रही थी। वह कई बार उसी को देखने गई थी की कहीं घर के आस-पास तो नहीं है। जरवेस ने सिर्फ इतना ही पूछा—

'क्या वह नशे में है?'

'नहीं, बिल्कुल नहीं, इसी से तो मुझे भय लगता है। भला वहाँ बैठे-बैठे क्या कर रहा है, मुझे लगता है अब कुछ होगा?'

जरवेस कुछ उदास हो गई और बोली, 'देखा जायगा!' इसके बाद माँ की मदद से प्यालों में काफी उड़ेलने लगी। मेहमान लोग जिद्द कर रहे थे कि वह भी कोई गाना सुनाए। बारी उस' की थी। वह नाहीं करती जाती थी। कुछ दुखी भी थी, चेहरा गिरा हुआ था। लोग कुछ

समझ नहीं पा रहे थे। कुछ कहते, 'मुर्ग-मुसल्लम की वजह से है, किसी को नहीं अच्छा लगता।' उसे गाना ही पड़ा। गाने में वह बिल्कुल डूब गई कि पलकें झुक गईं। जब गाना खतम हुआ तो उसे लगा वह बिल्कुल अकेली है। बाश और वरजिनी ने और भी गाने सुनाए। दरवाजे के सामने गाना सुनने के लिए दूकानदार, सिपाही, मजदूर, कुली-कबाड़ी तमाम इकट्ठा हो गए थे। खासी भीड़ थी। वे लोग भी मस्ती में गाना सुन रहे थे। एकाएक वरजिनी ने जरवेस के कान में कहा—'लैन्टियर यहाँ आ गया, मैंने अभी-अभी इसी भीड़ में देखा है। वह हमीं लोगों को देख रहा था!'

जरवेस की साँस जैसे रुक गई, चेहरे का रंग उतर गया। एक भय की छाया ऊपर उतरने लगी। उसने देखा लैन्टियर सामने ही खड़ा था। आँखों से आँखें मिल गईं। उसकी हड्डी-हड्डी काँप गई, सारी देह जैसे सुन्न थी, हाथ-पाँव हिल न पा रहे थे। इस समय गाना रुक चुका था। और लोग शहर में हुई एक दुर्घटना के विषय में बहस कर रहे थे। एक स्त्री फाँसी लगाकर मर गई थी। कूपे अपने गिलास के साथ ही साथ बातें भी सुनता जाता था। वरजिनी और जरवेस बाहर लैन्टियर की परछाँई देख रही थीं। वह दरवाजे से कुछ हट कर खड़ा हो गया था। एकाएक मैं० बाश की भी निगाह पड़ गई। तीनों ने डरी-डरी दृष्टियों से एक दूसरे को देखा। वरजिनी कह उठी—

'हे भगवान, कहीं कूपे ने जो देखा तो समझ लो एक कतल हुआ!' वे तीनों बहुत ही ध्यानपूर्वक बाहर की ओर देख रही थीं। उनको ऐसा देखकर कूपे ने ही कहा—'क्यों क्या बात है, क्या देख रही हो? और बिना उत्तर की प्रतीक्षा के झुककर देखने लगा—

'अच्छा, यहाँ तक बात है, धूर्त कहीं का, बहुत हो गया, अब नहीं.........' कूपे दाँत पीसने लगा और उठने को था कि जरवेस ने उसका हाथ पकड़ लिया।

'यह चाकू रख दो, बाहर न जाओ ! मैं प्रार्थना करती हूँ, बाहर न जाओ !!' वरजिनी ने वह चाकू छीन कर रख दिया। पर कूपे रुक न सका, चला गया। जरवेस पछताती रह गई। सब लोग इस समय मैं० लिरेट के गाने में लीन थे, किसी को कुछ ज्ञात न हो सका। पर वरजिनी, जरवेस और बाश तीनों चुप थीं। उनके ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे ही अटकी थी। उन्हें ऐसा लगता था अब चीख उठी, अब एक आदमी गिरा, अब मरा.........

बाहर जाते ही कूपे को ठंडी हवा का झोंका ऐसा लगा कि शराब का नशा उभर आया और जैसे ही उसने लैन्टियर का गला पकड़ने को हाथ बढ़ाया, स्वयं लड़खड़ा गया और नाली में लुढ़क पड़ा। लैन्टियर थोड़ा घूम गया पर अपने हाथ उसी तरह जेब में डाले रहा। कूपे फिर लड़-खड़ा कर उठा और इस बार दोनों बुरी तरह पिल पड़े। जरवेस डर गई, उसने अपनी आँखें हथेलियों से ढक लीं, पर जब उसने धीरे-धीरे आँख खोली तो वह विश्वास न कर सकी। झगड़ा खतम हो चुका था और दोनों बहुत घुल-मिल कर बातें कर रहे थे। जरवेस ने विस्मय के साथ बाश और वरजिनी की ओर देखा। उसकी आँखों में प्रश्न था, 'इसका क्या मतलब है ?' दोनों आदमी एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए सड़क पर टहल रहे थे और धीरे-धीरे जाने क्या बातें कर रहे थे। एकाएक कूपे ने लैन्टियर को दूकान की ओर खींचा। 'मैं कहता हूँ तुमको चलाना पड़ेगा। चलो साथ ही एक-एक गिलास पियें। आदमी दुनिया में कहीं हो आदमी ही रहेगा। हम दोनों इस बात को अच्छी तरह जानते हैं।'

मैं० लिरेट का गीत खतम हो चुका था। वह गाने के बाद जैसे बिल्कुल शिथिल हो गई थी। और एक गिलास मुँह से लगाये घूँट-घूँट पी रही थी। कूपे ने लैन्टियर को लाकर अपनी मेज पर बिठा दिया था, और केक को शराब में भिगो-भिगो कर खा रहा था। लैन्टियर को वरजिनी और बाश के अलावा जानने वाला और कोई न था। लोरिले उसे संदेह

की निगाह से ताक रहा था पर किसी को आभास भी न था, तभी कूपे ने कहा—

'हमारे मित्र हैं !' फिर अपनी स्त्री की तरफ देखकर, 'जरा उठ कर देखो शायद काफी हो ?'

जरवेस ने पहले कूपे को, फिर लैन्टियर को देखा। जब कूपे लैन्टियर को लेकर दूकान में घुसा था तो जरवेस ने दोनों हाथों के बीच सिर ऐसे थाम लिया था जैसे आँधी-अंधड़ के बीच फँसा हुआ आदमी परख रहा हो कि अब वज्रपात होने ही वाला है पर जब उसने देखा कि दोनों आदमी बड़ी शान्तिपूर्वक बैठ गए तो उसे लगा कि कोई विशेष बात नहीं है, ऐसा होना स्वाभाविक है और लगा कि जैसे वह उसे स्वीकार कर रही है।

'आखिर जब दूसरे को परवाह नहीं है तो मैं ही क्या करूँ ? ऐसा लगता है कि दोनों में बड़ा मेल है, अच्छा है ! मेरा क्या जाता है जो विरोध करूँ ? अब मैं भी किसी तरह की चख-चख नहीं चाहती !..........'

वह उठी। एक प्याले में काफी भरकर ले आई और लैन्टियर की ओर बढ़ा दिया। लैन्टियर ने उसकी ओर देखा तो नहीं पर धीरे से धन्यवाद दे दिया।

'अब मैं गाऊँगा !' एकाएक कूपे ने कहा और एक मामूली-सा गीत गाने लगा। बाहर के लोग भी उसके साथ ही गुनगुनाने लगे। धीरे-धीरे सबों पर नशे ने जोर मारा और सबके सब आपस में इस प्रकार हँसी-मजाक करने लगे मानों लड़ रहे हों, और एक बार तो सचमुच पुलिस ही आ पहुँची। पर पॉसन को देखकर चुपचाप लौट गई। सब लोग बड़ी रात तक नाचते-गाते रहे। लोग एक-एक करके जा रहे थे। जब सब कुछ खतम हुआ तो पता नहीं क्या समय रहा होगा। जरवेस ने इतना ही ध्यान दिया कि सबसे अंत में लैन्टियर ही गया था। उस समय वह दरवाजे पर खड़ी थी। उसके निकलते समय उसकी साँस

जरवेस को छू गई थी पर जरवेस यह निश्चय न कर पाई थी कि साँस है कि हवा। रात बहुत हो गई थी, इसलिए मै० लिरेट जा न सकी और वहीं सो गई।

८. एक पूर्व-परिचित

एक दिन कूपे दोपहर को खाना खाने न आया। दिन भर बीत गया और रात को जब जरवेस खिड़कियाँ दरवाजे बन्द करने जा रही थी तो लैन्टियर के साथ आया। उस दिन उन्होंने माँटमात्रे में ही भोजन किया था।

'बिगड़ो मत! हम लोग शराब नहीं पी रहे थे!' कूपे ने जरवेस की ओर जरा मुसकुराते हुए देखकर कहा, 'देखो न हम लोग कैसी अच्छी तरह बातें कर रहे हैं, चल फिर रहे हैं।' कूपे को लैन्टियर वहीं एसाम्वायर में मिल गया था।

नाना और अम्मा सो गई थी, इसलिए जरवेस ही गई और कुछ ब्रांडी और खाने के लिए ले आई। लैन्टियर बैठा नहीं। वह जरवेस से बात भी न करना चाहता था पर जब उसने गिलास पकड़ाया तो बोल उठा—

'थोड़ी और, सिर्फ थोड़ी, इसे भर दो!'

कूपे ने जब दोनों को देखा तो एक मिनट ठहरा, पर फिर बोला—

'क्यों क्या हुआ, हम लोग नासमझ तो हैं नहीं और न हम बच्चे ही हैं। जो हो गया सो हो गया। दस साल हो गए। इतने दिन बहुत होते हैं, दुश्मनी ऐसी नहीं होनी चाहिए। और मैं तो कुछ नहीं समझता। मैं जानता हूँ कि तुम दोनों ईमानदार हो, मुझे इसीलिए तुम पर विश्वास है!'

'क्यों न हो ?' जरवेस एक दम से बोल उठी—पर उसने स्वयं ही नहीं समझा कि क्या कह गई।

'मैं अब उसे बहिन मानता हूँ बिल्कुल बहिन !' लैन्टियर ने ऊपर से जोड़ दिया।

'लाओ हाथ मिलाएँ, आज से हम तुम मित्र हैं। जानते हो एक सच्चा हृदय सोने से लाख गुना बेशकीमत होता है। मैं मित्रता को सबसे ऊपर मानता हूँ !'

कूपे की मनोदशा उस समय बहुत अच्छी थी। तीनों ने मिलकर ब्राँडी पी। जरवेस ने उसी दिन लैन्टियर को देखा। दावत के दिन उसकी हिम्मत न पड़ी थी। वह अब अधिक स्वस्थ हो गया था, हाँथ-पाव मजबूत थे, चेहरे पर अभी काफी सुन्दरता थी हालाँकि शराब के कारण कुछ विकृति जरूर आ गई थी। कपड़े आदि बड़े ढंग से पहने था। उम्र तो पैंतीस वर्ष थी। पर देखने में कम दिखता था।

'अच्छा मैं चला !' कहकर लैन्टियर उठ खड़ा हुआ। कूपे ने बहुत घनिष्टता से कहा—

'भाई इधर से जाते समय हो लिया करो !' जरवेस एटीन को लिये हुए आई, वह एक क्षण पहले उठकर भीतर गई थी। लड़का उँघाया तो था ही, आँखें मींच रहा था। उसके मुँह पर एक बाल-सुलभ हास था। जब उसने लैन्टियर को देखा तो आँखें फिरा लीं, और कूपे की ओर देखने लगा।

'तुम इन्हें जानते हो ? जरवेस ने झुककर एटीन से पूछा।

एटीन देखता तो रहा पर बोला कुछ नहीं। जरवेस ने वही प्रश्न दुबारा किया तो उसने केवल सिर हिला दिया अर्थात् उसे याद है। लैन्टियर चुपचाप गम्भीर देखता रहा और जब एटीन उसकी ओर बढ़ा तो लैन्टियर ने उसे खींच कर चूम लिया, उसकी पीठ बड़े प्यार से थपथपा दी।

एटीन उसके मुँह को न देख सका, उसके आँसू निकल आए। कूपे न जाने क्यों इस पर बिगड़ पड़ा। एटीन भाग गया।

'ऐसे डाँटना नहीं चाहिए।' जरवेस ने कूपे की ओर देखकर कहा पर कूपे ने जैसे सुना नहीं।

'अक्सर ठीक रहता है, कहा भी खूब करता है, मैंने काफी ठीक कर लिया। कोई बात नहीं, कुछ दिन में घुल-मिल जायगा। पर यह जरूरी है ही कि वह अभी से सब कुछ जानना शुरू कर दे। एक-दिन आयेगा जब वह समझ जायगा कि पुरानी बातें भूल ही जानी चाहिए। मेरा मतलब एटीन को टोकने से नहीं था, न न, ईश्वर करे जिस दिन मैं एक बेटे को अपने बाप से मिलने से रोकूँ मैं मर जाऊँ?'

तीनों फिर बैठ गए। बोतल में जो थोड़ी बहुत शराब थी उसे समाप्त कर दिया। लैन्टियर ने घर की खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द कराये फिर बिदा माँग कर चला गया।

अब लैन्टियर वहाँ अक्सर दिखाई देता। पर भीतर तभी आता जब कूपे होता। अक्सर निकलते-बैठते कूपे को पूछ भी लेता। कभी आकर खिड़की के पास ही बैठ जाता, रहता तो वह अच्छी ही तरह था। दाढ़ी ठीक बनी होती, रेशमी कपड़े पहने ठीक से टाई बाँधे लगता कोई बड़ा आदमी है। बातें भी ऐसी करता मानों दुनिया का बड़ा अनुभव है। कूपे को भी धीरे-धीरे लैन्टियर के बारे में तमाम बातें मालूम होने लगीं। आठ साल तक वह एक हैट फैक्टरी का मैनेजर रहा था पर साझीदार से अन-बन हो जाने से काम छूट गया था। साझीदार बड़ा धूर्त था। ऐसी ही कई बातें थीं। अपनी इसी स्थिति के कारण उसका महत्व विशेष कम न हुआ था। वह अक्सर कहता—

'बातचीत चल रही है। देखो तय हो गया तो फिर कोई काम शुरू करूँगा। सारा इन्तजाम मेरे ही हाथ में रहेगा। कुछ नए सिरे से काम शुरू होने वाला है। हाँ तब तक जरूर जेब में हाथ डाले इधर-उधर मुझे

तुम्हारे साथ मटरमश्ती करनी है !' पर सच्चाई तो यह थी कि लैन्टियर हमेशा दूसरों के ही बारे में बातें करता था, अपने बारे में शायद बहुत कम। वह अक्सर झूठ भी बोल जाता था। अपना घर उसने कभी नहीं बताया। 'मैं कभी घर पर रहता ही नहीं, इसलिए वहाँ जाना ठीक नहीं है ! क्या होगा बेकार ?'

नवम्बर आ गया था। लैन्टियर अक्सर आता रहता। कभी-कभी जरवेस के लिये फूल आदि भी ले आता। अब वह सारे घर के लोगों में घुल-मिल गया था, क्लीमेंस और पुटोस तक से भी बहुत बातें होती थीं। ये दोनों उसे काफी मानती थीं। वह कभी-कभी मै० बाश के भी घर चला जाता। वह भी उसकी बातों से खुश हो जाती। उसकी खूब तारीफ करती। लोरिले लोग ही काफी नाराज थे और जब उनको उसका परिचय मिल गया तो कहना शुरू किया—

'जरवेस को तो कम से कम ऐसा कभी न करना चाहिये। उस आदमी का मुँह देखना, उसे घर में बुलाना.........हाय भगवान्.........'

वह एक दिन उनके भी घर पहुँच गया और एक 'चेन' का आर्डर किसी जान-पहिचान की स्त्री के लिये दे आया। वहाँ भी उसने कुछ ऐसी बातें की कि उन्होंने भी उसकी खूब आवभगत की। बड़ी देर तक बातें करते रहे। थोड़े ही दिनों बाद लोरिले के ही मुँह से सुना गया—

'लैन्टियर इतनी अच्छी रुचि वाला है, उसे तो मरगुल्ली में कोई खूबसूरती दिखनी ही नहीं चाहिए थी ?'

धीरे-धीरे सभी लोगों के बीच वह प्रिय हो गया। किसी को उससे मिलने में हिचक न होती थी। अकेला गूजेट ही ऐसा था। जब गूजेट वहाँ होता और संयोग से वह आ पहुँचता तो तुरन्त ही लौट जाता। वह गूजेट से बातें न करता था। जरवेस का मन जरूर परेशान था। उसकी पिछली स्मृतियाँ उभार कर रही थीं, पिछला प्यार उमड़ता आ रहा था। वह उससे तो डरती थी हीं, अपने से भी शंकित थी। इन दिनों उसके

मस्तिष्क में लैन्टियर भर गया था। लेकिन जैसे-जैसे दिन बीतते जाते वह शान्त होती जाती थी। उसे सन्तोष था कि लैन्टियर कभी अकेले में नहीं आता, शायद ही कभी उसकी ओर देखता हो। बातें भी बहुत ही कम करता है और छूने के नाम पर तो उँगली की नोक भी उस पर नहीं रक्खी।

वरजिनी पूछती कुछ न, पर मन ही मन सब समझ रही थी। अक्सर छेड़ने के लिए कह देती, 'तुम्हें डर किस बात का है? लैन्टियर से ज्यादा शरीफ आदमी यहाँ है ही कौन?'

और एक दिन चाहे शरारत कहा जाय चाहे नीचता, उसने कुछ ऐसा किया कि वे दोनों एक जगह मिल गए—धीरे-धीरे बातें बहुत ही मार्मिक स्थल पर आ पहुँचीं। वरजिनी ने ही कोई प्रश्न किया। लैन्टियर ने उत्तर दिया—

'मेरा हृदय अब मर चुका है और अगर अब मैं जिन्दा हूँ तो सिर्फ अपने लड़के एटीन के लिए। मुझे क्लाड के लिए उतनी ममता नहीं है, चाहे इसलिए हो कि वह दूर है!'

वह रोज एटीन को पास बुलाकर स्नेह से दुलारता और फिर क्लीमेंस आदि के साथ मनोरंजन करने लगता। लैन्टियर के आते ही जरवेस के मन में प्लासन्स और बाँकोवर की स्मृतियाँ ताजी हो गई थीं पर अब फिर मुरझाने लगी थीं। उसे लगता जैसे जिन्दगी बेकार हो गई है। लैन्टियर से कोई पुरानी जान-पहिचान नहीं है, अभी नई हुई है और अगर कभी-कभी वे बातें फिर जोर पकड़तीं तो किसी तरह भूलने की कोशिश करती। 'अब क्या अब सब खतम हो चुका है और अगर लैन्टियर कभी कुछ हरकत करेगा, तो मैं पति से अवश्य शिकायत कर दूँगी!'

उसने रहे-सहे प्रभाव को मिटाने के लिए गूजेट के विषय में सोचना शुरू कर दिया। एक दिन सबेरे क्लीमेंस ने बताया, 'मैंने रात को लैन्टियर को लारेट की ओर एक स्त्री के साथ देखा है। वह स्त्री कुछ अच्छी न

थी, मैं उससे काफी अच्छी हूँ, मैं उनके पीछे-पीछे भी गई थी। वे दोनों एक घर के सामने रुक गये थे, फिर स्त्री ने ऊपर जाकर खिड़की से संकेत किया था और वह तुरन्त ही भीतर चला गया था !.........'

जरवेस इस समय सफेद कपड़ों पर लोहा कर रही थी। वह कुछ मुसकुराई और बोली—

'सही हो सकता है। लैन्टियर की आदत है वह औरतों के पीछे लगा रहता है' और रात को जब लैन्टियर आया तो आते ही क्लीमेंस ने उसे आड़े हाथों लिया। काफी बनाने की कोशिश की पर लैन्टियर ने ऐसा प्रकट किया मानों यह अच्छा ही हुआ है जो उसने इस तरह देख लिया। वह बोला, 'वह मेरी एक बहुत पुरानी मित्र है। बहुत दिनों से मिला न था, एकाएक मिल गई थी।' इसके बाद उसने अपनी जेब से एक रूमाल निकाला और क्लीमेंस की ओर फेंक कर कहा—

'देखो, इसे सूँघो, उसी ने इसमें यह सेंट डाल दी है.........'

तभी एकाएक कमरे में एटीन आ गया। बच्चे को देखते ही लैन्टियर गम्भीर हो गया।

'मैं मजाक कर रहा था, दरअसल मेरा हृदय मर चुका है।'

जरवेस ने जैसे इसकी स्वीकृति में सिर्फ सिर हिला दिया, पर कुछ बोली नहीं।

बसन्त आ गया। इन दिनों कभी-कभी लैन्टियर इच्छा प्रकट करता, 'यदि यहीं कहीं पास-पड़ोस में मैं भी आ जाऊँ तो अच्छा हो। मुझे सिर्फ एक अच्छा-सा साफ कमरा चाहिये !' बाश और जरवेस ने कोशिश भी की पर सफल न हुई। लैन्टियर अपनी रुचि में काफी अलबेला भी था। वह अक्सर यह भी कहता, 'अगर कोई आप जैसे ही लोग मुझे मिल जायँ तो मैं उसके साथ भी रहने को तैयार हूँ ! आप लोग काफी अच्छी तरह रहते हैं।'

और एक दिन रात को जब उसने यही बात दोहराई तो कूपे के मुँह

से निकल गया, 'अगर तुमको यह जगह पसंद है तो यहीं क्यों नहीं रहते ? हम लोग थोड़ी जगह तुम्हारे लिए भी निकाल लेंगे। इसमें क्या है, कपड़ों वाले कमरे को ठीक कर लेंगे, एटीन के सोने का प्रबन्ध कोने में कर देंगे !.........'

वह बीच ही में बोल उठा—

'नहीं, रहने दीजिए, यह तो मैं जानता हूँ कि आप लोग बहुत ही भले आदमी हैं पर इस नाते में आपको तकलीफ नहीं देना चाहता। उस कमरे में जाने के लिए यहीं से बार-बार आना-जाना होगा, बड़ी गड़बड़ी होगी।'

'वह.........क्या बात है अरे कुछ सोचा ही जायेगा ? दो खिड़कियाँ हैं, एक को तोड़कर दरवाजा बनवा लिया जायेगा। तब तो तुम्हारा दरवाजा बिल्कुल अलग हो जायेगा और हमारा भी नुकसान न होगा। हमारा तुम्हारा भाग अलग हो जायेगा।'

सब लोग काफी देर चुप रहे, कोई कुछ न बोला। लैन्टियर ही ने कहा, 'हाँ, अगर ऐसा हो सके.........तो ठीक ही है.........पर तुमको जगह की कमी हो जायेगी !'

बोलते समय उसने जरवेस की ओर नहीं देखा पर वह चाहता था कि जरवेस इस पर कुछ कहे। जरवेस को यह बात पसंद न आई, कारण यह न था कि वह लैन्टियर के वहाँ रहने से घबराती थी पर वह सोचती थी कि जो गन्दे कपड़े आते हैं कहाँ रक्खे जायँगे। जगह की कमी तो काफी हो जाएगी। पर कूपे जैसे इस स्कीम पर मुग्ध था।

'आखिरकार किराया भी तो हमको बहुत देना पड़ता है। इस तरह २० फ्रैंक हर महीने मिल जाया करेंगे। इतना किराया तुम्हारे लिए भी बहुत न होगा और हमको भी कुछ सुविधा हो जायेगी !' फिर जरवेस की ओर देखकर, 'क्यों अगर तुम दो बड़े-बड़े बक्से ले लो और उन्हीं में कपड़े रक्खा करो तो ?'

जरवेस अब भी संकोच कर रही थी ! उसने एक प्रश्नसूचक दृष्टि अम्माँ की ओर डाली । लैन्टियर ने इन दिनों अम्माँ को खुश कर लिया था । जब आता था तो खाँसी के लिए कुछ न कुछ दवा और कुछ खाने के लिए भी ले आता था ।

'हाँ, अगर हम ठीक कर लें तो.........' जरवेस ने अन्त में कुछ सकुचाते हुए कहा । बीच में ही लैन्टियर बोल उठा—

'आप तो बड़ी भली हैं, हाँ मैं बेकार ही बीच में घुसा आ रहा हूँ !'

कूपे एकदम बिगड़ उठा—

'जो कहना है कहतीं क्यों नहीं, यह क्या मूर्खों जैसा अँ आँ करना । साफ-साफ कहो, क्या चाहती हो ?' और एटीन को पुकारने लगा । एटीन सो रहा था, आवाज सुनकर जाग उठा—

'देखो इनसे कहो 'मैं चाहता हूँ ।' बस कहो !'

उसने अधजगे में मशीन की तरह कह दिया, 'मैं चाहता हूँ ।' सब लोग हँस पड़े । पर लैन्टियर गम्भीर हो गया और कूपे का हाथ दबाते हुए बोला—

'मुझे तुम्हारा प्रस्ताव मंजूर है, आखिर मित्र ही ठहरे और मैं अपनी और अपने लड़के की ओर से तुम्हें धन्यवाद देता हूँ !'

जून के शुरू में लैन्टियर इस घर में आ गया । कूपे ने जब कहा कि चलो सामान उठवा लाऊँ तो उसने टाल-मटोल कर दी । 'बक्स बहुत बड़ा है, गाड़ी में लदा लाऊँगा ! क्या जरूरत है ?' पर असल में वह यह न बताना चाहता था कि वह इन दिनों रह कहाँ रहा था ? वह लगभग तीन बजे आया, कूपे तब घर पर न था । गाड़ी पर उसी पुराने बक्से को देख कर जरवेस का मन कुछ भारी हो गया । यह बक्स वह प्लासंस से लाई थी, अब काफी टूट-फूट गया था और एक रस्सी से बँधा था । जब वह उठा कर अन्दर लाया तो वह सोच रही थी । यही बक्स लेकर वह एडील के साथ भागा था !

वह पुरानी बातों के ढूँहों में खोई इसी तरह खड़ी रही, कुछ कह न सकी। बाश ने बढ़कर लैन्टियर को सहायता दी। बक्स उठवाया और कमरे में रखवा दिया। एकाएक जरवेस बुदबुदा उठी, शायद उसे ही न पता चला कि वह क्या कह गई।

'आइए, कुछ शराब ही पी जाय!'

लैन्टियर अभी अपने काम में लगा था। उसने उधर देखा भी नहीं। जरवेस ने बाश से कहा, 'तुम आती हो?' और फिर बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किये शराब और गिलास लेने चली गई। वह गिलास भर ही रही थी कि पॉसन निकलता हुआ दीख पड़ा। जरवेस ने उसको आँख के एक कोर से देखा और एक परिचित संकेत सा किया। पॉसन इस संकेत का अर्थ खूब समझता था। वह समझ गया कि जरवेस पीने के लिए बुला रही है। ड्यूटी पर जा रहा था, इसलिए जरा घूमकर पीछे से आया कि कोई देख न ले। जरवेस ने तीन गिलास भर कर बढ़ा दिये। उसे अपने लिए चिन्ता न थी। इस समय वह लैन्टियर के उसी बक्स की ओर देख रही थी। उसका जी चाह रहा था कि देखें उसमें क्या-क्या है; तब तो एक-दो कमीजें, कुछ मोजे और एक पुराना कोट उसमें था, अब है कि नहीं। वे पुरानी स्मृति की चीजें देखने को मिलेंगी कि नहीं?'

पर लैन्टियर ने उस समय बक्स न खोला और मेज के पास आकर एक गिलास लेकर पीने लगा। जरवेस वहीं खड़ी थी। उसके मुँह से धीरे से निकला, 'धन्यवाद'। बाश और पॉसन ने भी अपने-अपने गिलास ले लिए। यह शराब का क्रम काफी देर तक चला, जरवेस ने नहीं पी। इसके बाद लैन्टियर ने बक्स खोला। तमाम अंगड़-खंगड़ भरा था। कुछ किताबें, पुराने सूती और रेशमी कपड़े ऊपर ही थे, लैन्टियर ने उनको एक तरफ करके एक पुरानी कमीज तथा फटे-पुराने दो पतलून निकाले। जरवेस को उनमें तम्बाकू, चमड़े की सी गंध आई। वह देख रही थी न तो वह पुराना हैट है न वे कपड़े हैं बल्कि किसी स्त्री की दो-एक भेंट की

चीजें जरूर हैं। उसकी सारी-सारी उत्सुकता मर गई और एक गहरी उदासी छा गई। वह एक-एक करके सभी चीजों को देखती रही। ये चीजें उस समय की थीं जब लैन्टियर के जीवन पर उसका नहीं, किसी दूसरी स्त्री का अधिकार था।

पहले ही दिन से लैन्टियर घर का सा आदमी बन गया। हालाँकि उसका कमरा बिल्कुल अलग था, दरवाजा भी अलग था, ताला-कुँजी सभी था, पर वह हमेशा दूकान होकर ही जाता। गन्दे कपड़ों के ढेर देखकर जरवेस खीभती। कूपे ने जो दो बक्से बनाने के लिए कहे थे नहीं बनाये थे। रक्खे किस चीज में जाते, इसलिए वह कुछ कपड़े पलंग के नीचे, कुछ मेज के नीचे, कुछ इधर-उधर करके काम चला लेती थी। एटीन का बिस्तर भी उसे दूकान में ही सब सामान हटाकर लगाना पड़ता था, वह भी उसे काफी खलता था। एक दिन गूजेट ने कहा—

'एटीन को वहीं फिर क्यों नहीं भेज देतीं, हमारे मालिक को कुछ आदमियों की जरूरत भी है!'

जरवेस का मन हुआ। एटीन स्वयं भी चाहता था कि वह कुछ कमाये और अपनी निजी जिन्दगी बिताये पर जरवेस की हिम्मत न होती थी कि लैन्टियर से इस विषय में पूछे! लैन्टियर हमेशा यही कहता था कि मैं अपने लड़के का मुँह रोज देखना चाहता हूँ, अब यही तो मेरा जिन्दगी का आधार है। जरवेस ने सोचा कि अभी लैन्टियर को आये कुछ ही दिन हुए हैं, शायद ठीक न हो! पर एक-दो बार गूजेट के और कहने पर उसने हिम्मत करके बात चलाई, लैन्टियर ने भी प्रसन्नता प्रकट की।

'देश में युवकों की दशा चाहे जैसी हो पर पेरिस में बड़ी खराब है।' और जब एटीन चलने लगा उसने पिता की हैसियत से तमाम बातें लेक्चर के रूप में बताईं। एटीन चला गया, घर की कुछ बातें बदल गईं। अब वह नई तरह से चलने लगा।

अब कपड़े इधर-उधर पड़े रहते, लैन्टियर दूकान होकर आता-जाता। जरवेस इस सबकी आदी हो गई, वह अभी भी अपने व्यापार के बारे में वैसे ही बड़ी-बड़ी बातें करता। रोज सज-बज कर बाहर निकल जाता और जब लौटकर आता तो कहता—

'इतनी बातें थीं कि बहस करते-करते दिमाग खराब हो गया, दर-असल व्यवहार चलाना कोई छोटी-मोटी बात नहीं है।'

सबेरे भी देर से उठता। अगर दिन ठीक होता तो थोड़ा टहल आता और यदि पानी के आसार होते तो बैठे अखबार पढ़ा करता। उसे वहाँ बैठना अच्छा लगता था! बात यह थी कि लैन्टियर हमेशा यही चाहता था कि उसके पास कुछ औरतें जरूर रहें। वह वहीं घर भी लेता था। पहले वह खाना एक रेस्ट्राँ में तो खाता था पर हफ्ते में तीन-चार बार कूपे के ही यहाँ खाता। एक दिन उसने कहा—

'हर्ज क्या है, अगर मैं यहीं खा लिया करूँ, हर शनिवार को पन्द्रह फ्रैंक दे दिया करूँगा!'

उस दिन से उसका भी खाना वहीं बनने लगा। अब बिल्कुल परिवार का एक व्यक्ति हो गया। सबेरे उठकर दूकान की छोटी-मोटी चीजें भी देखने लगा। गाहक लोग आते, कपड़े लेना-देना भी कुछ देखने लगा। उसने जरवेस से कहकर पुराने शराब बिक्रेता को छुड़ाकर दूसरा लगाया, रोटी भी दूसरी दूकान से आने लगी। घर के तौर-तरीकों में काफी अदल-बदल हो गया। एक महीने बाद लैन्टियर घर का पूरा मालिक बन गया। अब वही सब चीजें मँगाता, ऑमलेट नाश्ता जो कुछ भी बनता, सब उसकी देख-रेख में होता। एक दिन कहा—

'लोरिले लोग जो पाँच फ्रैंक देते थे वह कई महीनों का पड़ा है, कहो तो अदालत में नालिश कर दी जाय। देने को दस चाहिए, वह इन्हीं में गड़बड़ी करते हैं। खैर मैं खुद जाकर देखता हूँ!'

और वह तुरंत चला गया। जब लौटा तो खुश था। उनसे दसों फ्रैंक ले आया था। नाना के विषय में भी उसने हस्तक्षेप किया।

'यह बात बड़ी खराब है कि जब कूपे उसे डाँटता है तो तुम उसका पक्ष लेती हो और जब तुम कुछ कहती हो तो कूपे। इससे लड़की की आदतें खराब हो जाएँगी।' नाना को क्या, उसे तो इससे फायदा ही था। वह जो कुछ चाहती बड़ी खुशी से करती थी। वह बड़ी शरीर भी हो गई थी। दिन भर पास पड़े हुए वैगन के तख्ते पर झूला करती। शाम को तमाम लड़कों के साथ आँख-मिचौनी खेलती। थोड़ी देर बाद उसी में कुछ झगड़ा हो जाता तो सबको पकड़-पकड़ पीटती। बड़ा शोर-गुल मचता। नाना पर इन दिनों लैन्टियर की ही दाब थी। उस पर और किसी की डाट का असर ही न होता। दस साल की नाना लैन्टियर को एक अजीब ढंग से देखती, लगता कि कोई युवती हो। लैन्टियर ने उसे पढ़ना और नाच-गाना सिखाना भी शुरू कर दिया।

एक साल बीत गया। पास-पड़ोस के लोग समझने लगे कि लैन्टियर काफी कमाता है, नहीं तो कूपे लोग ऐसे कैसे रहते? जरवेस अब भी काफी पैसा कमाती थी। पर उसे दो निठल्लों का बोझ सँभालना पड़ता, दुकान से उतनी आमदनी भी न होती और लैन्टियर ने सच पूछो तो कभी न खाने का और किराये का एक भी पाई दी थी। वह कह देता 'क्या हर्ज है उधार चलने दो, जब काफी हो जायगा तो इकट्ठा दे दिया जाएगा!'

इसके बाद जरवेस ने कुछ कहा भी नहीं। वह रोज रोटियाँ, गोश्त, अंडे उधार मँगा लेती थी, उधारखाता बढ़ता जाता था। रोज तीन-चार फ्रैंक हो जाता था। उसने कभी एक भी पाई अदा न की थी। अभी तक फर्नीचर वाले के सारे पैसे पड़े थे, मजदूरों की मजदूरी भी न दी गई थी। सब दूकानदार भुनभुनाने लगे थे, व्यवहार भी कुछ रूखा हो गया था।

गर्मी आते-आते क्लीमेंस ने दूकान छोड़ दी। एक तो काम ही कम

था, दूसरे पैसा भी ठीक समय से न मिलता था। लैन्टियर और कूपे पर जैसे कोई असर न पड़ा। वे अब भी वैसे ही मस्त और खुशहाल थे। इधर मुहल्ले में तरह-तरह की बातें भी उठने लगी थीं। 'जरवेस और लैन्टियर के सम्बन्ध क्या हो सकते हैं?' लोरिले लोग कहते।

'जरवेस क्यों न चाहेगी, वह तो खुश होगी पर लैन्टियर ही न चाहेगा, रह ही क्या गया है मरगुल्ली में, बूढ़ी हो चली है, शक्ल देखो कैसी निकल आई है!' बाश लोग कुछ और ही समझते। पर यह सभी कहते, 'यह सब ठीक नहीं है पर किया क्या जाय, इसके अलावा और कुछ हो भी तो नहीं सकता!' इसके बाद लोग देख लेते पर कुछ कहते नहीं थे।

मैं० लिरेट और वरजिनी अक्सर आतीं और खूब घुल-मिल कर लैन्टियर से सब बातें करतीं। इतना ही नहीं वे क्लीमेंस और लैन्टियर की भी तमाम बातें बतातीं। जरवेस सुनकर मुँह बिदका लेती।

'रोज मिलते हैं तो क्या, अच्छा है मुझसे इससे क्या करना है?'

इसके बाद एक सहमी हुई दृष्टि वरजिनी पर डालती। वरजिनी भी धीरे से कहती 'बहिन अगर मानों तो तुम्हें ऐसे आदमी से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए!'

इधर लैन्टियर के व्यवहार में भी परिवर्तन होने लगा था। जरवेस से पहले वह दूर रहने की कोशिश करता था पर अब अक्सर हँस-हँस कर बातें करता। पास ही बैठकर मुसकुराती हुई आँखों से अजीब ढंग से देखता, कभी-कभी अपना मुँह उसके इतने पास ले आता कि साँस उसके गालों को छूने लगती। एक दिन शाम को जब दोनों अकेले ही थे एकाएक लैन्टियर ने उसके हाथ पकड़ लिए। संयोग से तभी दरवाजे पर गूजेट दिख गया, जरवेस ने तुरंत ही जोर लगाकर अपने को छुड़ाया और अलग खड़ी हो गई। तीनों ने एक-दो बातें कीं मानों कुछ हुआ ही नहीं। गूजेट बड़ा खिन्न हो उठा, चेहरा एकाएक गंभीर हो आया। उसे लगा

कि वह दोनों के बीच बाधक रहा है, जरवेस ने लेन्टियर को इसलिए नहीं धक्का दिया था कि वह स्वयं नहीं चाहती थी बल्कि इसलिए कि कोई उसे देख रहा है।

जरवेस भी बहुत ही उदास और गिरी-गिरी थी। उसका मन अशांत था। उससे कुछ भी काम न होता था। जी बार-बार कोसता और वह चाहती कि दौड़कर जाए और गूजेट के पाँव पकड़ कर उससे क्षमा माँगे। सारी बात साफ-साफ बता दे। पर वह गूजेट के पास वहाँ कारखाने न जाना चाहती थी। उसे गूजेट के दूसरे साथियों का बड़ा डर था, वे लोग न जाने किस तरह देखते थे मानों व्यंग कर रहे हों। पर उसने जाना निश्चित ही किया और एक डोलची लटका कर चल दी, जैसे किसी गाहक के यहाँ जा रही हो। गूजेट उसे बाहर ही मिल गया। ऐसा लग रहा था मानों उसी की प्रतीक्षा में हो।

'अच्छा तुम·········घर जा रही हो, क्यों?' न जाने कैसे ढंग से गूजेट ने कहा। हालाँकि उस समय वह कुछ आवेश में था। उसे पता न था कि वह क्या कह रहा है क्या नहीं? दोनों साथ हो लिए। दोनों कारखाने न जाना चाहते। इसलिए आगे चलते ही गये। चलते-चलते एक जगह आए जहाँ बिल्कुल खुला था, शायद शहर का आखीर था।

'कितना खुला है मानों हम देहात में हों!' जरवेस ने धीरे से कहा। पास ही एक सूखा पेड़ था। दोनों उसकी जड़ पर बैठ गये। जरवेस ने डोलची पाँव के पास ही रख दी। सामने ही ऊँचाई पर मांटमात्रे था। पीले भूरे घंटों की कतारें, पेड़ों के झुरमुट कुछ दिखती कुछ छिपती-सी खड़ी थीं। जब पीछे सिर घुमाया तो खुला नीला आसमान दिख पाड़, एक भी बादल न था। सूरज की किरणों से उनकी आँखें चुँधिया गईं। उन्होंने क्षितिज की ओर नीचे से देखना शुरू किया। पेरिस के कारखानों की बड़ी चिमनियाँ अपना सिर उठाए धुएँ के गुच्छे के गुच्छे निकाल रही थीं।

इस समय उनके मन भर आये थे। दोनों अपना-अपना भार हल्का कर लेना चाहते थे।

'हम लोग कितनी दूर आ गये, काफी चल आये हैं। मैं आई थी कि.........!'

कहते-कहते वह रुक गई, जो बात इतने वेग से मन को मथ रही थीं जबान पर आते-आते जैसे अटक गई। दोनों उसी बात को लेकर अपने अपने गुबार निकालने के लिए ही इतनी दूर आये थे पर किसी की हिम्मत न हो रही थी कि उसकी चर्चा करे। जरवेस का मन सहसा उमड़ा, आँखों में आँसू भी छलक आये।

'तुमको मालूम है बिजर्ड मर गई, उसके आदमी ने नशे में ऐसा मारा कि बेचारी सह न सकी। पहले से बीमार तो थी ही, कमजोर पड़ गई थी, पर इससे क्या, ऐसे आदमियों को भगवान जाने क्यों सजा भी नहीं मिलती। कानून है सब के लिए, होना चाहिये.........पर वह बेचारी ऐसी भली थी कि मरते दम तक उसने अपने आदमी का बुरा नहीं चाहा। जब उससे चोट का कारण पूछा गया तो उसने कह दिया कि मैं टब से टकरा कर गिर पड़ी थी, इसलिए यह.........!'

गूजेट उसकी ओर देख रहा था। बीच में ही टोंक कर बोला—

'तुमने कल मुझे बड़ी तकलीफ दी!' उसके ओंठ काँप रहे थे। 'मैं पहिले से ही जानता था कि अंत में होना तो यही है पर तुम्हें मुझे.........!'

कहते-कहते गूजेट की आवाज भर आई। जरवेस एकदम चौंक सी पड़ी। उसकी बात समझ कर बोल उठी—

'तुम गलत समझते हो; मैं कसम खाती हूँ ऐसा नहीं है। उसने मुझे पकड़ जरूर लिया था पर वह मेरा कुछ कर न सका था। ऐसा बिल्कुल पहली बार हुआ था। मैं जो कहती हूँ इस पर विश्वास करो। उसमें मेरा मन तनिक भी न था!'

पर गूजेट वैसा ही गंभीर बना रहा। शायद उसे विश्वास न हो रहा था। उसे विश्वास था कि औरतें अक्सर इस तरह की बातों पर झूठ बोल जाया करती हैं। उसे ऐसा देख कर जरवेस भी गंभीर हो उठी—

'गूजेट, तुम मुझे जानते हो, मैं कभी भी झूठ नहीं बोलती। मैं मानती हूँ कि मुझमें और लैन्टियर में मित्रता है पर यह समझ लो कि हम हमेशा मित्र ही रहेंगे और आगे कुछ नहीं हो सकता। और अगर कुछ वैसा होता है तो मैं अपने को सबसे नीच मानूँगी और समझूँगी कि मैं तुम्हारे जैसे आदमी के प्यार के योग्य नहीं हूँ।'

उसकी आँखें आँसुओं के बीच स्वच्छ हो उठी थीं, और मुँह पर ऐसी स्निग्धता तथा भोलापन उभर आया था कि कोई उसकी सत्यता पर अविश्वास न कर सकता था। उसने एक बड़ी साँस ली और पास ही रक्खा हुआ जरवेस का हाथ अपने हाथों से दबा लिया। गूजेट ने इतने दिनों के प्यार के बाद आज पहिली बार उसका हाथ छुआ था। दोनों चुप थे, जाने क्या सोचते हुए। ऊपर सफेद बादलों के टुकड़े सुन्दर हंसों जैसे पर फैलाए तैर रहे थे, पेड़ों की पत्तियों में एक मधुर सरसराहट होने लगी थी। हवा के गुड़गुड़ाते हुए झोंके एक-एक करके आ रहे। दोनों की दोनों उस ढाल पर से एक दूसरे का हाथ लिए बैठे रहे। दोनों की आँखें प्यार के छीटों से नम हो गई थीं।

'तुम्हारी माँ तो मुझसे बहुत नाराज हैं—देखो 'न' नहीं कह सकते और हो भी कैसे सकता है, मैं तुम्हारा इतना रुपया चाहती हूँ.........'

उसने बड़ी जोर से वह हाथ झकझोर दिया, जैसे ऐसी बातें वह नहीं सुनना चाहता हो ऐसी बातें जबान पर लाती ही क्यों है। वह स्वयं कुछ कहना चाहता था पर गला रुँध गया और आवाज भर आई—

'जरवेस !.........' जरवेस ने अपनी बड़ी-बड़ी पलकें ऊपर उठाईं, 'मैं तुमसे एक बात बहुत दिनों से कहना चाहता था। तुम सुखी नहीं हो। माँ भी अक्सर कहती हैं कि तुम बरबाद हो रही हो, भविष्य में तुम्हें जाने

कितनी तकलीफें मिलें।' इसके बाद वह कुछ सकुचा, 'चलो हम दोनों भाग चलें और जल्दी ही!'

जरवेस ने उसकी ओर देखा जैसे उसका कुछ अर्थ उसकी समझ में नहीं आया। आज तक गूजेट ने कभी मुँह तक न खोला था। आज पहली बार प्यार की बात सुन कर वह कुछ नादान सी बन गई—

'क्या मतलब?'

गूजेट ने बिना उसकी ओर देखे हुए उत्तर दिया—

'मेरा मतलब है कि हम दोनों बेलजियम भाग चलें। वहाँ हम लोगों को काम भी मिल जायेगा। दोनों बड़े खुशी प्यार से रहेंगे, क्यों?'

जरवेस के मुँह पर एक लाचारी सी उभर आई और उसने उसके कंधे पर सिर रख दिया। गूजेट ने उसकी ओर नहीं देखा।

'गूजेट!' जरवेस ने न जाने कितने कष्ट के बीच कहा—

'हाँ जरवेस, हम तुम सुखी रहेंगे!'

पर तुरन्त ही उसकी दृढ़ता लौट आई।

'यह नहीं हो सकता। ऐसा करना बड़ी भारी गलती होगी। तुम जानते हो कि मैं विवाहित हूँ। मेरे बाल-बच्चे हैं। तुम मुझे चाहते हो और मैं भी तुम्हें इतना चाहती हूँ कि तुम्हारे साथ चलने के लिए राजी हो सकती हूँ पर गूजेट क्या यह भूल न होगी। होगी! जरूर होगी!! क्या हम लोग जैसे रह रहे हैं नहीं रह सकते? हम एक दूसरे के हैं, यही क्या कम है, इस तरह रहते हुए हम जिन्दगी के कठिन से कठिन झोंके झेल लेंगे। क्या हमारे प्यार में इतनी भी ताकत नहीं है? पर हम कोई भूल न करेंगे। गूजेट! सच्चाई का नतीजा भी अच्छा मिलता है। हम एक दूसरे के प्रति सच्चे हैं.....।'

गूजेट उदास तो हो गया पर उसे यह विश्वास जरूर हो चला कि

जो जरवेस कहती है ठीक है। उसके अंदर एक सिकुड़ती हुई वासना उठी और उसने खींच कर जरवेस को कस लिया। ओटों पर कई चुम्बन जड़ दिये। दो-तीन क्षण ऐसे ही बीते। फिर धीरे-धीरे बाँहें ढीली हो चलीं। जरवेस ने अपने को अलग कर लिया और तने से आड़ लगा कर बैठ गई। संतोष और सुख उसकी मुँह की रेखाओं में भीग उठा था। गूजेट पास ही खिले हुए 'डेसीज' के फूल तोड़-तोड़ कर उसकी डलिया में रखने लगा, एक गुच्छा उसके बालों में भी लगा दिया। इसके बाद ही वे दोनों एटीन के बारे में बातें करते हुए चल दिए।

वास्तव में जरवेस जितना लैन्टियर से डरती थी उतना उसे स्वयं आभास न था। उसने प्रतीक्षा तो अवश्य कर रक्खी थी कि लैन्टिर को जरा भी नजदीक न आने देगी पर अपने स्वभाव की दुर्बलता से डरती थी कि कहीं उसके आगे समर्पण न कर दे। जरवेस के लिए किसी का विरोध करना बहुत ही कठिन था। लैन्टियर ने उसके बाद फिर कभी कोई वैसा प्रयास नहीं किया। इससे कोई बात ही न उठी। वह उसके आगे हमेशा शांत रहता और व्यवहार भी बहुत अच्छा करता। कूपे हमेशा कहा करता 'लैन्टियर सच्चा है उसकी मित्रता पर विश्वास क्यों न किया जाय। मैं जानता हूँ कि वह कभी धोखा नहीं दे सकता, कोई भी मुसीबत आए, वह साथ जरूर देगा, वह ईमानदार है।'

उसे लैन्टियर पर पूरा भरोसा था। जब इतवार के दिन तीनों चर्च जाते तो वह दोनों को साथ-साथ चलने के लिए विवश करता और खुद पीछे-पीछे चलता। उसे पूरा विश्वास था कि वह अब जरवेस के साथ कोई दगा नहीं कर सकता।

कूपे और लैन्टियर मिलकर पैसा फूँके दे रहे थे। लैन्टियर कुछ देना तो दूर रहा है अब उधार भी ले लेता था। दस फ्रैंक, बीस फ्रैंक जब कभी वह देखता कि घर में पैसा है जरूर माँग लेता। कह देता, व्यापार के बारे में उसे बड़ी जरूरत है। जरवेस बिना कुछ कहे दे देती। इसके

बाद वह कूपे को लेकर कहीं दूर किसी रेस्ट्राँ में जा बैठता और अच्छी-अच्छी चीजें खा पीकर बराबर कर देता। शराब की बोतलों पर बोतलें पी जातीं। पर जरवेस के आगे घर पर कभी भी इनकी चर्चा न उठती। इस दशा में यह स्वाभाविक था कि काम-धाम सब एक कोने पड़ा रहे। काम करना और मौज उड़ाना दो विरोधी तथ्य हैं। कूपे ने कभी भूल कर भी इधर हथौड़ी न उठाई थी पर उसे आस-पास के सभी शराबघरों का पता था। वह घंटों रात तक वहीं बैठा रहता, अक्सर लैन्टियर भी साथ रहता। लैन्टियर का साथ उसे अच्छा लगता था, कभी-कभी अकेले ही जाता।

नवम्बर के महीने में जाने क्या बात हुई कि एक दिन कूपे ने काम करने का निश्चय किया; लैन्टियर ने भी एक बड़ा वक्तव्य काम और उसके गुण-अवगुण पर दिया। दूसरे दिन सूरज निकलने के पहले ही कूपे चल दिया। उसको कुछ दूर तक भेजने के लिए लैन्टियर भी साथ हो लिया। पर जैसे ही एक गद्दी के पास से जा रहे थे, कूपे ने ही कहा—

'न हो आओ एक-एक गिलास पी लें, फुर्ती आ जायगी।' खिड़की के पास ही ग्रिलेड मस्ती में सिगरेट पी रहा था।

'क्यों, कैसी कट रही है ?' कूपे ने प्रश्न किया।

'कुछ नहीं, हाँ कल ही काम से टिकट कट गया है। इन मालिकों का नाश हो !'

वह जरा कठोर होकर बोला। इतने में कूपे ने एक गिलास उसकी ओर भी बढ़ा दिया। लैन्टियर ने मालिकों की तरफ से बोलना शुरू कर दिया। एक बहस छिड़ गई। एकाएक लैन्टियर ने कहा—

'अच्छा चलें, नहीं तो तुमको देर हो जायगी !'

ग्रिलेड भी साथ ही चल दिया। उस समय दिन निकल रहा था,

लाल-लाल किरणें फैल रही थीं। मजदूरों के झुंड के झुंड चले जा रहे थे। कूपे भी अपना औजारों का झोला कंधे पर रक्खे हुए सबके साथ चल रहा था।

'ग्रिलेड, न हो तुम भी चले चलो, मालिक ने कहा था कि एक आदमी और लेते आना।'

'न भाई, अब मैं नहीं जाऊँगा, बाज आया मालिकों से। हाँ चाहो तो मेस बॉट्स को ले लो, वह खुश भी होगा!'

एसाम्वायर में मेस बॉट्स बैठा हुआ था। लैन्टियर बाहर ही खड़ा रहा और कूपे से बोला—

'देखो, जल्दी करो, बुला लाओ।'

मेस बॉट्स ने भी कहा—

'क्या? मैं तुम्हारे मालिक के यहाँ काम करूँ? कभी नहीं? उससे बढ़ कर धूर्त कोई होगा नहीं। मेरा खून चाहे सूख जाय पर मैं उसकी नौकरी न करूँगा। और तुम..............तीन दिन से ज्यादा नहीं ठहर सकते!'

'सच कहते हो?' कूपे ने दीन बन कर पूछा।

'बिल्कुल सच, इसमें झूठ क्या है? न तुम बात कर सकते हो, न जरा हिल-डुल सकते हो। हमेशा चक्कियों के सामने समाधि लगाए बैठे रहना पड़ता है। उस पर भी वह हमेशा सर पर सवार रहता है। अगर कहीं भूले से शराब का एक घूँट पी लिया तो 'शराबी है', 'नीच है' तमाम बातें सुनाएगा!'

'तुमने बड़ा अच्छा किया जो बता दिया। खैर आज देखता हूँ। अगर परेशान करता है तो मैं बिगड़ जाऊँगा, छोड़-छाड़ कर चला आऊँगा!'

कूपे साथी से हाथ मिला कर चलने को हुआ। मेस बॉट्स को कुछ बुरा लगा। वह बिगड़ कर बोला—

'अच्छा देखता हूँ, जब तक एक गिलास पी नहीं लेते कैसे जाते हो? क्या मालिक पाँच मिनट माफ भी नहीं कर सकता?'

इसके बाद लैन्टियर भी आ गया। मेस बॉट्स ने कोलम्बे से चीख कर कहा—

'देखो तीन गिलास.....बेईमानी न करना।'

सड़क पर गूजेट और लोरिले जाते हुए दिखे, कूपे ने बुलाया भी पर वे न आए।

दिन बिल्कुल निकल आया था। जगमगाता हुआ प्रकाश सड़कों, इमारतों और पेड़ों पर छा गया था। कूपे ने एकाएक बाहर की ओर देखा और उठ खड़ा हुआ, इस बार लैन्टियर ने कहा—

'इस तरह बीच में नहीं उठा जाता, कुछ तो तमीज सीखा करो, काम हो या न हो इस समय नहीं जा सकते!'

'मेरा तो 'काम', 'काम' सुनते-सुनते जी पक गया है,' मेस बाट्स ने और जोड़ दिया। शराब का दौर फिर शुरू हुआ। मेस बाट्स पर नशा काफी आ चुका था, वह एक प्रकार से धुत्त था। जैसे ही कुर्सी से उठ कर 'काउंटर' की ओर जाने लगा कूपे के झोले से टकरा कर लड़खड़ा गया।

'उठाओ, बाहर फेंको अपना कूबड़।' और उसने जरा रास्ते से हटा दिया। कूपे को भी न जाने कैसा लगा। वह धीरे से उठा जैसे उसने कुछ निश्चय कर लिया हो।

'अब तो देर हो गई, अब क्या जाऊँगा? कह दूँगा औरत की तबियत ठीक नहीं थी।' फिर कोलम्बे की ओर देखकर, 'मैं अपना झोला यहीं बेंच के नीचे रक्खे जा रहा हूँ, दोपहर को ले लूँगा!'

लैन्टियर को यह बात पसन्द आई।

'काम को कोई बुरा थोड़े कहता है पर मित्र, दोस्त ये उससे कम थोड़े हैं!'

इसके बाद घन्टे भर तक चारों खड़े बातें करते रहे। तय हुआ कि चल कर थोड़ी देर बिलियर्ड खेला जाय। सब लोग टहलते-टहलते 'बिलियर्ड रूम' जा पहुँचे। लैन्टियर खेलने में बड़ा कुशल था, सब लोगों ने बड़ी तारीफ की।

दोपहर होने को आई, खाने का समय आ गया। कूपे के दिमाग में एक बात आई, 'पास ही मेरा एक मित्र है बेक सेली, चलो वहीं खाया जाय!'

सब लोग राजी हो गये। थोड़ा-थोड़ा पानी बरस रहा था। खेलने में गर्मी आ गई थी, इसलिए किसी को मालूम भी न हुआ। कूपे सबको लेकर एक फैक्ट्री पहुँचा, मित्र को बुलाया, वह तुरन्त ही आ गया। सब लोगों को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ।

'मुझे इस समय एक घन्टा ठीक करना था, छोड़ो, दिन भर काम, काम, तबियत भर जाती है!'

और वे लोग एक रेस्ट्राँ में पहुँचे। सबके लिए खाना मँगाया गया। कूपे जल्दी-जल्दी खाकर उठ खड़ा हुआ।

'अच्छा भाई, मैं तो अब चलूँगा। मैंने जरवेस से वादा किया था कि आज काम पर जरूर जाऊँगा। सच मित्र, मेरा जी तो नहीं है पर जाना जरूर पड़ रहा है!' सब लोगों ने काफी रोका पर कूपे जैसे निश्चय ही कर चुका था। अन्त में उठ कर सब लोग चल दिये। उसे एसाम्वायर में झोला लेना था। झोला लेकर जब वह खड़ा हुआ तो एक-एक गिलास और आ गये। कूपे वैसे ही खड़े-खड़े पीने लगा। इतने में सामने की घड़ी ने एक बजाया। कूपे ने झोला उतार कर जमीन पर रख दिया और पाँव से ठेल कर बेंच के नीचे खिसका दिया।

'अब आज नहीं जाता। एक दिन में कुछ बिगड़ा-बना नहीं जाता!'

इस समय पानी बन्द हो गया था। सब लोगों की राय हुई कि कुछ

टहला जाय। हवा बड़ी अच्छी चल रही थी। वे चुपचाप चलते रहे। किसी ने कुछ बातचीत न की। थोड़ी देर में वे पॉसीनियर के पास आ पहुँचे। लैन्टियर एकदम उधर ही मुड़ गया। यहाँ एक छोटा-सा कमरा था जो कुछ सजा था और भीड़-भाड़ से अलग था। लैन्टियर को बड़ा अच्छा लगता था। सब लोग जाकर बैठ गये। लैन्टियर ने अखबार मँगा कर पढ़ना शुरू किया। कूपे और मेस बॉट्स ताश खेलने लगे। लैन्टियर एक हत्या के बारे में बता रहा था, कारण कुछ भी न दिया था। इसी पर तर्क-वितर्क होने लगे। बीच बीच में शराब के गिलास भी उतारे जाते थे। नशा इस समय सब पर काफी था, एक लैन्टियर ही होश में था। उस पर शराब का असर कम होता था। उसका जी भी इन लोगों के बीच ऊबने लगा। उठ कर चुपचाप घर चला आया। जरवेस से उसने बता दिया कि कूपे अपने मित्रों के साथ है। पर कूपे दो दिन तक न लौटा। सिर्फ उड़ती हुई खबरें आतीं कि कहाँ-कहाँ था, उसके साथ कोई न था। जरवेस ने भुन-भुना कर कहा—

'अजीब आदमी ?'

पर उसने कभी खोजने की न सोची। तीसरे दिन उसने एक शराब-घर में देखा भी पर उससे अंदर जाकर बुलाना ठीक न समझा, यों ही लौट आई। दूसरे दिन सबेरे वह घर आया। रात को फिर गायब हो गया। यही हाल एक हफ्ते तक चलता रहा। जरवेस कभी-कभी एसाम्वा-यर में पूछ-ताँछ भी कर आती। वह उदास बहुत थी। एक दिन लैन्टियर ने ही प्रस्ताव किया कि किसी नाचघर चला जाय। उसने नाहीं कर दी। उसे इस स्थिति में वहाँ थोड़ा भी आनन्द न आयेगा। लैन्टियर ने बहुत समझाया, उसकी दशा पर सहानुभूति प्रकट की। कूपे अभी तक कभी रातें बाहर न बिताता था, वह बार-बार दरवाजे तक आती और इधर-उधर झाँक कर लौट जाती। उसका काम में भी मन न लगता, जी भागा-भागा करता, 'कहीं कुछ टूट-फूट गया हो', 'चोर ही लग गई हो', 'कहीं

नाली में न पड़ा हो' । कुछ ठीक मालूम ही न था । उसे ठीक-ठीक मालूम हो जाय तो चाहे वह मर ही क्यों न गया हो, इतनी चिंता न होती। पर इस तरह असमंजस में रहना बड़ा कठिन था। पर जब चिराग-बत्ती जल गये और लैन्टियर ने फिर चलने के लिये कहा तो तैयार हो गई। 'क्यों न जाऊँ ? अगर मेरा आदमी इस तरह रहता है तो मैं क्यों न ठीक से रहूँ । मेरी ही जिन्दगी भारू नहीं है ? मैं ही क्यों मरूँ ? अगर वह नहीं आता, तो मैं जरूर जाऊँगी !'

और जल्दी से खाना खाकर लैन्टियर के साथ चलने को तैयार हो गई। अम्माँ और नाना को जल्दी-जल्दी सो जाने के लिए कह कर कुन्जी देने बाश के यहाँ पहुँची।

'बहिन ! अगर आ जायँ तो खोल कर पहुँचा देना, अँधेरा रहेगा, बत्ती जला लेना !'

लैन्टियर बाहर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। जरवेस ने रेशमी कपड़े पहन रक्खे थे। दोनों की आँखें मिलते ही जरवेस मुसकरा उठी। दोनों साथ-साथ चलने लगे। नाचघर बोलवर्ड पर ही था। बाहर ही ग्रिलेड खड़ा पोस्टर देख रहा था, लैन्टियर ने पुकार कर कहा—

'कहो भाई कैसे हो ? कूपे को कहीं देखा है ?'

'कल यहीं देखा था, एक नौकर से झगड़ रहा था, इसके बाद मैंने नहीं देखा !'

ग्रिलेड ने कहते हुए अजब जम्हाई ली। कष्टों में चूर था। शक्ल से लगता था जैसे किसी नाली में लोट रहा था।

'तो तुम्हें मेरे आदमी के बारे में कुछ नहीं मालूम ? जरवेस ने पूछा।

'नहीं, कुछ नहीं, हाँ वह एक कोचवान के साथ था ?'

नाचघर में जरवेस और लैन्टियर का समय बड़ी अच्छी तरह कटा और ग्यारह बजे जब गेट बन्द होने लगे तो वह धीरे-धीरे घर की ओर

चल पड़े। उन्हें किसी बात की जल्दी न थी, रात भी बढ़िया थी। धीमी-धीमी हवा बह रही थी। लैन्टियर एम्नाडा द्वारा गाया हुआ गाना गुन-गुना रहा था और जरवेस उसका साथ दे रही थी। अन्दर काफी गर्मी भी थी और उन्होंने कई गिलास शराब भी पी थी। धीरे-धीरे एक मस्ती-सी दोनों पर आती जा रही थी।

घर पहुँचने पर जरवेस ने तीन बार घंटी बजाई, कोई न आया।

'लगता है सब सो गये।'

इतने में बाशा ने ऊपर से झाँक कर कहा, 'कूपे आ गया है, पॉसन भेज गया है, कुन्जी दरवाजे पर लगी है।'

जरवेस जैसे ही दरवाजा खोलकर अन्दर घुसी वहाँ का दृश्य देखकर सन्न रह गई। कूपे जमीन पर औंधा पड़ा लुढ़क रहा था। तमाम कै की थी, उसी में कपड़े सन रहे थे। देखते ही उसका मन काँप उठा। उसने तुरन्त ही अपना मुँह फिरा लिया।

'मैं क्या करूँ, मुझसे तो यहाँ न रहा जायगा।'

इतने में जरवेस का हाथ लैन्टियर ने खींचते हुए कहा—

'जरवेस, जरा सुनो!'

वह उसका अर्थ समझ कर पीछे हट गई।

'नहीं, मुझे छोड़ दो, मैं सब ठीक कर लूँगी?'

पर लैन्टियर ने कुछ न सुना। उसने अपना एक हाथ उसकी कमर के चारों ओर डाल कर अपनी ओर खींच लिया और एक हाथ से पड़े हुये कूपे की दुर्दशा की ओर इशारा किया।

'मुझे छोड़ दो!' प्रार्थना के स्वर में जरवेस ने कहा और एक हाथ से उस कमरे की ओर संकेत किया, जिसमें नाना और अम्माँ सोई हुई थीं।

'तुम उनको जगा दोगे? छोड़ो मुझे, अपनी लड़की के सामने तो शर्मिन्दा न करो।'

उसने कुछ न कहा, और पास खींच कर होठों पर होठ रख दिये। जरवेस की देह सनसना उठी, हृदय में एक उमंग सी आई और उसका सारा विरोध ढह गया।

'कैसा पड़ा-पड़ा जानवर जैसा गुर्राता है, इसी की गलती है, जब इसे ही कुछ फिकर नहीं है तो मुझे ही क्या ?' जरवेस ने सोचा। इतने में लैन्टियर ने उसे एक बार जोर से खींचा, तभी नाना का मुँह खिड़की के पास एक क्षण के लिए दिखा। माँ ने लड़की को न देखा। नाना अपने रात के कपड़े पहने उँघाई सी खड़ी थी। उसने एक निगाह अपने जमीन पर पड़े हुए बाप पर डाली और फिर लैन्टियर के कमरे में जाती हुई माँ की ओर घूर कर देखा। वह उस समय बहुत गंभीर थी पर आँखों में एक ऐसी चमक थी जो सिर्फ युवा स्त्रियों में ही देखी जाती है!

९. घटाएँ

जाड़े के दिन थे। कूपे की माँ को बाई ने जकड़ लिया था। वह हर साल इस मर्ज का शिकार होती थी। बीमारी के साथ ही वह इतनी निराश हो गई कि दिन के सूने क्षणों में अक्सर कहा करती—

'हे भगवान, अब तो नहीं रहा जाता। यह घर मेरे लिए जेल ही है। अब तू मुझे उठा ही ले।'

और अगर वरजिनी, बाश या अन्य कोई आता तो अपना सारा गर्द-गुबार निकाल देती, 'मैं अगर अनजाने देश में पड़ी होती तो भी शायद इतनी तकलीफ न उठाती। अक्सर जरूरत ही पड़ती है। दवा-दारू है, चाय है, पानी है, पर यहाँ देने वाला कोई नहीं रहता। नाना, अरे कल की छोकड़ी जिसे मैंने गोदी में खिलाया है, दुलराया है, सबेरे निकल जाती है, फिर दिन भर मुँह नहीं दिखाती। रात को ऐसे खर्राटे भर-भर कर

सोती है कि क्या कहूँ, एक बार भी उठ कर नहीं पूछती कि कुछ चीज तो नहीं चाहिये, दर्द है, कहाँ है ? खैर, मुझे तो लगता है अब सब जल्दी ही समाप्त होगा, यह मुझे किसी न किसी दिन मार डालेगी—सिर्फ कानून के डर से ही रुकी हुई है !'

जरवेस भी अब बदल रही थी, उसके स्वभाव की मृदुलता और नम्रता क्रमशः कठोरता और चिड़चिड़ेपन में बदल रही थी। उसका दोष कम था। सारी घटनाएँ जरवेस के विरुद्ध ही जा रही थीं और वह उन परिस्थितियों पर काबू न पाकर खीझती तथा सिर धुनती थी। उसने अपनी इसी स्थिति में कहा भी था कि अम्माँ उसके ऊपर बेकार का बोझा हो गई हैं। अम्माँ ने कहीं सुन लिया था और उस दिन मै० लिरेट के आगे बिसूर-बिसूर कर रो रही थीं। जरवेस के विषय में और तमाम बातें उसने लिरेट से बताईं, ये नये-नये रेशमी कपड़े, बनाव-शृङ्गार, तड़क-भड़क, शराब-रोटियाँ और तरह-तरह की तमाम चीजें; ये सब क्या हैं ? उसने उसी आवेश में लोरिले के विरुद्ध भी जो जी में आया कहा। एक दिन उसकी हालत काफी खराब थी तो दोनों लड़कियाँ देखने आई हुई थीं। माँ ने हाथ के संकेत से मुँह के पास कान लाने को कहा, 'कल रात को मेरा बेटा आया, कष्टों में चूर था। रात भर वह फर्श पर पड़ा रहा और उसने सारी रात लैन्टियर के साथ उसी के कमरे में बिताई थी। बेटी कितनी शर्म की बात है कि नाना ने भी सब कुछ देखा-सुना था। क्या सोचती होगी वह अपने मन में, अब वह नादान नहीं है।'

दोनों बहनों ने ऐसे देखा जैसे ताज्जुब की बात ही न हो।

'हमसे, हमसे क्या, यह कूपे का काम है उसे देखना चाहिये कि उसकी औरत क्या करती है, कहाँ जाती है ? हमको क्या करना है ?'

अब क्या था, सारे पड़ोस में यह बात फैल गई। दोनों बहनों ने यहाँ तक कहा, 'हम लोग अम्माँ को देखने के लिए ही कभी-कभी चली जाती हैं। नहीं, हमारा उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है।' सभी लोग जरवेस

को ही दोषी ठहराते। 'उसी ने लैन्टियर को फँसाया होगा। अरे, आदमी का क्या, आदमी तो हमेशा आदमी ही है। जब औरत दौड़ कर गिरती हो तो आदमी क्या करे। जरवेस का ही दोष है। सारा मुहल्ला खराब कर रक्खा है इसने !'

इसी तरह की तमाम बातें सुनने में आतीं पर जरवेस सब सुनती हुई शांत रहती थी, मानों इनसे उसको कुछ मतलब ही नहीं है। पहले तो उसके मन में आत्मग्लानि-सी जमी और कूपे के पास जाने में संकोच होता था। अगर कूपे कभी उसे स्पर्श करता तो लज्जा के मारे भाग जाती पर फिर धीरे-धीरे उसकी आदत सी हो गई। वह अब शांत और निरापद आराम से रहना चाहती थी। वह अपने से स्वयं प्रश्न करती, 'मैं ही क्यों चिन्ता करूँ? अगर लैन्टियर और मेरा आदमी दोनों सन्तुष्ट रहते हैं, आपस में नहीं लड़ते-झगड़ते तो मुझे ही क्या पड़ी है?' इसी प्रकार गृहस्थी चलती रही। जब कूपे नशे में धुत्त होकर आता तो वह लैन्टियर के कमरे में चली जाती, वहीं सोती।

इसका अर्थ यह नहीं था कि उसमें वासना का आधिक्य हो रहा था या वह उसकी पूर्ति के लिए ही ऐसा करती थी, उसका इधर कुछ ऐसा स्वभाव-सा हो गया था कि सुन्दर, सुखद और निर्विघ्न जीवन उसे प्रिय हो चला था। वह हमेशा ऐसी जगह खोजती रहती जहाँ उसे कम से कम कष्ट हो। अम्माँ पहले कुछ खुलकर न कहती थीं पर अब संकेतों और व्यंग्यों से सारी होने वाली बातों को कह डालती थीं। एक बार तो जरवेस को मजबूर होकर कहना पड़ा था, 'जब किसी और का आदमी शराबी, काहिल और बेकार हो जाय तो ऐसी हालत में उस औरत की क्या हालत होती होगी? क्या उसके साथ आपको सहानुभूति नहीं होनी चाहिये? और तब यदि वह सुख-संतोष के लिए कोई दूसरा दरवाजा देखती है तो इसमें उसका क्या दोष?'

एक बार जब बुढ़िया ने व्यंग्य किया तो उसने यहाँ तक कह दिया, 'मेरा पति तो जैसे कूपे हैं वैसे लैन्टियर है। लैन्टियर से ही मेरे दो बच्चे हैं!' इसके बाद ही उसने कुछ प्रकृति के नियमों का हवाला दिया कि इससे उसमें कोई गड़बड़ी नहीं होती। ऐसा लगता था मानों ये शब्द स्वयं जरवेस के न हों। उसने किसी से सुने थे, उन्हीं को दुहरा रही थी। साथ ही उसने मुहल्ले वालों को भी लपेटा, 'बड़े शरीफ बनते हैं, इस तरह की ऊट-पटाँग बातें बकते हुए शरम नहीं आती। मैं हर घर की बात जानती हूँ, कौन मेरे बारे में क्या कह रहा है मुझे सब पता है पर मुझे क्या करना है। समझती हूँ हर आदमी स्वतन्त्र है, जो चाहे करे, जैसे चाहे रहे। लोग एक दूसरे का ठेका क्यों ले लेते हैं ! उसे अपनी इच्छा-नुसार काम करने क्यों नहीं देते !''

और एक दिन वह घायल शेरिनी की तरह तड़प उठी—

'अच्छा, अब बहुत हो गया। तुम बीमार हो मैं इसी का ख्याल करती हूँ पर तुम्हारी समझ में कुछ आता नहीं है। मैंने आज तक तुम्हारी निजी जिन्दगी के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा है, पर क्या मैं जानती नहीं हूँ ? सब जानती हूँ, भगवान् रे भगवान् ! खैर हटाओ, मैं सब बातें न दुहराऊँगी पर अच्छा इसी में है कि आज से मेरे बारे में एक भी बात मुँह से न निकले !'

और बुढ़िया जल कर राख हो गई थी। वह तो कहो कि उसे खाँसी का फिट आ गया था नहीं तो शायद कुछ कह जरूर देती और तब महाभारत निश्चित था।

एक दिन गूजेट अपनी माँ के कपड़े लेने आया। अम्माँ ने बहुत स्नेह से उसे बुलाकर जरवेस के विषय में बातें शुरू कर दीं। बातों-बातों में ही उन्होंने ताड़ लिया कि गूजेट भी जरवेस से मन ही मन नाराज है। प्रतिद्वन्दिता की भावना उसे भी जला रही है। फिर क्या था, उसको मौका मिल गया, उसने गढ़-गढ़ कर तमाम उल्टी-सीधी बातें गूजेट को बताईं।

ऐसा करने के बाद अम्माँ को लगा कि बदला ले लिया। जब गूजेट चलने लगा तो उसका चेहरा बहुत गिरा हुआ खिन्न था। जरवेस थी ही नहीं, जब आई तो अम्माँ ने बहुत संयत स्वरों में कहा—'गूजेट की माँ ने कहलाया है कि कपड़े जल्दी से जल्दी भेज दें चाहे धुले हों या नहीं !' जरवेस ने अम्माँ के इस ढङ्ग को देखकर तुरन्त ताड़ लिया कि इसके पीछे बुढ़िया का ही हाथ है। वह सारी बात समझ गई। सालों बीत गये थे, उसने एक भी पाई इनको न दी थी। कर्ज अभी भी वही चार सौ पचीस फ्रैन्क था, वह हर बार धोवाई के पैसे माँग लाती, कुछ कमी होने ही न पाती थी। सब सोचकर जरवेस का मन जैसे बैठ गया।

इस कर्ज के विषय में कूपे की तो बात ही कुछ और थी। वह अक्सर हँसते-हँसते कह देता था, 'अच्छा तो है, अगर इसी तरह कभी-कभी गूजेट से कोने-कोतरे में मिल लिया करो तो अपना बड़ा लाभ रहेगा। सब काम ठीक चलता ही जाएगा और कर्ज की बात भी न उठेगी !' 'जरवेस की त्योरियाँ चढ़ जातीं और वह चीख उठती, 'तुम..... तुम ऐसा कहते हो, शरम नहीं आती। इतना गिर गये हो। मेरे सामने गूजेट के बारे में तुम्हें ऐसा कहना ही न चाहिये !'

धीरे-धीरे जरवेस ने सब कुछ सोचना छोड़ दिया। उसे अब खाना छोड़ किसी बात की चिंता ही न होती। दिन में तीन बार खाना और रात को नींद, बस यही दो बातें उसके लिए रह गईं। दूकान अपने आप जैसे चलती चली जाती थी। गाहक दिन पर दिन कम होते जाते थे। उसे कुछ चिंता न होती। वह चुपचाप इन बातों से मुँह फेर लेती। वह समझती काम की कभी कमी न होगी, न सही पुराने नए गाहक आएँगे। पर अपनी गलती की ओर उसका ध्यान कभी न जाता। एक दिन उसे पुटोस को भी बिदा करना पड़ा। अब सिर्फ आगस्टाइन अकेली रह गई और वह भी दिन पर दिन बूढ़ी होती जा रही थी। काम चौपट हो रहा था। विनाश का समय काफी नजदीक था। जरवेस

के सिर पर कर्ज का भार बढ़ता ही जा रहा था। पर उस ओर से वह जैसे निश्चिंत हो गई थी। अब उसके लिए ईमानदारी, गैरईमानदारी, वादा, गैरवादा कुछ अर्थ न रखते। उसको अपनी जरूरत की चीजें मिलनी चाहिए बस। अगर एक दूकानदार उधार नहीं देता तो दूसरे से ले लो, किसी से जैसे मिलता है उसी तरह ले लो, अब यही उसके सिद्धान्त हो गये। उसका उधार हर दूकान में था। किसी के सामने जाने की उसकी हिम्मत न होती, अगर कहीं जाना होता तो चक्कर लगा कर जाती। दूकानवाले अब उसे चोर, ठग, बेईमान सब कहने लगे थे। वह अक्सर लेन्टियर से कहती—

'कितने मूर्ख हैं ये लोग, अगर मेरे पास पैसा होता तो मैं भला उधार रखती ? और पैसा आये कहाँ से ?'

इसके बाद वह भविष्य की बात सोचने लगती तो अँधेरा छा जाता। कुछ समझ में न आता, वह खीझकर सोचना छोड़ देती। अम्माँ अच्छी हो गई थीं पर गृहस्थी के हाल बुरे ही थे। कभी काम आ जाता तो खाना-पीना नसीब हो जाता नहीं तो उपवास होता। अम्माँ अब रोज कपड़ों की गठरी लेकर बाहर जातीं और वहीं बेच-बाँच कर कुछ पैसे ले आतीं। जरवेस धीरे-धीरे घर खाली कर रही थी। तमाम चीजें गिरवी रख दी, बहुत सी चीजें आये दिन बेचती जाती। एक चीज के बेचते समय उसे बड़ा दर्द हुआ; वह थी घड़ी। उसने सोचा था, घड़ी वह तभी बेचेगी जब बिल्कुल भूखों मरती होगी पर उस दिन जब अम्माँ उसे भी उठाकर ले चलीं तो वह न देख सकी और कुर्सी पर गिर कर बच्चों की तरह रो पड़ी। इन पैसों की अक्सर शराब खरीदी जाती और थोड़ी देर के लिए सब सुख से पीते। अम्माँ अपने कपड़ों में शराब का प्याला इस सफाई से छिपाकर लातीं कि एक भी बूँद न गिरती। वह समझतीं कि किसी को मालूम नहीं होता पर सब लोग जान गये थे और वह जब बार-बार आती-जातीं तो खूब हँसते। इन सब बातों को देखकर लोग

जरवेस के विरुद्ध हो गये थे और कहते, 'दिन दूर नहीं है जब यह भीख माँगेगी !'

इतनी तंगी और बरबादी के बीच कूपे दिन-पर-दिन मोटा होता जाता था। उसके लिए अच्छी या खराब कोई भी शराब नुकसान न करती। जितना ही अधिक पीता उसकी भूख बढ़ती जाती। लैन्टियर कहता, 'सब हराम की चर्बी है !' उस पर कुछ असर न होता। उसे शायद यह भी पता न था कि उसके और लैन्टियर में क्या सम्बन्ध है। कम-से-कम उसके सभी साथी तो ऐसा जरूर कहते और अक्सर यह भी कह देते, 'हाँ अगर कहीं उसे पता चल गया तो समझो दोनों की खैर नहीं।' पर उसकी बड़ी बहिन लिरेट कहती, 'मुझे तो विश्वास नहीं होता, वह जानता जरूर है।'

लैन्टियर भी काफी खुश था। स्वास्थ्य ठीक ही था, न दुबला ही था न अधिक मोटा। और वह वैसा ही रहना भी चाहता था। इसीलिए खाने के विषय में अक्सर नुकताचीनी करता रहता था। अमुक वस्तु उसे नहीं खानी चाहिए, अमुक वस्तु प्रतिदिन हो तो अच्छा है आदि। चाहे उसके पास फूटी कौड़ी भी न हो पर उसके लिए अंडे चाहिए। वास्तव में वह जरवेस पर हावी था। उसकी गलतियों पर उसे ऐसा डाटता कि शायद कूपे भी न कभी बिगड़ा हो। उस घर में दो मालिक थे। एक दूसरे से बहुत ज्यादा चालाक था और सारी चीजें अपने लिए ही रख लेता था। उसे कूपे और जरवेस की फिक्र नहीं थी। वह नाना को जरूर चाहता था। यह शायद उसके स्वभाव के कारण था कि लड़कियाँ और औरतें उसे हमेशा अच्छी लगती रही हैं। कुछ एटीन के प्रति भी ममता उसके मन में थी। उसने अपनी चतुरता से सारे घर को हथिया लिया था। जरवेस को ऐसा नहीं था कि कभी तकलीफ न होती। उसे भी कभी बड़ी खीझ लगती। उसकी तन्दुरुस्ती जरूर ठीक थी पर उसके लिए इन दोनों आदमियों को खुश रखना एक समस्या ही थी। जब वे बिगड़े-बिगड़ाये

घर आते तो सारा गुस्सा उसी पर उतारते थे। कूपे बेतहाशा गालियाँ देता, तमाम उल्टी-सीधी बातें कहता। लैन्टियर उस तरह बकता तो जरूर नहीं पर ऐसी बातें कहता जो जरवेस को चुभ जातीं। एक रात उसने सपना देखा कि वह एक कुएँ में गिर पड़ी है। कूपे उसे मार-मार कर डुबाता जा रहा है और लैन्टियर कभी-कभी गुदगुदा कर जल्दी बाहर कूद आने के लिए कह रहा है। उसने समझ लिया कि यह सपना उसकी दशा का बिल्कुल सच्चा प्रतीक है। जरवेस का पतन दिन-पर-दिन बढ़ता ही जा रहा था। उसे न कूपे से घृणा होती और न लैन्टियर से। एक नाटक में उसने एक दिन देखा कि एक स्त्री ने अपने प्रेमी के लिए पति को जहर देकर मार डाला। वह सोचने लगी, 'अजीब बात है, तीनों बड़े आराम से रह सकते थे, मारने की क्या जरूरत थी?'

इधर लैन्टियर भी उदासीन होने लगा था। खाने के साथ अगर उसके मन की चीजें न होतीं तो वह बिगड़ उठता, 'मेरा स्वास्थ्य चौपट हो रहा है। इस तरह आलू खाकर कोई जिन्दा रह सकता है। घर बिल्कुल चौपट हो गया है। मुझे किसी दिन अपना रास्ता देखना पड़ेगा।' एक दिन तो घर में खाने को कुछ भी नहीं था। लैन्टियर जरवेस पर गुस्सा उतार कर चुपचाप बैठा था कि एकाएक उठकर पॉसन के यहाँ चला गया। इधर उसने उन लोगों से मित्रता बढ़ा ली थी। वह वरजिनी के प्रति विशेष शिष्टता दिखाता था। वह समझता था यह औरत काफी समझदार है और दुःख-सुख अच्छी तरह झेल सकती है। एक दिन वरजिनी ने उसके सामने कुछ व्यापार चलाने की बात की, लैन्टियर ने अवसर को हाथ से न जाने दिया। 'बात बहुत अच्छी है और फिर तुम्हारे लिए तो बड़ा आसान है। तुम क्या नहीं कर सकतीं? मैं न जाने कितनी ऐसी स्त्रियों को जानता हूँ। इसी तरह कुछ न कुछ काम-धन्धा करके सुख से रह रही हैं।'

वरजिनी के पास पैसा था। कोई चाची थीं, उन्हीं की जायदाद उसे

मिल गई थी। पर वह कुछ डरती थी। दूसरे मुहल्ला भी छोड़कर न जाना चाहती थी। अगर वहीं कहीं दूकान मिल जाती तो अच्छा था। लैन्टियर उसे अलग ले गया और न जाने क्या कान में कहता रहा। ऐसा लगता था किसी बात के लिए राजी कर रहा है। इसी तरह वे दोनों जरवेस के ही यहाँ अक्सर बातें करते थे। कोई गुप्त बात दोनों में चल रही थी।

लैन्टियर स्वयं इन दिनों बड़ा कटु हो चला था। वह रात-दिन कूपे और जरवेस के सामने तरह-तरह के प्रश्न उठाया करता था। 'आखिरकार इस स्थिति में तुम करना क्या चाहती हो ?, तुम वस्तु स्थिति को ध्यान से क्यों नहीं देखतीं ?,'तुम्हारे ऊपर करीब पाँच-छः सौ फ्रैंक कर्ज है सभी दूकानों में तुम्हारे नाम उधार है, तुमने किराया भी कई महीनों से नहीं दिया है, मालिक ने तुमको घर खाली करने की नोटिस दी है, अगर किराया जल्द न पहुँचा तो जबरदस्ती मकान खाली कराया जायगा, तुम्हारा सारा सामान भी बिक चुका है, रह ही क्या गया है, यही दो-चार खूटियाँ हैं और क्या ?' जरवेस पहले तो सब बातें बहुत धैर्यपूर्वक सुनती रही पर अन्त में वह भी हार कर बोली—

'हाँ, सब है तो, मैं कल ही जाती हूँ, घर जाये भाड़ में। इससे तो अच्छा है कि किसी नाली में पड़ी रहूँ।'

'लेकिन यह कोई अक्लमन्दी तो होगी नहीं और फिर विशेषकर तुम्हारे लिए अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकता हूँ। कोई गाहक ढूँढूँ जो तुम्हारी दूकान ले लेगा और सारा कर्ज भी दे लेगा लेकिन पहले यह सोच लो कि दूकान फिर तुम्हारी न रह जाएगी!'

और जरवेस उसी खीझ में कहने लगी—

'हाँ, मैं अभी छोड़ने के लिए तैयार हूँ, मैं इस झंझट से ऊब गई हूँ।', फिर क्या था, लैन्टियर ने समझा काम पूरा हो गया और उसने चाहा कि सारी बात कर ले। उसने साफ-साफ कह दिया कि वरजिनी एक दूकान

की खोज में है और उसने एक-दो बार कहा भी है। वह इसको अवश्य पसन्द करेगी। जरवेस एकदम रुक गई और गम्भीर होकर बोली—

'मैं सोचूँगी, मुझे कुछ समय तो दो, जिससे मैं भी सोच-विचार कर देख लूँ। लोग गुस्सा और भावावेश में बहुत-सी ऐसी बातें कह जाते हैं जिन पर अगर वे ठण्डे होकर सोचें तो कभी न मानें।'

लैन्टियर ने इस विषय पर फिर कई बार बातें कीं, पर जरवेस को जैसे कोई धुन हो गई थी। 'मैं अपनी दूकान फिर से चलाना चाहती हूँ। एक नौकर रखकर काम शुरू कर दूँगी। अगर पुराने गाहक न आएँगे तो नये सही!' पर शायद जरवेस ऐसा करने के लिए तैयार कम थी। वह लैन्टियर को जताना चाहती थी कि वह अभी इतनी गिरी हुई और निराश नहीं थी, जितनी कि स्थिति से पता लगता था। लैन्टियर ने भी बुद्धिमत्ता की और बहुत दिन तक वरजिनी का नाम ही नहीं लिया। वरजिनी के प्रति जरवेस के मन में एक आक्रोश था। वह उसका नाम सुनते ही तड़प उठती, 'कभी नहीं'। बात यह थी कि इतने दिन के संसर्ग के बाद भी जरवेस वरजिनी पर विश्वास न जमा पाई थी। वह समझती थी कि वह दूकान सिर्फ उसे नीचा दिखाने के लिए ही ले रही है।

'कोई दूसरी औरत चाहे तो मैं दे भी सकती हूँ पर वह मक्कार—अभी तक दिन देख रही थी कि कब मेरा सर्वनाश हो। कभी नहीं पा सकती। उसकी भूरी आँखों के पीछे हमेशा ईर्ष्या जलती रहती थी। मुझसे कभी छिपा नहीं रहा। वह गुसलखाने वाली बात भूली थोड़ी है, चुड़ैल बदला लेना चाहती है। मैं तो चाहती हूँ फिर हो उसी तरह एक दिन!'

जरवेस भावावेश में थी। लैन्टियर चुप खड़ा इन शब्दों को सुनता रहा। उसकी समझ में न आया कि क्या कहे, पर फिर उसने साहस किया।

'अच्छा चुप रहती हो कि नहीं, तुमको मेरी किसी जान-पहचान की स्त्री की बुराई करने का अधिकार नहीं है, समझीं। मैं खुद लोगों के

चकल्लसों से पक गया हूँ। मैं भी अपना हाथ खींच लूँगा। वे जानें उनका काम जाने।'

इसी तरह बात टल गई। दिन फिर बीतने लगे। जनवरी का महीना आ पहुँचा, सर्दी बहुत बढ़ गई। अम्माँ की बाई इस बार बहुत बढ़ गई और कुछ ऐसा हुआ कि वह फिर खाट से उठ न सकीं। एक रात को उनकी साँस भी टूट गई। लड़के-लड़कियों के लिए यह कोई शोक का अवसर न था। वे बहुत समय से भगवान से उनकी मुक्ति के लिए प्रार्थना करते आ रहे थे। मृत्यु तड़के हुई थी। तब से जरवेस लैन्टियर और कूपे लाश के पास बैठे रहे। शव-क्रिया के विषय में बिल्कुल चुप थे मानों सबका इन्तजार है। उनके आने के बाद सब तय किया जायगा। लगभग नौ बजे परिवार के सब लोग एकत्र हुए। दूकान की खिड़कियाँ, रोशनदान आदि कुछ न खोले गये थे, काफी अँधेरा था। लोरिले सिर्फ थोड़ी देर रहने के बाद दूकान चला गया था। मैं० लोरिले ने कुछ आँसू बहाने के बाद नाना को मोमबत्तियाँ लाने के लिए भेजा। उसके आने पर भुनभुना उठी, 'बिल्कुल माँ जैसी ही है, कोई काम ठीक से नहीं करती!'

मैं० लिरेट दौड़कर पड़ोस से क्रास पर रंगी हुई क्राइस्ट की मूर्ति ले आई। वह भी इतनी बड़ी थी कि अम्माँ की पूरी छाती ढक लेती थी। किसी ने पवित्र जल की बात उठाई तो नाना को बोतल में जल लाने के लिए गिरजा भेजा गया। धीरे-धीरे सब आवश्यक चीजें इकट्ठा हो गईं। लैन्टियर दाह-क्रिया का खर्च पता लगाने के लिए गया हुआ था, वह भी आ गया।

'मामूली टट्टर (कॉफिन) का दाम दस फ्रैंक है, और अगर कुछ अच्छा चाहो तो दस फ्रैंक और लगेंगे।'

मैं० लोरिले एकदम बोल उठीं—

'पर इस सबका दाम देगा कौन ? हम तो नहीं दे सकते। पिछले हफ़्ते हमारा काफी नुकसान हो चुका है। हाँ, आप लोगों में से कोई चाहे तो कर सकता है। पर मैं समझती हूँ इतना खर्च करना आसान नहीं है।'

कूपे ने तो ऐसे सिर हिलाया जैसे उससे कोई सम्बन्ध ही न हो। लिरेट ने कहा, 'मैं अपना हिस्सा दे सकती हूँ, अधिक नहीं!'

अब तक जरवेस शान्त थी मानो वह कुछ हिसाब लगा रही थी।

'हम लोग तीन हैं, अगर हर एक तीस-तीस फ्रैंक दें तो काम बड़ी अच्छी तरह हो सकता है।'

मै० लोरिले जैसे फट पड़ी—

'मैं ऐसी मूर्खता मानने के लिए तैयार नहीं हूँ। मैं पैसे की परवाह नहीं करती पर मुझे दिखावा से बड़ी चिढ़ है। तुम जो वैसे चाहो कर सकती हो।'

'बहुत अच्छा, मैं सब कर लूँगी। उनके जीते जी मैंने सब कुछ किया ही है। मरने पर भी कर लूँगी।'

लोरिले बहुत बिगड़ी, जोर-जोर चीखने लगी। तुरन्त ही जाने को भी तैयार हो गई पर लैन्टियर ने किसी तरह रोका। झगड़ा इतना बढ़ गया कि लिरेट ने दौड़कर किवाड़ बन्द कर दिये जिससे बाहर किसी को न मालूम हो। अन्दर लड़के शोर कर रहे थे।। लैन्टियर ने सबको डाँट-डपट कर चुप किया। इसी बीच लिरेट और लोरिले कुछ जल-पान के लिए चली गईं। यहाँ भी सब लोगों ने कुछ खाने की कोशिश की पर उनसे खाया न गया। घर में जब लाश रक्खी हो तो खाना कैसे हो सकता है। जरवेस तुरन्त गूजेट के घर गई और साठ फ्रैंक माँग लाई। तीस फ्रैंक लिरेट ने दिये, इस तरह कुल नब्बे फ्रैंक हो गये। धीरे-धीरे शाम होने को आई। सब लोगों ने अनुभव किया कि लाश इतनी देर तक रख छोड़ना नहीं

है। रोना-धोना थोड़ी ही देर होता है। इसके बाद दुःख चिन्ता के रूप में बदल जाता है उस समय सबका दुःख कम हो गया था और वे ठीक से बातें करने लगे थे।

थोड़ी ही देर बाद मकान-मालिक मेयर स्काट ने प्रवेश किया। लाश के पास जाकर पहले तो वह घुटनों के बल झुका, फिर दो क्षण प्रार्थना की उसकी प्रवृत्ति काफी धार्मिक थी। इसके बाद वह बाहर वाले कमरे में आया और कूपे से बोला—

'मैं पिछले दो महीनों का किराया लेने आया हूँ। बोलिये, क्या कहते हैं?'

जरवेस इतने में आगे आ गई। स्वयं बोली—

'अभी तो नहीं हो सकता, आप देखते ही हैं कि हम पर क्या मुसीबत पड़ी हुई है।'

जरवेस अपने रिश्तेदारों के आगे तकाजा करते देख कर काफी क्षुब्ध हो उठी थी।

'ठीक है, लेकिन हम लोगों की भी मुसीबतें होती हैं। अब मैं अधिक नहीं ठहर सकता। मुझे किराया चाहिए बस और कुछ नहीं। और अगर कल तक किराया नहीं मिल जाता तो मुझे मजबूर होकर आपको निकालना पड़ेगा।'

जरवेस एकदम नम्र पड़ गई, हाथ मलते हुए कुछ कहने को थी।

'नहीं, कुछ नहीं, ज्यादा बातचीत मैं नहीं करना चाहता। लाश रक्खी हुई है। उनकी इज्जत का ध्यान पहले करना चाहिए।' और दूकान के बाहर जाते-जाते कहा, 'मुझे क्षमा कीजिएगा पर याद रहे कल तक रुपया मिल जाना चाहिए!

लाश को प्रणाम करता हुआ बाहर चला गया।'

उसके जाने के बाद सब स्त्रियाँ मिलकर आ बैठीं, पॉसन और वरजिनी भी आ गए थे। पास ही एक बर्तन में काफी गर्म हो रही थी।

उन लोगों को वह रात पूरी जाग कर बितानी थी। लैन्टियर ने सबके सामने ही मेयर स्काट की आलोचना शुरू की, 'ऐसे समय पर तकाजा करना कहाँ की शराफत है?'

'बिल्कुल जाहिल है, जाहिल!' पर फिर कुछ आवेश में आकर, 'पक्का मक्कार है, कहीं जरवेस की जगह मैं होता तो मैं तुरन्त ही छोड़कर चल देता।'

जरवेस सब सुनती तो रही पर उसने ध्यान न दिया। लोरिले तो भीतर ही भीतर काफी खुश थी। जरवेस की दूकान जो जा रही थी, बोल उठी, 'लैन्टियर का कहना बिल्कुल सही है।' लोगों ने कूपे को इस पर कई बार धक्के दिये मानों उसको कुछ स्मरण दिलाना चाहते हैं। जरवेस बड़ी उदास हो गई थी, ऐसा लग रहा था कि अब वह दूकान बेच देगी। तभी वरजिनी ने कुछ तेज आवाज में कहा—

'मुझे दे दो, मैं तैयार हूँ, मैं तुम्हारा पिछला किराया भी दे दूँगी?' जरवेस को जैसे चपत लगी उसकी सारी उदासी हवा हो गई, चेहरा तम-तमा उठा, बोली, 'कभी नहीं, कभी नहीं, इसके लिए धन्यवाद। मैं स्वयं सब ठीक कर लूँगी, क्या मैं काम नहीं कर सकती?'

लैन्टियर बीच ही में बड़ी नम्रता से बोल उठा—

'कोई बात नहीं! छोड़ो अभी, फिर बात करेंगे, कल सही!'

सारी रात पूरे परिवार को जागरण करना था। नाना को बाश के यहाँ सोने के लिए भेज दिया गया था। पर उसने जाते समय बड़ी जिद्द की। पॉसन और वरजिनी करीब आधी रात तक रहे। सब लोग बैठे बातें करते रहे। वरजिनी ने देहात की बात छेड़ दी। 'मैं चाहती हूँ कि मेरी लाश एक पेड़ के नीचे गाड़ी जाय। उस पर तमाम फूलों के पौधे और घास उगें।' लिरेट ने भी बताया कि उसने अपनी अल्मारी में एक बढ़िया रेशमी कपड़ा रख छोड़ा है। उसके मरने के बाद वही कफन

होगा। इसी तरह बातें करते-करते जब पॉसन और वरजिनी चलने लगे तो लैन्टियर भी उनके साथ हो लिया—

'यहाँ बिस्तरों की कमी है, मेरे जाने से मेरा बिस्तर खाली रहेगा, औरतें बारी-बारी से थोड़ा आराम कर लेंगी!'

पर किसी को यह आराम करना पसन्द न आया। वे स्टोव के पास सब इकट्ठी बैठी रहीं, इधर-उधर की बातों में रात कटती रही। कभी वे काफी पीतीं और कभी एक-एक करके लाश देखने जातीं। लाश भीतर बायें कमरे में मोमबत्ती की मीठी रोशनी में रक्खी हुई थी। किसी तरह राम-राम करके रात कटी। सबेरा होते ही बैजो चाचा एक काफिन लेकर आए। उनका काम काफिन पहुँचाना और लाश उठवाना था। अपने व्यक्तिगत जीवन में उनको बहुत लापरवाह माना जाता था, पर जब उन्होंने जरवेस को सामने खड़ी पाया तो आँखें गड़ा कर देखते हुए बोले—

'अरे, क्षमा करना, मैं समझा तुम्हारे लिए चाहिए?'

और वह जाने लगे। जरवेस एकदम पीली पड़ गई—

'काफिन छोड़ जाइए।'

बैजो को अब अपनी गलती ज्ञात हुई जिसने जरवेस के हृदय पर आघात किया था और उसने कई बार क्षमा माँगी—

'कल लोग कुछ ऐसी ही बात कर रहे थे। मैंने समझा कि तुम्हीं होगी, सुनने में फर्क हो गया होगा! ईश्वर को धन्यवाद, तुम जिन्दा हो पर मुझे धन्यवाद न देना चाहिए। जिन्दगी कोई अच्छी चीज तो है नहीं।' जरवेस का हृदय काँप उठा, उसे लगा जैसे बैजो अभी उसे अपने काफिन में बन्द करके दफन कर देगा, उसे स्मरण हो आया एक बार बैजो स्वयं कह रहा था, 'मैं सचमुच एक ऐसी स्त्री को जानता हूँ जो मन से चाहती है कि मैं उसे जिन्दा ही बंद करके गाड़ दूँ, इसके बदले वह बहुत

कृतज्ञ होगी !' पर तभी जरवेस के होठों पर ये शब्द अचानक बुदबुदाए—

'खूब पिये है ?'

हँसते हुए बैजो कह रहा था—

'खैर रक्खा रहेगा, तुम्हारे ही लिए है। खबर तो लग ही जाएगी। मुझे ऐसा-वैसा मत समझो, मैं अक्सर स्त्रियों के लिए स्वर्गदूत बन जाता हूँ। मैंने न जाने कितनी औरतों को इन्हीं बाहों में भर कर पेड़ों के साये में सुलाया है; उनमें से कभी किसी ने शिकायत तक नहीं की !'

लोरिले बोल उठी, 'अच्छा बन्द करो, जाओ तो यहाँ से ऐसी बातें बकने का यह समय नहीं है !'

दस बज गए। कई पड़ोसी और जान-पहचान वाले दूकान में इकट्ठा हो गए थे। घर में लोग अन्दर थे। सब लोगों ने लाश को प्रणाम किया और जनाजा चल दिया। लोरिले और कूपे आगे-आगे थे, सब स्त्रियाँ पीछे। जरवेस काफी पीछे थी, दूकान बन्द करने में कुछ समय लग गया। सब लोग चुपचाप काले कपड़े पहने चले जा रहे थे। जैसे ही जरवेस ने दौड़ कर सबके साथ होना चाहा उसे दिखा कि गूजेट बगल वाली गली से आया और एक फीकी हँसी के साथ अभिवादन किया। देखते ही जरवेस का जी भर आया, आँसू छलक पड़े। वह अम्माँ के लिए उतना न रोती थी जितना अपने लिए। उसकी इस रुलाई को देखकर लोरिले आदि समझती थीं कि मक्कार है, बन रही है।

चर्च में थोड़ी देर का काम था। इसके बाद कब्रिस्तान की ओर जनाजा चला, लोग फाटक से ही कटने लगे। कूपे आगे निकल गया था। जरवेस अकेली ही थी गूजेट भी जाने के विचार से खड़ा हो गया था। जरवेस ने गूजेट को हाथ से संकेत किया, वह पास आ गया—

'मुझे तुमसे कुछ काम है,' जरवेस की आवाज जैसे डूब रही हो, 'कहने में शर्म तो लगती है पर क्या करूँ लाचार हूँ, मुझे पैसे चाहिए।'

'मैं तुम्हारे जितना काम आ सकूँ उतना ही अच्छा।.........लेकिन माँ से न बताना, उन्हें दुख होगा। हम दोनों में कुछ बातों पर बड़ा मतभेद है।'

जरवेस जैसे निरीह हो गई, चेहरे पर भोलापन उभर आया। उसके मन में कहीं कुछ ऐसा था जो उसे गूजेट की बात न मानने के लिए कोस रहा था। 'वह उसके साथ क्यों न चली गई थी?' एकाएक उसका मन फिर उसी तरफ झुका, शरीर काँप उठा।

'क्यों, मुझसे गुस्सा तो नहीं हो, सच बताओ!' जरवेस के स्वर में अनुनय था।

'नहीं, गुस्सा तो नहीं हूँ, पर दुखी जरूर हूँ। अब कुछ नहीं रह गया, हमारे तुम्हारे सम्बन्ध आज से हमेशा के लिए खतम!'

और बड़े कदम रखता हुआ एक ओर चल दिया, मुड़कर देखा भी नहीं। जरवेस के आगे जमीन घूम गई, अँधेरा छा गया।

'अब कुछ.........नहीं.........रह.........गया। तो मेरे जीवन में अब बचा ही क्या?'

एक-एक शब्द होठों पर फूटते रहे।

घर आकर चुपचाप जमीन पर बैठ गई। एक बड़ा-सा शराब का गिलास हाथ में ले लिया और अपनी यातना में डूबी रही। जब उसकी बोझिल पलकें ऊपर उठीं तो वरजिनी सामने खड़ी थी।

'तुम्हें दूकान चाहिए, ले लो!'

शाम को जरवेस अकेली बैठी थी। उसका मन टूटा था ही। अपने को बिल्कुल निराश पा रही थी। घर जाने कितना बड़ा, और साँय-साँय करता हुआ लग रहा था। उसके सामने एक वीरान था! ऐसा लगता

कि अम्माँ की समाधि के साथ उसने अपनी जिन्दगी की सबसे कीमती चीज, अपनी आशाएँ, विश्वास सभी दफना दिये थे। उसका हृदय बिल्कुल रिक्त, मस्तिष्क शून्य था। उसमें इतनी शक्ति नहीं थी कि अपने भावों अनुभावों की आलोचना कर सकती। इधर-उधर आती-जाती थी पर लगता था कि कोई काली छाया उसे अपने बोझ से दबाये हुए है।

जब दस बजे सोने का समय आया, नाना मचल पड़ी। वह दादी की खाट पर लेटेगी। जरवेस मन ही मन कुछ सहमी, उसे डर-सा लगा पर नाना निश्चिंत थी। माँ को चुप देख कर बिस्तर पर लेट गई और कपड़ों में अपने को ढक लिया।

१०. विनाश और परिवर्तन

नया घर बिल्कुल बिजर्ड की बगल में था। दरवाजे के सामने ही एक अँधेरी गुफा जैसी कोठरी थी। उसी में चाचा ब्रू पड़े रहते थे। अब जरवेस के पास एक छोटा और एक कुछ बड़ा दो ही कमरे थे। नाना का बिस्तर छोटे वाले कमरे में था। रात को दरवाजे खुले ही रखने पड़ते थे, ताकि हवा की कमी न पड़े।

कुछ दिन तक तो वह आँसुओं में ही डूबती-उतराती रही। मन बिल्कुल टूटा हुआ और शरीर थका-सा था। कमरे की तंगी के बीच उसे लगता जैसे दबी जा रही है। अक्सर घबरा कर खिड़की के पास जा खड़ी होती। बाहर सहन भी किसी काम का न था, न साफ हवा थी न कोई दृश्य। उसके कमरे के आगे ही वह खिड़की थी जिसे देखकर एक बार जरवेस का मन उसमें रहने को ललचाया था। सेम की लतर टेढ़ी-मेढ़ी ऊपर फैल रही थी। उनका कमरा साये की ओर पड़ता था। एक गमले में एक फूल का पौधा मुर्झाया-सा लगा था।

धीरे-धीरे वह इस वातावरण में रम गई। उसका मन भी कुछ स्वस्थ हो गया। थोड़ा बहुत सामान जो उसने वरजिनी के हाथ बेच दिया था, उससे उसे पैसा भी मिल गया था, जिसकी वजह से सब ठीक-ठाक करने में बड़ी सहायता मिली थी।

अब मौसम भी अच्छा था। कूपे ने काम पर जाना शुरू कर दिया था। इन दिनों शराब छोड़ दी थी, देहात काम करने चला गया था। खुली साफ हवा और सुन्दर धूप ने उसके स्वास्थ्य पर भी काफी असर डाला था। अक्सर ऐसा होता है कि जब वातावरण, विशेषतया शराब और दुर्गन्ध से भरा हुआ पेरिस का वातावरण, बदल जाता है तो आदमी भी वदल जाता है। तीन महीने बाद जब वह लौटा तो उसका सारा मुर्दापन दूर हो गया था, चेहरे पर चमक आ गई थी, कमा कर भी लगभग चार सौ फ्रैंक लाया था। इससे कुछ तो पॉसन को दे दिया गया और कुछ कर्जे भी चुका दिये गये। अभी तक तकाज़ों और बुरी-भली बातों के डर से जरवेस कहीं जाती तक न थी। अब दो-तीन गलियाँ कर्ज चुक जाने से खुल गईं। उसने भी अपनी पुरानी मालकिन मै० फाकनियर के यहाँ वही लोहा करने का काम शुरू कर दिया था। मैडम बहुत ही दयालु थी और कोई उसकी थोड़ी-सी तारीफ करदे तो उसके लिए सब कुछ करने को तैयार हो जाती थी।

जरवेस इसी तरह परिश्रम करती हुई मितव्ययता बरत कर सारे कर्ज चुका सकती थी पर जाने क्यों जिन्दगी का यह ढर्रा उसे विशेष पसंद न आया। वह जब पॉसन लोगों को अपनी दूकान में देखती तो उसका मन दुखी होता। ऐसा नहीं था कि उसे डाह होती रही हो। डाह उसके स्वभाव में भी नहीं थी पर जब उसके पति की बहिनें वरजिनी की तारीफ करतीं तो उसे असह्य हो जाता। इतनी अच्छी दूकान कभी किसी ने देखी न होगी। जब पहले-पहल वरजिनी ने खरीदा था तो इतनी गन्दी थी कि क्या कहा जाय। सिर्फ उसकी सफाई में तीस

फ्रैंक लग गए थे।

वरजिनी ने बहुत सोच-विचार के बाद किराने की दूकान शुरू की, साथ ही चाय, शक्कर, काफी, चाकलेट आदि भी रक्खे। लैन्टियर ने उसे सलाह दी थी कि इनकी बिक्री भी अच्छी होती है और मुनाफा तो अंधाधुन्ध है। दूकान फिर से पोती गई थी, कुछ अलमारियाँ और दराज लगाये गये थे, एक काउन्टर भी बनवाया गया था। खर्च काफी हुआ था। पॉसन की जो छोटी-सी जायदाद थी और जिसे वह बचा कर रखना चाहता था, बेदाग न रह सकी। पर वरजिनी खुश थी, उसकी इच्छा पूरी हो गयी थी। लोरिले भी जब बातें करती तो तारीफ के पुल बाँध देती।

लोगों में यह खबर फैल रही थी कि लैन्टियर ने जरवेस को छोड़ दिया है पर बात ऐसी न थी, वह अब भी जब जी चाहता जरवेस के कमरे आ धमकता। वरजिनी और उसकी बदनामी जरूर फैल रही थी। बरजिनी ने दूकान तो ले ही ली, उसका प्रेमी भी छीन लिया। यही बात सब लोगों की जबान पर थी। लोरिले भी जरवेस के सामने लैन्टियर, वरजिनी और दूकान के अलावा किसी चौथी चीज का जिक्र तक न करती थी। वैसे जरवेस को न कोई ईर्ष्या थी न कोई जलन, पर जब यह बात सुनती तो उसका जी खौल उठता। वह शांत न रह पाती। लेकिन तब भी उसने अपने मुँह से एक शब्द न निकाला। वह नहीं चाहती थी कि इन लोगों के आगे अपने मन की कमजोरी जाहिर करे। पर एक दिन उसमें और लैन्टियर में कुछ कहा-सुनी हो ही गई। लैन्टियर बिगड़ता हुआ चला गया और फिर महीनों नहीं दिखा।

कूपे का व्यवहार और भी विचित्र था। अपने आप में संतुष्ट तो था ही, साथ ही अंधा भी था। उसे यह न दिखाई पड़ता था कि घर में क्या हो रहा है, क्या नहीं। जब उसने देखा कि लैन्टियर गुस्सा हो गया है, नहीं आता-जाता तो जरवेस को कोंचने लगा—

'क्यों आजकल तुमको तुम्हारे सभी प्रेमी छोड़ रहे हैं, गूजेट तो छोड़ ही चुका है, लैन्टियर ने भी आँख फेर ली, अब मैं ही रह गया हूँ !' कहता तो वह ऐसे था मानों हँसी कर रहा हो पर जरवेस को लगता जैसे बिल्कुल सही हो। वह सोचती, 'एक आदमी जो साल के पूरे ३६५ दिन नशे में मुत्त रहता हो वह भला इस तरह मजाक कर सकता है। अक्सर आदमी लोग बीस साल की उम्र में बड़े ईर्ष्यालु होते हैं और तीस साल की उम्र तक संतोषी बन जाते हैं। शराब ही उन्हें ऐसा बना देती है।'

लैन्टियर वैसा ही उदासीन बना रहा। उसने यह अच्छाई की कि दोनों परिवारों, पॉसन और कूपे, में लड़ाई नहीं करवाई। वरजिनी और जरवेस दोनों जब मिलतीं तो बड़ी ही शिष्टता बरततीं। लैन्टियर इन दिनों वरजिनी पर उसी तरह छाया था जैसे पहले जरवेस पर और धीरे-धीरे उसी तरह दूकान को खा-उड़ा रहा था।

नाना इन दिनों बड़ी शरीर हो रही थी, तेरह वर्ष की दुबली-पतली, उद्दंड बालिका देखने में ही बड़ी निर्भीक थी। पिछले साल इसी कारण स्कूल से निकाल भी दी गई थी पर अध्यापक महोदय ने यह सोचकर कि फिर उसे किसी स्कूल में जगह न मिलेगी इस साल भर्ती कर लिया था। उस दिन घर में येशु भोज था। नाना के लिये यह पहला मौका था। सबों ने कुछ न कुछ भेंट देने का वादा किया था। वह मारे खुशी के नाची-नाची फिरती थी। लोरिले ने कई चीजें देने को कहा था, लिरेट ने सुन्दर-सा कप और जाली, वरजिनी ने एक पर्स तथा लैन्टियर ने एक प्रार्थना की पुस्तक के लिए कह रखा था। पॉसन ने उसी दिन गृह-प्रवेश की दावत देने का निश्चय किया। बाश तथा कूपे दोनों परिवारों को आमंत्रित भी कर दिया।

उसी दिन शाम को नाना को सभी चीजें मिल चुकी थीं। वह फूली न समाती थी। एक मेज पर सजाए हुए उन्हें देख रही थी। इतने में कूपे ने नशे की हालत में प्रवेश किया। कूपे को पेरिस की हवा फिर लग

गई थी, सारी बुराइयों ने उसे फिर दबोच लिया था, शराब पीना, पत्नी को मारना, बच्चों को गंदी-गंदी गालियाँ देना उसने फिर सीख लिये थे। नाना ने भी यही गालियाँ सीख ली थीं। कोई बात होने पर झट गाली दे बैठती थी। कूपे ने आते ही बिगड़ कर कहा—

'माँ-बेटी, दोनों का जोड़ा है। मैं जानता हूँ कि यह सब शोरगुल किस लिए है। नए कोट की फरमाइश है, दिखाने के लिए! अभी पकड़ कर एक बोरे में बंद करके ऊपर से बाँध दूँगा, फिर जाकर दिखाना मास्टर को! कैसी अच्छी लगती है तब तू!'

नाना पहले तो सुनती रही फिर एकाएक घूमकर देखने लगी। उसे उस समय पादरी की सारी शिक्षाएँ भूल गईं, सारी बड़ों की बातें उसके दिमाग से उतर गईं। धीरे से भुनभुना उठी—

'जानवर कहीं का!'

कूपे बोला नहीं, पड़कर सो गया। दूसरे दिन भी बहुत शान्त था। गिर्जाघर में उसने बड़ी श्रद्धापूर्वक प्रार्थना की। नाना को अच्छे-अच्छे कपड़े पहने देखकर उससे खेलता भी रहा। उस दिन उसे लगता था कि वह बड़ा सुखी है। शाम को पॉसन की दावत भी अच्छी रही। वरजिनी, जरवेश, लैन्टियर में खूब बातें हुईं। सब बड़े अच्छे 'मूड' में रहे। लड़कियों ने तो और भी हद कर दी, नाना और पालिन ने खूब ऊधम मचाया। खाते-खाते बीच में इन दोनों के भविष्य पर बात आ पड़ी। बाश ने कहा—

'मैं तो पालिन को एक फैक्ट्री में किये देती हूँ, अभी से ५, ६ फ्रैन्क हर हफ्ते कमाने लगेगी।'

जरवेस ने अभी कुछ तय ही न किया था। नाना ने भी कोई रुझान न दिखाई थी। उसको क्या, दिन भर खाना और तितली की तरह इधर-उधर फुदकना, यही दो काम थे।

'मैं तो अपनी नाना को हार बनाना सिखाऊँगी। बड़ा अच्छा और साफ काम है, कोई झंझट नहीं होता,' लिरेट बोली।

'मुझे इसमें कुछ कहना ही नहीं है, नाना की बात है, अगर उसे पसन्द है तो करिये, क्यों नाना तुम गजरे बनाओगी!' जरवेस ने नाना की ओर देखते हुए पूछा। वह खाने में जुटी थी, अपनी आँखें प्लेट पर लगाये रही मानों सुना ही न हो। फिर एकाएक धीरे से मुसकुराते हुए बोली—

'हाँ अगर तुम चाहती हो तो मैं तैयार हूँ।'

सब कुछ फौरन तय हो गया। कूपे ने भी कह दिया कि लिरेट चाहे तो आज ही लिवा ले जाय और अपने साथ काम में लगा दे। इसके बाद और बातें शुरू हुईं। दोनों लड़कियाँ फिर खाने में जुट गईं थीं। एकाएक बाश ने कहा—

'ये दोनों कितनी बड़ी हो गई हैं, पूरी जवान दिखती हैं, शादी-विवाह की फिकर करनी पड़ेगी।' इसके साथ ही लड़के-बच्चों, घर-परिवार की तमाम बातें उठ पड़ीं। बातें सुनकर वे दोनों आपस में खूब हँसती रहीं, मेज के नीचे एक दूसरे का हाथ पकड़ कर खींचतीं, गुदगुदातीं या कभी कुछ धीरे से कह देतीं। लैन्टियर बैठा इनकी ओर देख रहा था, उसे कुछ मजा आ रहा था।

'क्यों तुम्हारे पति तो होंगे ही, न सही बड़े, छोटे ही सही।'

नाना लाल पड़ गई, पर फिर बोली—

'क्यों नहीं, मेरा पति विक्टर फाकनियर है, मैं उसी से विवाह करूँगी और किसी से नहीं!'

सब हँस पड़े। मै० लोरिले ने बाश से रास्ते में कह दिया, 'नाना मेरी भतीजी है, वैसे मुझे बहुत प्यारी है पर अगर फूलों का कारबार करेगी तो घर-घर घूमेगी। फिर जो कुछ होगा तुम जानती ही हो, लेकिन हटाओ मुझे क्या करना है?'

उस परिवार के लिए यही आखिरी दिन था जिसे वह खुशी का दिन कह सकते थे। दो साल और बीत गए। उनकी हालत दिन पर दिन गिरती गई। पतन और बेईमानी का भी प्रारंभ हो गया। शराब की ऐसी लत पड़ गई कि चाहे खाना न मिले भूखे रहें पर ब्राँडी जरूर चाहिए। धीरे-धीरे यह नौबत आ गई कि किराया भी न अदा हो पाता था। जनवरी का महीना था, पास में एक पाई न थी। बाश ने घर छोड़ देने की आज्ञा दे दी! जाड़ा गजब का था। तीखी सर्द हवा चल रही थी, शरीर जैसे गल रहा था।

मेयर स्काट ओवरकोट पहने हुए दस्तानों में हाथ छिपाये आया और बोला—

'घर खाली कर दो, हमसे कुछ मतलब नहीं, चाहे तुम नाली में सोओ चाहे मैदान में!'

पड़ोस के सब घरों में खलबली मच गई। सब लोगों का किराया पड़ा हुआ था। लोगों ने आकर चापलूसी करनी शुरू कर दी जिससे उनके ऊपर यह मुसीबत न आ पड़े। जरवेस के पास कोई चारा न था, बिस्तर बेचा और उसके पैसे से किराया दे दिया। नाना अभी कुछ कमाती न थी। जरवेस भी अब काम कम कर पाती थी। फाकनियर ने उसकी मजदूरी भी घटा दी थी। जरवेस अब अक्सर देर को भी पहुँचती, कभी-कभी दो-तीन दिन न जाती, पुटोस भी फाकनियर के यहाँ काम करती थी और उससे अधिक कमाती थी। इस हालत में अगर सप्ताह के आखीर में जरवेस को थोड़े से पैसे मिलते तो इसमें क्या आश्चर्य था!

और कूपे तो पहले काम ही न करता था। अगर कहीं कुछ करता भी तो पैसे घर न लाता था। जरवेस ने उसका भरोसा भी छोड़ दिया था। पहले कुछ दिन तो वह कह देता, 'जेब फटी थी गिर गए, चोरी हो गए,' पर फिर कुछ न कहने लगा। मानों पत्नी और बच्चों की कोई जिम्मेदारी उस पर है ही नहीं। जरवेस से अब रोज लड़ाई होती थी, पति-पत्नी का

प्रेम, पिता और बच्चों का स्नेह, आपस का लगाव सब नष्ट हो चुका था। अब उनके बीच कुछ ऐसा नहीं था जो एक दूसरे को बाँधता, सहानुभूति रखने के लिए प्रेरित करता। जरवेस भी अब उसे किसी नाली में पड़ा देखकर न लजाती न उठाने की कोशिश करती। यह बात जरूर थी कि अगर वह नाली में पड़ा देखकर और ढकेल न देती तो उधर से निकलना जरूर न चाहती। एक दिन मारे गुस्से के उसने यहाँ तक कह दिया, "मैं तो चाहती हूँ यह भी किसी दिन लद कर आये। आखिर ऐसे आदमी से दुनियाँ को क्या फायदा?' खाता है पीता है और टाँग फैला कर सोता है।'

उसके लड़के तक उसे भला-बुरा कहने लगे। जरवेस अक्सर अखबारों में पढ़ती, 'आज बस से एक आदमी मर गया', 'अमुक दुर्घटना में इतने मरे, इतने घायल'। बच्चे मारे घृणा के कह उठते, 'यह भी क्यों न उन्हीं में मर गया?' जरवेस को अपनी मुसीबतें और कष्ट जो थे वे तो थे ही! उसके चारों ओर भी यही गरीबी और कत्ल का राज्य था। सभी घरों में उपवास पड़ा रहता था। कभी किसी कोने से सिकती हुई रोटियों या पकते हुए भोजन की सुगन्ध न आती। हाँ, भूखे बच्चों और औरतों की चीखें जरूर सुन पड़तीं।

जरवेस को सबसे ज्यादा दर्द चाचा ब्रू पर होता। वह प्रायः दिन भर घास-फूस में लिपटा हुआ सीढ़ी की बगल वाली गुफानुमा कालकोठरी में पड़ा रहता। कई दिन लगातार वह बाहर न निकलता। कभी-कभी लोग दरवाजा खोलकर चुपके से झाँक लेते कि वह जिन्दा है कि नहीं। जब जरवेस के पास थोड़ा भी भोजन होता तो वह उसे जरूर देती। वैसे उसे आदमी जाति से ही घृणा हो गई थी और इसका भी कारण उसका पति ही था पर उसे अब भी पशुओं के प्रति बड़ी ममता थी। वह चाचा ब्रू को एक अच्छे कुत्ते जैसा ही समझती थी।

चाचा बैजो उसका पड़ोसी था। बीच में बस एक लकड़ी का पर्दा ही

था। ब्रैजो के मारे भी वह काफी परेशान होती थी। रात को वह नशे में चूर आता, अपना हैट जोर से फेंकता, कोट उतार कर झाड़ता, जूते खोल कर दूर फेंकता, एक आवाज-सी होती। रात के सूनेपन में वह सब कुछ उसका एक-एक काम करना सुनती, वह अनजाने ही भद्दे-भद्दे गाने गुन-गुनाया करता। इसके बाद वह अपने बिस्तर पर लेटकर सीटी बजाता, गाता रहता। जरवेंस कल्पना करती मानो कोई लाश दफन में लिपटी पड़ी हो। वैसा दृश्य उसके सामने घूम जाता। वह काँप उठती। उस आदमी को देखकर ही उसे डर लगता, उसकी भयानक हँसी से वह दहल उठती। वह कभी-कभी घर बदलने की भी बात करती पर न कर पाती क्योंकि सब कुछ होते हुए भी ब्रैजो में उसे एक आकर्षण भी दिखता था। उसके दिमाग में हमेशा वही शब्द गूँजा करते—

'मैं किसी दिन तुमको भी लेने आऊँगा और अपनी इन्हीं बाहों में ले जाकर किसी सुन्दर मधुर छाया में लिटा दूँगा, जहाँ न तुमको भूख लगेगी न प्यास!' उसका मन होता, 'एक बार देखें सही, कैसे होता है, अगर जाड़े में ही हो तो ज्यादा अच्छा पर ऐसा हो भी कैसे सकता है। सोना और मौत बराबर है।' वह सहम उठती। उसके मन में अपने को मार डालने की जो भावना जागी होती या आत्महत्या के जो विचार उठे होते धीरे-धीरे लुप्त हो जाते। उसे लगता यह दुनिया बड़ी अच्छी है इसका मोह वह कभी नहीं तोड़ सकती।

एक दिन रात को उसकी तबियत कुछ खराब थी। जी घबरा रहा था। ऐसे मौकों पर वह अक्सर खिड़की से बाहर झाँक कर देखने लगती थी, पर उस दिन जाने क्यों लकड़ी की दीवार को ही थपथपाने लगी।

'ब्रैजो चाचा!.........ब्रैजो चाचा!!'

वह अपने जूते उतार रहा था और साथ ही कोई गाना भी गाता जाता था।

'क्यों क्या बात है?'

आवाज सुनते ही जरवेस जैसे चौंक उठी, क्या वह ऊँघ रही थी? एकाएक उसने क्या कर डाला, क्या उसने दरअसल थपथपाया है? उसने इसी तरह के प्रश्न अपने आप से पूछे और चुपचाप एक कोने में दुबुक कर खड़ी हो गई। डर के मारे उसे लग रहा था बैजो का हाथ अब उसका माथा छू रहा है, वह कह रही है 'नहीं' 'नहीं' मैं अभी न जाऊँगी, 'मैंने तो पुकारा भी नहीं था?' अपने मन को समझा रही थी, 'शायद कोहनी लग गई थी।' इसके बाद बैजो आकर उसे अपनी बाहों में ले जाएगा। उसका अंग-अंग पसीने से डूब गया। आँखों के आगे बिल्कुल अँधेरा छा गया।

'क्या बात है? क्यों कुछ काम है, मेरी जरूरत है?'

उधर से आवाज आई। जरवेस का हृदय जैसे बैठ गया। फटी हुई आवाज में बोली—

'नहीं नहीं! कुछ नहीं, धन्यवाद!'

बैजो सो गया पर वह पड़ी जगती रही। न कभी हिलती न डुलती और न जोर से साँस ही लेती, कहीं वह समझ न ले कि मैं बुला रही हूँ। वह कहती, 'कुछ भी हो जाय, उसकी शरण जीते जी न लूँगी।' उसने यही प्रतिज्ञा बार-बार दुहराई, मन अशांत था।

जरवेस जल्दी घबराती न थी। वह सोचती, 'साहस से काम लेना चाहिए, देखो न विजर्ड के ही यहाँ छोटी-सी लैली गुड़िया जैसी तो है पर कमरा कैसे सजा कर रखती है। जबसे माँ को बाप ने नशे में मार डाला है दो-दो बच्चों को कैसी अच्छी तरह सँभालती है, कोई माँ क्या सँभालेगी? ऊपर से बाप की मार भी सहती है!' और उसका मन दृढ़ हो जाता।

लैली का बाप पक्का शराबी था। पत्नी के मर जाने के बाद जब नशे में डूबा घर आता तो किसी को न पाकर लैली को ही मार चलता। बेचारी छोटी-सी तो थी ही, एक ही मुक्के में सारा मुँह लहूलुहान हो जाता,

गालों पर उँगलियों के निशान बन जाते और कई दिनों तक बने रहते। छोटी-छोटी बातों पर वह उस पर झपट पड़ता। लैली न कभी रोकती, न विरोध करती। वह सिर्फ अपना मुँह बचाने की कोशिश करती। अगर चोट ज्यादा लग जाती तो रुलाई न आने देती, चीखों को मुँह से बाहर न निकलने देती, क्योंकि कहीं पड़ोस वाले न सुन लें। इसमें उसका अपमान होता है। वह अपना अपमान न सह सकती थी। जरवेस के मन में लैली के प्रति बड़ा स्नेह था। वह उसे बच्ची कभी न मान पाती, समझती कोई समझदार स्त्री है जिसने कुछ दुनिया देख रक्खी है।

एक दिन वह नाना का एक कपड़ा उलट कर सी रही थी। इतने में उसकी पीठ का कपड़ा जरा खिसक गया, जरवेस की निगाह पड़ गई। सारी पीठ स्याह पड़ गई थी, कई जगह छिल गया था, बाँह से खून बह रहा था—उसके बाप ने—जंगली बाप ने बच्चे की सारी दुर्गति कर रक्खी थी। उसके दिमाग में वैजो और उसका काफिन घूम गया। यह बच्ची कितने दिन सह सकती है? ज्यादा जी नहीं सकती! लेकिन लैली ने कुछ भी भला-बुरा कहने की जगह जरवेस से बिनती की कि वह कभी किसी के आगे इसके बारे में मुँह न खोले। 'वे क्या जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, वे नशे में रहते हैं। कम से कम मैं उनको बिल्कुल अपराधी नहीं समझती, वे तो तब बिल्कुल पागल रहते हैं। ऐसे में वे क्या जानें क्या भला है, क्या बुरा है?' उस दिन से जरवेस हमेशा देखती रहती और जब कभी सुनती कि बिजर्ड आया है कान लगा लेती कि कहीं लैली को मार तो नहीं रहा है। काफी दिन बीत गए, उसे कभी ऐसा अवसर न मिला।

एक दिन दोपहर को लैली अपना सब काम खतम करके बच्चों के साथ खेल रही थी। खिड़की खुली थी। हवा के मंद झोंके आकर बार-बार किवाड़ भड़भड़ा जाते थे। कभी-कभी धीरे से खटखट होता जैसे कोई हो।

'ओह, श्रीमान हवा हैं। आइए, कैसे मिजाज हैं आपके ?'

और उसने जैसे अभिवादन में सिर झुका दिया। बच्चों ने भी वैसा ही किया। इससे जाने क्यों बड़ी प्रसन्न हो उठी। इतनी प्रसन्न वह बहुत ही कम होती थी।

'श्रीमान् हवा अंदर आइए!' उसने फिर दुहराया। लेकिन इस बार जोर का धक्का लगा, विजर्ड अंदर आ चुका था। सारी की सारी स्थिति बदल गई। दोनों बच्चे एक कोने में दुबुक गए, लैली ही डर से काँपती हुई बीच कमरे में खड़ी रही। विजर्ड के हाथों में एक नया कोड़ा था, उसकी आँखें अजीब ढङ्ग से चमक रही थीं। उसने किसी को मारा नहीं, खाट पर पड़ रहा। उसके मुँह पर एक विषैली हँसी थी, उसकी स्याह पड़ी दाँतों की चमक उसे और भी भयानक बना रही थी। उस दिन वह नशे में चूर था।

वह पड़ा रहा। कपड़े भी नहीं उतारे। सिर्फ लैली को कमरे में इधर-उधर चलते-फिरते देखता रहा। उसके ऐसे देखने से लैली बड़ी घबरा रही थी, बहुत सम्भल-सम्भल कर चलती-फिरती थी पर एकाएक एक कप तोड़ ही दिया। उसने बिना कुछ क्रोध जताए हुए यों ही कोड़ा दिखाते हुए कहा—

'देख इधर बेवकूफ, मैंने पचास सू खर्च किए हैं। यह कोड़ा तेरे ही लिए है। पर मुझे इससे बड़ा काम निकालना है। देखती है यह कोड़ा कितना लम्बा है। अब मुझे तेरे पीछे-पीछे दौड़ना न पड़ेगा। मैं यहीं से पड़े-पड़े तुझे कहीं भी पा सकता हूँ। और कप तोड़ेगी, क्यों ? इधर तो आ,' और जरा उछल कर फिर, 'तो श्रीमान हवा को बुला, हाँ.........!'

वह उठ कर भी न बैठा; तकिये में सिर गाड़े-गाड़े ही उसने कोड़े को जोर से फटकारा। सड़ाक की आवाज हुई, और उसकी पतली देह में लतर की तरह लिपट गया, वह जमीन पर आ गिरी, उसने फिर कोड़ा सड़काया

'उठ, उठती है कि नहीं ?'

लैली उठ खड़ी हुई। बिजर्ड के मुँह पर फेन आ गया, आँखों की पुतलियाँ गड्ढों के भीतर तड़फड़ा रही थी। बेचारी लैली कमरे भर में डरी हुई गौरइया की तरह भागी-भागी फिरती थी, पर कोड़ा बार-बार कंधे पर, पीठ पर, पाँवों में लिपट-लिपट जाता जैसे साँप काटे और खून खच्चर कर देता।

दरवाजा फिर खुला, जरवेस आई थी। देखते ही हक्की-बक्की रह गई, गुस्सा तो चढ़ ही आया।

'छोड़ो, छोड़ो, नहीं मैं जाकर पुलिस को बुला लाती हूँ।'

विजर्ड जंगली सुअर की तरह गुर्राया, मानो कोई उसका शिकार छीन रहा हो।

'तुम क्यों बीच में बोलती हो, मैं चाहे जो करूँ, तुमसे मतलब ?'

और तुरन्त ही सड़ से कोड़ा खींच कर मारा। इस बार मुँह को चीरता हुआ निकल गया, होंठ कट गया, मुँह पर लकीर सी बन गई, खून छलछला आया। जरवेस ने न आगा देखा न पीछा, एक कुर्सी उसकी ओर ढकेल दी। लैली अब भी अपने कपड़े सँभाले रोते हुए बच्चों को समझा रही थी।

'रोओ मत, रोते क्यों हो, चोट ज्यादा नहीं है, अभी अच्छी हुई जाती है।' और उसने कहते-कहते मुँह को धो-पोंछ कर बराबर ही कर दिया।

जरवेस को जब कभी लैली की याद आती तो उसका मन जैसे श्रद्धा से भर उठता। वह मनाती क्यों न ! भगवान ने उसे इतनी शक्ति दी है वह क्यों छोटी-छोटी बातों पर बिगड़ उठा करती है। कई दिनों से लैली को सूखी रोटी ही मिल रही थी, कुछ खाना तक न नसीब हो रहा था, वह कमजोर भी थी, उसके लिए सब बरदाश्त करना मुश्किल ही था, जरवेस की कोरें गीली हो उठीं। वह मासूम चेहरा उसके आगे नाच

गया। 'बेचारी, यह क्या जाने बचपन क्या होता है?' उसके लिए यह बालिका आदर्श स्वरूप थी। उसके भी परिवार को एसाम्वायर बुरी तरह खा रहा था। उसने भी कोड़ा देखा था पर वह उसके लिए डरने की चीज थी और इसी से जरवेस को बच्ची पर बड़ी दया आती। कूपे भी इन दिनों शराब में बिगड़ गया था। उसकी देह चौपट हो गई थी, चेहरे पर न जाने कैसी मुर्दनी छा गई थी, रङ्ग गहरा हो चला था। उसे अब भूख मुश्किल से लगती, कभी थोड़ा-बहुत खा लिया तो खा लिया, नहीं खाना उसे अच्छा ही न लगता था। गोश्त और शराब यही दो आहार थे और कुछ नहीं। सबेरे वह जब बिस्तर से उठता तो करीब आधे घंटे खड़ा खाँसता रहता, अक्सर कै भी हो जाती और वही शराब बाहर निकल पड़ती। अब वह जब तक अच्छी तरह पी न लेता उसकी तबियत ठीक न होती। सबेरे उसकी तबियत बहुत गिरी-गिरी रहती। हाँ, दोपहर के बाद उसमें कुछ चेतना आती। उसके हाथों-पाँवों में अब एक तरह की कँप-कपी शुरू हो गई थी। यह कँपकँपी कभी-कभी बढ़ जाती तो वह बेचैन हो उठता। उसका मुँह भी न जाने कैसा रूखा-सा निकल आया था। हँसी तो शायद उसे कभी ही आती। सड़क के फुटपाथ पर चलते-चलते वह अक्सर रुक जाता, उसके कानों में कुछ भन-भन सा होता, आँखों के सामने तिनगियाँ सी घूमतीं और वह परेशान हो जाता। उसको हर चीज पीली नजर आती, घर लगते भागे-भागे फिर रहे हैं। कभी-कभी जब काफी धूप होती तो उसे ठंडा-ठंडा कुछ महसूस होता जैसे किसी ने बर्फ का पानी उड़ेल दिया हो। पर सबसे ज्यादा विचित्र चीज थी वही, उसके हाथों, विशेषकर, दाहिने हाथ का काँपना।

'क्या मैं बिल्कुल बुढ़ियों की तरह हो गया?' वह प्रश्न करता। वह बहुत कोशिश करता कि उसका हाथ न काँपे, उस हाथ में कोई भारी चीज लेकर लटका लेता ताकि काँप न सके पर तब भी वह दाएँ-बाएँ आता जाता। सारा हाथ डग-डग करता जैसे टूट गया हो। जरवेस उसे मना भी

करती।

'देखो, अगर शराब छोड़ तो सब ठीक हो जाय!'

'शराब; मैं समझता हूँ कि अगर जी भर पीने को कुछ दिन मिल जाय तो सब अपने आप भाग जाय!'

और गिलास पर गिलास इसी बात पर चढ़ा जाता।

मार्च का महीना था। एक दिन रात को जब वह आया तो पानी से बिल्कुल भीग गया था। उस रात इतनी खाँसी आई कि वह पलक तक न मार सका। सबेरे बड़ी जोर का बुखार था। जब डाक्टर से पूछा गया तो उसने कहा कि इसे तुरन्त अस्पताल भेज दो। जरवेस को कोई आपत्ति न हुई। एक बार जरूर हुआ कि कहीं ये डाक्टर-वाक्टर कुछ और खराबी न पैदा कर दें पर फिर कुछ सोच कर उसको बिल्कुल इन लोगों पर छोड़ दिया। जब उसे ले जाने के लिए सवारी आई तो भी उसका जी बिदराया, अगर उसके पास दस बारह फ्रैंक होते तो उसे अस्पताल न जाने देती, घर में ही रोक रखती। वह डर गई, चेहरा स्याह पड़ गया, जाने कैसे अपशकुन की शंका उसे हो रही थी। पैदल ही उसके साथ अस्पताल के कमरे तक गई। कमरे के बीच में रास्ता था और अगल-बगल कई खाटें लगी हुई थीं। बिस्तर तक पहुँचा कर वह चुपचाप लौट पड़ी। उसे याद आने लगा कभी इसी अस्पताल में कूपे भी काम किया करता था। तब वह शराब न छूता था। आगे याद आया, 'वह बाँकोवर में रहती थी, एक दिन अपनी खिड़की से खड़े होकर उसने कूपे को देखा था और अपनी रूमाल हिलाई थी। कूपे ने भी अपनी हिलाई थी। उन दिनों वह कितना सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट था। तब वह क्या जानता था कि जो कमरे वह अब बना रहा है, किसी दिन इन्हीं में उसकी भी खाट लगेगी।' एकाएक उसे लगा तब वह उसकी प्रेमिका थी कितनी खुश थी और आज·····आह कितना समय बीत गया। जरवेस मन ही मन रो उठी।

दूसरे दिन जब वह देखने के लिए अस्पताल पहुँची तो नर्स ने

बताया कि वह पागलखाने भेज दिया गया। रात को सन्निपात में वह ऐसा हो गया कि चीखने-भागने लगा, किसी तरह सँभलता ही न था। और मरीजों को तकलीफ होती थी। जरवेस वैसे ही मुड़ पड़ी, उसके कदम चलते गए, सुधि न थी कि किधर जा रही है, किस रास्ते से जा रही है। 'तुम्हारा आदमी पागल हो गया है' यही शब्द हथौड़े की तरह उस पर चोट करते रहे। भूली-भूली उसी हालत में घर आ गई। नाना ने जब सुना तो 'अच्छा है जो पागलखाने में है, उसे वहीं रहना चाहिये, नहीं हम दोनों में किसी को जिन्दा न छोड़ता' कह कर चुप हो गई। इतवार के पहले जरवेस पागलखाने न जा सकी। दूर भी बहुत था, बस थी तो अच्छा था। उसने कुछ नारंगियाँ भी खरीद ली थीं। खाली हाथ जाना अच्छा नहीं लगता था। जब वह अंदर पहुँची तो देखा कि कूपे शांत बैठा हुआ है, उसे कुछ विस्मय हुआ।

'अब तबियत अच्छी है न?'

'हाँ, करीब-करीब अच्छी है!'

इसके बाद और बातें होने लगीं। जरवेस ने नारंगियाँ दीं, वह बहुत खुश हुआ। लगता था वह काफी बदल गया है। अब उसे शराब की जगह शरबत दिया जाता था। जरवेस की हिम्मत न होती थी कि अस्पताल की बात उठाए। पर उसने स्वयं ही शुरू किया—

'हाँ बड़ी अजीब हालत थी। मुझे चारों ओर दीवाल, छत, कमरे, सब जगह चूहे ही चूहे दौड़ते दिखाई पड़ते थे। तुम्हारी आवाज भी हमेशा सुनाई देती जैसे तुम मुझे पुकार रही हो। और भी न जाने कितनी तरह की डरावनी चीजें दिखती थीं पर अब मैं करीब-करीब ठीक हूँ। हाँ एक बार मुझे बुरा सपना जरूर दिखा था लेकिन सपने की क्या, सभी को दिखते हैं।'

जरवेस वहाँ रात तक रही। अब डाक्टर आया तो उसने कूपे को देखा, हाथ फैलवाए, सिर्फ उँगलियाँ कुछ-कुछ काँपती थीं, वह भी बड़ी

मुश्किल से जान पड़ता था। पर जब रात होने लगी और कमरे में अँधेरा हो गया तो उसे बेचैनी होने लगी। वह दो-तीन बार उठा और फिर बैठ गया। कोनों की ओर बहुत ध्यान से देखता रहा। एकाएक उसने हाथ बढ़ाया और दीवाल पर दबाकर ऐसे मसलने लगा जैसे नीचे कुछ हो। जरवेस सहम गई—

'क्यों क्या है ?'

'चूहा और क्या ?' वह धीरे से बोला।

इसके बाद वह पड़ रहा जैसे नींद आ रही हो, इधर-उधर के शब्द मुँह से निकलते रहे—

'गन्दगी के घर हैं। देखो, देखो, एक तुम्हारे नीचे घुसा जा रहा है।'

और झट चादर ओढ़ ली मानों उससे डर गया हो। इसके बाद ही वह बड़ी जोर से चीखा, सारी देह काँपने लगी। एक नर्स दौड़ी-दौड़ी आई, उसे सँभाला। जरवेस को घर भेज दिया गया।

लेकिन अगले इतवार को जब जरवेस देखने पहुँची तो कूपे बिल्कुल भला-चंगा था। खूब जी भर दिन में दस-दस घंटे लड़कों की तरह सोता था, सपने भी न दिखते थे, चूहे आदि सब भूल गए थे। जरवेस कूपे को घर ला रही थी, डाक्टर ने आज्ञा दे दी थी। चलते वक्त कुछ बातें जरूर बताईं—

'देखो, सब कुछ तुम्हारे ऊपर है, तुम चाहो तो अभी दो महीने में मर सकते हो या हमेशा इसी तरह चंगे रह सकते हो, सिर्फ शराब का सवाल है, अगर पिओगे तो समझ लो कि मौत बुला रहे हो। और अगर जैसे यहाँ रहे हो, ब्राँडी, शराब सब भूल जाओगे तो ठीक रहोगे।'

दोनों जब आकर बस में बैठे तो जरवेस ने उसका हाथ लेते हुए कहा—

'डाक्टर ठीक तो कहता था।'

'हाँ ठीक ही था!' पर थोड़ी देर चुप रहने के बाद ही, 'पर अगर कोई एक-दो बूँद ब्राँडी कभी-कभी ले ले तो मर थोड़े जाएगा। ब्राँडी से तुम तो जानती ही हो, हाजमा ठीक रहता है।'

और उसी दिन शाम को उसने अपना वह एक घूँट पिया भी। एक हफ्ते तक तो बहुत ही संयमपूर्वक पीता रहा। कहता, 'अरे मैं कुछ पीने के लिए थोड़े पीता हूँ!' पर एक हफ्ते बाद उसका सारा समय नष्ट हो गया। जल्दी ही वह बूँद बढ़ते-बढ़ते गिलास बन गई। फिर क्या था एक पखवारा होते-होते अपनी पुरानी आदत पर फिर आ गया। जरवेस ने अपने भर बहुत कोशिश की पर आखिर एक औरत कर ही क्या सकती है।

पागलखाने में जो कुछ उसने देखा था, उससे उसके रोंगटे खड़े हो गए थे और अब उसने प्रतिज्ञा कर रक्खी थी कि अब अच्छी तरह रहना शुरू करेगी। उसे आशा थी कि कूपे भी उसकी सहायता करेगा। पर अब वह भी निराश हो गई। कूपे जानता भी था कि इस पीने का क्या नतीजा होगा पर कुछ नहीं, जैसे जिन्दगी और मौत उसके लिए कोई अर्थ ही न रखते थे। अब जिन्दगी उस घर में नरक हो रही थी। एक दिन नाना मारे गुस्से के चिल्ला उठी—

'तुम पागलखाने में ही क्यों न बने रहे, यहाँ क्यों चले आये! जो कुछ भी कमाती हूँ तुम्हें चाहिए, किस लिए ब्राँडी के लिए। आग लगे ऐसी ब्राँडी में। न जाने कब ऐसे काहिलों से छुटकारा मिलेगा, मरते भी नहीं।

जरवेस से भी एक दिन झड़प हो गई, कूपे कह रहा था—

'मैंने तुमसे शादी क्या की, अपनी बरबादी की?'

जरवेस भड़क उठी जैसे आग में तेल पड़ गया हो।

'कोसते तुम हो, कोसना चाहिए मुझे, न जाने कैसी घड़ी में तुम्हारा

मुँह देखा था ?' जरवेस अब बिल्कुल हताश हो गई थी। दिन पर दिन उसका मन गिरता जाता था। उससे अब काम भी न होता। कमरे तक न बुहारती। गन्दगी इतनी थी कि कई बार लोरिले लोग आकर लौट गए। 'कौन घुसे उस म्लेच्छ घर में।' काम करते-करते वे अक्सर इसी मरगुल्ली की हालत पर बातें किया करते। उसकी गरीबी और चिथड़े देखकर ताने कसते।

'जब उस दिन दूकान में थी तो कितनी अच्छी थी, सुन्दर भी थी, अब तो जाने कैसी निकल आई है ऊबड़-खाबड़।'

एक दिन कूपे बोला—

'आज शाम को ७ बजे तैयार रहना, सरकस देखने चलेंगे।'

'पैसे ?'

'मैंने कमाए जो हैं।'

शाम हो गई, ७ बज गये पर कूपे का कहीं पता न था। जरवेस ने अपने कपड़े धोये थे, लोहा किया था ताकि अच्छी तरह जायगी। नाना को भी लिरेट के यहाँ रोक दिया था, वह वहीं सो जाएगी। पर जब कूपे न आया तो उसे झल्लाहट होने लगी। नौ बज गए, उसे भूख भी लग रही थी। मारे गुस्सा के वह भी चल पड़ी। आज तक उसने ऐसा कभी न किया था। बाहर ही मै० बाश मिलीं।

'क्या कूपे को चाहती हो, एसाम्बायर में है!'

जरवेस जैसे कुछ हिचकी पर फिर चल दी। धीरे-धीरे पानी रिमझिमा रहा था। होटल में गैस लाइट बहुत तेज जल रही थी। सब शीशे, बोतलें, शीशियाँ चमक रही थीं, दरवाजे के पास खड़ी होकर अन्दर झाँकने लगी। वह अपने साथियों के बीच एक मेज पर बैठा था। वातावरण में कुछ नमी थी, धुँधलापन छाया हुआ था। यहाँ से देखने में लगता था कूपे की आँखें झपक रही हैं। उसकी देह कुछ सिहर उठी, 'मैं ही क्यों बाहर खड़ी रहूँ इस तरह भीगने के लिए। क्या मेरे जान

नहीं है ?'

और झट दरवाजा खोलकर अन्दर घुस गई। कूपे इतना झूठा है। वादा किया था सरकस का और यहाँ मौज कर रहा है। यही विचार मन को मथ रहा था। उसको देखते ही कूपे ने कहा—

'पगला गई है ? देखो तो बिल्कुल पागल हो गई है !'

सारे साथी जोर से हँस पड़े। पर किसी ने कुछ पूछा नहीं, चुप रहे। जरवेस अपनी ऐसी आवभगत देखकर सकपका गई। चुपचाप खड़ी हो गई। कूपे इस समय बहुत शान्त था। बोली—

'चलो, अभी तो विशेष देर नहीं हुई।'

कूपे बैठा ही रहा, जरा भी न हिला।

'एक मिनट, बैठो तो.........'

जरवेस को लगा कि जैसे वह इतने आदमियों के बीच कैसे खड़ी रहे, बैठ गई। इधर-उधर देखती रही, गिलासों के अन्दर सोने जैसी चमकती हुई शराबें, बोतलों में जगमगाती हुई ब्राँडी, और ये गन्दे-भद्दे आदमी। काउन्टर पर भीड़ की भीड़ इकट्ठी थी। एक ओर वही मशीन रक्खी थी जिसने इतने दिनों में इतने शराबी बनाए थे। मशीन की छाया दीवाल पर पड़ कर प्रेत जैसी लगती थी, न जाने कितने किस्म के जानवर पूँछदार, बिना पूँछ के, गाय, बकरी, भालू जैसे बन रहे थे। ऐसा भी लगता था मानो कोई राक्षस मुँह खोल रहा है, अभी सबको निगल जाएगा।

'क्यों क्या पियोगी ?' कूपे ने पूछा।

'कुछ नहीं, पर मुझे भूख जरूर लगी है, तुमको मालूम है।'

'तब तो और भी, कुछ जरूर पियो !'

वह कुछ सोच-विचार में पड़ गई। मेस बाट्स बोला—

'जरवेस को कोई मीठी चीज चाहिए, वैसी ही मीठी जैसी वह खुद है।' वह क्रुद्ध हो उठी—

'मुझे आदमी वही अच्छे लगते हैं जो बेवकूफी नहीं बकते या नशेड़ी बने नालियों में पड़े नहीं रहते ! मुझे आदमी अच्छे लगते हैं जो अपने वादे के पक्के होते हैं !!'

कूपे हँस पड़ा।

'सरकस-वरकस में क्या धरा है, उसी पैसे का कुछ खा-पी लो !'

जरवेस ने एक गड़ती हुई निगाह डाली। भौंहें कुछ सिकुड़-सी गईं। धीरे से बोली—

'बात तो ठीक है, अच्छा हम दोनों उसी का कुछ पी लें।'

ग्रिलेड एक गिलास भर कर ले आया। उसने जैसे ही होठों से लगाया, एक पुरानी बात आँखों के सामने घूम गई। विवाह के पहले एक दिन उसने इसी जगह पर बैठे-बैठे कूपे के साथ सिर्फ फल खाए थे, शराब छुई तक न थी। उस दिन कूपे ने भी उसी के सामने कहा था कि वह ब्राँडी कभी न पियेगा पर आज दोनों पी रहे थे। उसे एनीसेट (शराब) अच्छी लगी। उसने दूसरा गिलास लेने से इन्कार तो कर दिया था; पर उसका मन सचमुच न भरा था। उसने निगाह फिराई, पीछे की ओर वही मशीन थी। 'इस मशीन को खोदकर जमीन में गाड़ देना चाहिए था।' पर उस समय उससे न जाने कैसा लगाव सा अनुभव हुआ। उसका मन बार-बार होता कि फिर कुछ पिये, एक आग जैसी जग गई थी।

'तुम लोगों के गिलासों में क्या है ?'

'यह कोलम्बे की निजी कोई चीज है। इसे उसने स्वयं बनाया है। जरा चखो,' कूपे ने कहा।

एक गिलास उसके लिए भी आ गई। पीने के बाद जरवेस को अनुभव हुआ कि उसकी भूख-प्यास सब मिट गई। कूपे ने कहा—

'हटाओ आज सरकस की बात छोड़ो, फिर कभी चलेंगे।

जरवेस कुछ बोली तो नहीं पर उसे लगा कि जहाँ है वह भी कोई

खराब जगह नहीं है। उसने तीसरा गिलास भी लिया और पीने के बाद हथेली पर सिर रख कर मेज के सहारे बैठ गई। कूपे और उसके साथी बातें करते रहे। उसके पीछे वही मशीन अब भी काम कर रही थी, बूँद-बूँद करके शराब चू रही थी। उसके मन में एक उत्कट इच्छा उठी कि पकड़ कर सब तोड़-मरोड़ दे, उस राक्षस की आँतें-पाँतें सब निकाल कर ढेर कर दे। उसे लगा जैसे वह उन ताँबे के पत्तरों में फँस गई है वे पाइप एक-एक करके उसे जकड़े ले रहे हैं और धीरे-धीरे उसकी चेतना निकली जा रही है। वह घबरा उठी। पीछे लोगों के लड़ने-झगड़ने की आवाज आ रही थी, धीरे-धीरे मेज-कुर्सियाँ भी खड़भड़ाने लगीं, शोर-गुल मच गया। कोलम्बे ने एकाएक उधर देखा और सबको निकाल बाहर किया। इसी गड़बड़ में कूपे न जाने कहाँ चला गया। जरवेस घर जाना चाहती थी पर नशे में कुछ न सूझता था। वह एक सड़क के किनारे नाली के पास बड़े आराम से बैठ गई मानों घर के गुसलखाने में बैठी हो। अन्त में किसी तरह घर पहुँच गई। वह बाश के घर के आगे से चुपचाप निकल जाना चाहती थी क्योंकि कमरे में लोरिले और पॉसन आदि बैठे होंगे। जब वह सीढ़ियों पर चढ़ रही थी, लैली दौड़ती हुई आई।

'सुनिये, हमारे पापा अभी नहीं आये, जरा मेरे घर चलिए। बच्चे कैसे सुख से सो रहे हैं, देखियेगा!' जैसे ही उसने उसकी लाल-लाल आँखें देखीं, लैली सहम गई। झट दो कदम पीछे हट कर खड़ी हो गई। वह जानती थी यह क्या है? बाप को रोज देखते-देखते उसे पहचान हो गई थी। जरवेस उसके पास से जा रही थी। लैली ने अपना हाथ सिकोड़ लिया और बहुत ही उदास-भरी आँखों से उसकी ओर निहारने लगी।

१. नाना

नाना चौथ के बढ़ते हुये चन्द्रमा की भाँति बढ़ रही थी। सुन्दर, छरहर, नारङ्गी के रङ्ग का बदन, चमकती हुई प्रभापूर्ण आँखें, सभी बड़ी अच्छी लगती थीं। गेहुँए, भूरे बाल कन्धों पर छितरे हुए सोने जैसे चमकते थे। उसको एक विचित्र-सी आदत भी थी। अपनी जीभ की नोक दोनों होठों के बीच दबाकर जोर से सीटी बजाती। उसकी माँ को बुरा भी लगता।

उसे अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने का बड़ा शौक था। शोख भी बहुत थी। जब घर की यह हालत थी कि सूखी रोटी तक न नसीब होती थी तो उसके लिए अच्छे कपड़े कहाँ से लाये जाते? पर वह भी कमाल करती थी। जिस दूकान में नाना नौकर थी वहाँ से रंग-बिरंगे फीते लाती और न सही साफ और अच्छे कपड़े, फटे-पुराने कपड़ों को ही सजाती थी, फिर तितली की तरह इधर-उधर फुदकती रहती। गर्मियों में तो नाना का पूछना ही क्या था? छींट के सस्ते, मद्दे फ्राक पहन कर रङ्ग-बिरङ्गी बसन्ती सुबह की तरह जब वह निकलती तो सारी गली उसके रूप और यौवन की मादकता से गमक उठती, उसे लोग 'गुड़िया' कह कर पुकारते। एक फ्राक तो उस पर बहुत ही फबता। वह बिना किसी कटाव-छटाव का सादा सफेद था। उस पर गुलाबी रङ्ग के कुछ छींटे पड़े हुए थे। उसका कोट भी छोटा था, नीचे पाँव दिखते थे, कोहनी तक बाँहें खुली रहतीं, गले में पिन लगाकर ऐसा कर देती कि गोल-गोल गर्दन दिखा करती। नहाने के बाद एक गुलाबी रङ्ग का फीता अपने बालों में बाँधती। इस तरह वह बच्ची भी थी और युवा भी। इतवार के दिन उसे घूमने और लोगों के बीच आने-जाने का मौका मिलता। उस दिन की प्रतीक्षा वह सोमवार

से ही करने लगती, उस दिन सबेरे से तैयारी करने लगती। एक छोटी-सी ब्लाउस पहने हुए घण्टों शीशे के आगे खड़ी रहती, शीशा खिड़की के पास लगा था। इसके पीछे उसकी भावना होती कि सब लोग उसे देखें, उसकी माँ अक्सर झुँझला उठती—

'कब तक खड़ी-खड़ी अपने को दिखाया करेगी?'

पर नाना पर शायद ही कुछ असर होता। वह अपने बाल धीरे-धीरे बाँधती, जूतों के बटन और फीते ठीक करती, फ्राक कहीं फटी होती तो सुधारती, अक्सर वह अपनी ब्लाउस को बाँहों पर उलट लेती, सामने की बटनें भी खुली रखती। कपड़े तो कुछ भी नहीं थे; पर जो कुछ थे वह उन्हीं में बड़ी सुन्दर लगती। जब कभी उसका बाप कुछ बुरा-भला कह देता तो उसके गोरे-गोरे गाल लाल पड़ जाते। इससे उसकी सुन्दरता और भी बढ़ जाती। वह कुछ जवाब तो न देती, खड़ी अपनी उँगलियाँ मरोड़ा करती और भाग कर सहन में चली जाती। सहन में पाँच-छः लड़कियाँ, नाना, पालिन इत्यादि होतीं। फिर वे सब मिलकर टहलना शुरू करतीं, और बोलवार्ड तक चली जातीं। सब एक लाइन में होतीं, नाना बीच में पालिन के कंधे पर हाथ रक्खे रहती। यही दोनों सब में बड़ी थीं, सब घूमना-फिरना इन्हीं की इच्छा से होता, रोज प्रोग्राम बनाए जाते। दोनों समझदार भी थीं। कोई चीज बिना सोचे न करतीं। उनके हर काम के पीछे कुछ न कुछ मसलहत जरूर होती जैसे अगर वे दौड़तीं तो उन्हें अपनी पिंडलियाँ दिखानी होतीं, और दौड़ते-दौड़ते थक कर रुकतीं तो किसी ऐसे मजदूर नवयुवक के पास जिसे वे जानती होतीं। नाना को एक युवक बड़ा अच्छा लगता था, विक्टर फाकनियर। वह उसे दूर से ही देखा करती थी। पालिन एक फ्रेम बनाने वाले युवक पर मुग्ध थी। वह उसे अक्सर सेब भी देता था।

शाम को ये लोग खूब स्वतंत्रतापूर्वक घूमतीं। सड़क के किनारे अक्सर दवा बेचने वाले, जादू-मंत्र दिखाने वाले घेरा बनाए जमे रहते थे। ये

दोनों भी उसी भीड़ में घुसी होतीं। इनके साफ कपड़े मजदूरों और कुलियों के गंदे कपड़ों से रगड़ते रहते, उनकी गंध और धूल तक उनमें आ जाती। शराब, सिगरेट पीने वाले आस-पास ही होते, बदबू सारे वातावरण में फैली रहती, ये लोग न जाने कैसी गंदी, भद्दी गालियाँ बकते। नाना और पालिन सब सुना करतीं। इनकी भी भाषा प्रायः इन्हीं लोगों की भाषा थी, अंतर था तो सिर्फ थोड़ा ही। इतना ही नहीं, इन बातों में इन्हें मजा भी बहुत आता, एक हल्की हँसी गोरे गालों पर ठहर जाती पर शरम न आती। हाँ अगर कभी इनके बाप कहीं दिख जाते तो ये जरूर घबरा जातीं, और अगर कहीं वे नशे में होते तो और भी बुरा होता। इसलिए हमेशा एक आँख इसी में लगाए रहतीं।

अगर कभी कूपे या बाश में से कोई दिख जाता तो वे भीड़ में और दुबक जातीं, अपने को छिपा जातीं। एकाध बार तो पकड़ भी गई थीं तो मारते-मारते घर लाई गई थीं। वहाँ से आकर सड़न में खेलने लगतीं जिससे कोई यह न भाँप पाए कि वे कहीं बाहर भी गई थीं, फिर वहीं तमाम तरह की बातें गढ़ लेतीं। अगर माँ-बाप पूछते तो वही सब बता देतीं। नाना को इन दिनों चालीस सू प्रति दिन के हिसाब से मिलते थे, अभी काम सीख रही थी। वहाँ वह अपनी बुवा लिरेट के पास ही रहती। लिरेट भी वहीं काम करती थी। नाना अगर कहीं दूसरी जगह नौकरी करने का मन भी करती तो उसे आज्ञा न दी जाती।

नाना प्रतिदिन घर से सबेरे ही चली जाती। उसकी माँ उसे समय से बीस मिनट पहले जाने देती थी, रास्ते के लिए इतना समय बहुत था और लिरेट से कह रक्खा गया था कि जिस दिन 'लेट' पहुँचे उससे बताए। पर नाना अक्सर ७, ८ मिनट देर करके पहुँचती और सारा दिन अपनी बुवा के हाथ-पैर जोड़ा करती कि वह माँ से न बताए। लिरेट नाना को बहुत प्यार करती थी, उसकी इन गलतियों को क्षमा कर देती थी, माँ से न बताती। पर वह नाना को अक्सर तमाम तरह की बातें

भी बताया करती, जिससे वह कभी कोई गलती न कर बैठे, 'जवान लड़कियाँ पेरिस में बड़ी जल्दी खराब हो जाती हैं। हमेशा होशियार रहने की जरूरत है। फिर तुम तो खुद बड़ी हो गई हो, अपनी जिम्मेदारी समझती ही होगी!'

'देखो नाना, मुझसे कुछ भी छिपाने की कोशिश न करना। तुम जानती हो कि मैं तुमको कितना चाहती हूँ और अगर इसी से कोई बात हो गई तो मैं सीन नदी में कूद कर जान दे दूँगी। समझती हो मेरी बच्ची? क्यों वादा करो कि तुमसे कोई आदमी जो कुछ कहेगा, सब मुझसे ईमानदारी से बता दिया करोगी, बोलो कहती हो?'

इस पर नाना हँसते हुए कहती, 'अच्छा, सही।'

एक बड़े कमरे में बुवा, भतीजी दोनों काम करती थीं। उसके बीच में एक मेज रक्खी थी, उसी के चारों ओर तमाम आलमारियाँ इकट्ठा कर दी गई थीं। सब पर गर्द जम गई थी, धुएँ की जगह से छत काली पड़ गई थी। खिड़कियाँ काफी बड़ी थीं और उनसे सड़क पर की हर चीज दिखाई पड़ती थी। काम पर सब से पहले मै० लिरेट ही आती थीं। उसके १५ मिनट बाद करीब-करीब सभी आते। नाना तो इसके भी बाद आती। एक दिन जब नाना देर करके आई तो बोली—

'अगर कोई सवारी मेरे पास हो जाय तो बड़ा अच्छा हो!' और झट दौड़ कर खिड़की के पास पहुँच गई। बुवा को कुछ शक हो गया।

'क्या देख रही हो? तुम्हारे पिता जी आए थे कि नहीं?'

नाना ने बड़ी लापरवाही से उत्तर दिया—

'नहीं तो.........और न मैं कोई चीज ही देख रही हूँ। इतनी गर्मी होती है, जल्दी-जल्दी आना पड़ता है। मुझे सच, जल्दी से बड़ी चिढ़ है।' उस दिन सचमुच बड़ी गर्मी थी। काम करने वाली लड़कियों ने पर्दे डाल दिए थे लेकिन उसमें थोड़ा खुला जरूर छोड़ दिया था ताकि आने-

जाने वालों को देख सकें। सब लोग एक लम्बी मेज के अगल-बगल बैठी थीं। एक कोने में मै० लिरेट बैठती थीं। उस कमरे में आठ लड़कियाँ थीं, सबका अलग-अलग सामान था। तार, कागज, गोंद, रुई, पत्तियाँ सभी हर एक के सामने ढेर रहती थीं। किसी को एक दूसरे से कुछ लेना-देना न पड़ता, पर तब भी बातें होती थीं।

गुलाब की पत्ती उठाते हुए लोनी ने कहा, 'तुम्हें मालूम है कैरोलिन की क्या दुर्गति हो रही है। उसने उसी से विवाह किया था जो रोज रात को बुलाने आता था?' पर फिर किसी के बोलने के पहले ही, 'हटाओ, मैडम आ रही हैं।'

इतने में मै० टिटरविली ने प्रवेश किया, लम्बी, पतली, एकहरे बदन की टिटरविली अक्सर नीचे ही रहती थी। पर जब कभी ऊपर आती तो सब सहम जातीं। उसके मुँह पर हँसी नहीं देखी थी, हमेशा गम्भीर, घुप्प बनी रहती थी। ऊपर आकर एक-एक का काम देखती, गलती तो उसकी निगाह से बच ही न पाती थी। उसने एक लड़की को कुछ काम बताया और मुड़ कर चल दी। नाना को एकदम से हँसी आ गई, उसने मुँह में हाथ लगाया पर हुः हुः की आवाज निकल ही गई।

'सचमुच लड़कियों! तुम लोग परेशान किए ले रही हो। मुझे मज-बूर होकर सख्ती करनी पड़ेगी।'

लिरेट ने बैठे-बैठे एक ओर से कहा। पर किसी ने जैसे सुना ही नहीं। कोई उसे डरता तो था न, फिर वह दयालु भी बहुत थी। लड़कियाँ जो चाहतीं कह सकती थीं, हाँ कहने का ढङ्ग भद्दा जरूर न हो। नाना जहाँ काम करती थी वह थी तो जगह अच्छी, पर यहाँ उसके पुराने खराब संस्कारों में कोई सुधार न हो सका। ऐसा अक्सर होता है कि जहाँ तमाम लड़के या लड़कियाँ एक साथ रहने लगती हैं कुछ न कुछ बुराइयाँ पैदा ही हो जाती हैं। जैसे अगर किसी आमों की डलिया में एक आम सड़ा पहुँच जाता है तो सब अच्छे आम भी सड़ने लगते हैं। यहाँ भी

यही होता। अगर किसी कोने में दो लड़कियाँ कुछ धीरे-धीरे बातें करतीं होतीं तो यह निश्चित था कि ये कुछ ऐसी बातें होतीं जो सब के सामने न की जा सकती थीं। नाना में ऊपर से तो कुछ न मालूम होता पर एक उत्सुकता हमेशा बनी ही रहती थी, वह अक्सर सब लोगों की बातें सुनने की कोशिश करती, उनमें कभी-कभी भाग भी लेने लगती। सब लड़कियों में सब से ज्यादा उसका ध्यान लिसा पर रहता। उसके बारे में तरह-तरह की बातें फैल रही थीं।

नाना ने एकाएक उठ कर खिड़की खोलते हुए कहा—

'बड़ी गर्मी है!' लोनी की निगाह बाहर पड़ गई। एक बुड्ढा आदमी खड़ा था।

'यह बुड्ढा आदमी कौन है? मैं समझती हूँ करीब आधे घन्टे से खड़ा है?'

'कोई बेवकूफ होगा, कोई काम नहीं, तो यही सही!' फिर आँखें फिराते हुए लिरेट ने कहा, 'नाना इधर चलो, मैंने कितनी बार तुमको मना किया खिड़की पर मत जाया करो!'

नाना अपनी जगह पर आ बैठी। खिड़की खुली ही रही। वह बूढ़ा अच्छे कपड़े पहने हुए कोई अच्छा आदमी लगता था, उम्र भी यही ४५ वर्ष रही होगी। वह वहीं खड़ा एक घंटे तक खिड़कियों को ताकता रहा। लोनी ने एकाएक धीरे से कहा—

'आगस्टाइन से मिलना चाहता है पर.........'

आगस्टाइन बीच ही में बोल उठी—

'मुझसे और वह खूसट!'

इस बार लिरेट ने भी हँस कर कहा—

'बूढ़ों से नफरत.........ऐसी गलती कभी न करना!

नाना इस सब बातों और साथ-साथ होने वाले भद्दे हँसी-मजाकों को सुना करती। वह सब समझती थी। हालाँकि दिखाने को अपनी

उँगलियाँ डोरे में उलझाए रहती पर कान उधर ही लगे रहते। काम करने में वह बड़ी निपुण थी। कभी कोई गलती ही न होती थी। वह इन बातों को सुनती-सुनती भी गोंद, डोरे, कागज, सब का हिसाब ठीक रखती। उसके बनाए माले बड़े खूबसूरत होते।

वह आदमी चला गया था और दूकान में शान्तिपूर्वक काम हो रहा था। बारह बजे छुट्टी की घंटी बजी, नाना उठ खड़ी हुई—

'मुझे कुछ लेना है, मैं बाहर जा रही हूँ।'

'मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूँ, मुझे भी कुछ चीजें लेनी हैं,' मै० लिरेट ने कहा।

और लड़कियाँ खाना मँगा कर खाने में लग गईं। लिरेट और नाना बाहर आए। जैसे ही लिरेट सड़क पर उतरी, एक अजनबी लड़का भाग कर निकल गया। नाना का मुँह लाल पड़ गया, लिरेट ने देख लिया और उसकी बाँह पकड़ कर चलने लगी। उसके दिमाग में आया, 'हो न हो यह नाना से ही मिलना चाहता था। अभी से इस लड़की के यह हाल!' वह मन ही मन खिरझिरा उठी और सवाल पर सवाल पूछने लगी पर नाना कुछ न बताती।

'मैं कुछ नहीं जानती, मैं उसे पहचानती भी नहीं। हाँ इसे मैंने चार-पाँच दिन से अपने पीछे जरूर देखा है।'

लिरेट इसी तरह बातें करती हुई चीजें खरीदती रही। अंत में उसने कहा, खैर कुछ बुरा नहीं है अगर इसकी नियत ठीक हो तब!'

उस दिन से लिरेट नाना के साथ आती-जाती, उसे कभी अकेले न जाने देती। नाना पहले तो कुछ बिगड़ी पर फिर शान्त हो गई। लिरेट को पता लग गया था कि वह आदमी एक बटन बनाने वाला था। एक दिन वह लिरेट के सामने पड़ गया।

'देखिये, हर काम समझ-बूझ कर किया कीजिए, लिरेट ने कहा।

इस पर उसने कुछ उत्तर तो न दिया पर सिर झुका कर अभिवादन करता हुआ चला गया। दो-एक बार उसने और ऐसा ही किया। एक दिन वह जान-बूझ कर दोनों के बीच में आ गया और नाना से न जाने क्या धीरे से कह गया। लिरेट उस दिन से डर गई। उसने नाना के भाई से शिकायत कर दी। उसने नाना को कुछ मारा और तमाम अपशब्द कहे। जरवेस बोल उठी, 'होने दो, जैसी है ठीक है। अगर उसके दिमाग में कुछ न भी हो तो तुम लोग भरे दे रहे हो!'

यह सही भी था। बहुत-सी बातें नाना के दिमाग में इसी तरह आई थीं। वे बातें भी बड़ी अजीब थीं। एक दिन सबेरे उसके भाई ने देखा कि नाना कागज में कुछ लिए हुए अपनी देह पर रगड़ रही है। वह पाउडर था और कुछ नहीं। उसके लगा लेने से वह न जाने कैसी दिखने लगी, वह बिगड़ गया। वह एक दिन एक फीता लाई और हैट में लगा रही थी, भाई ने डाट कर उसे भी छीन लिया। कूपे भी अगर उसे कोई ऐसी चीजें लिए देख लेता तो तमाम उल्टी-सीधी गालियाँ सुना देता और वह भी अक्सर जवाब दे बैठती। एक दिन कूपे ने उसकी एक पाउडर की पुड़िया जमीन पर गिरा दी और पाँव से रगड़ दी। वह चुप खड़ी देखती रही, मुद्रा जरूर कड़ी होती गई। इस पाउडर की साध उसके मन में वर्षों से थी।

'मैं ये सब बातें कहाँ तक सहूँ?' उसके मन में उठा। कूपे भी अक्सर अनुभव करता कि उससे गलती हो गई, पर बाद में क्या हो सकता था।

कूपे उसे रोज दूकान तक भेजने जाता था और पाँच मिनट तक दरवाजे पर खड़ा रहता था जिससे यह पक्का हो जाय कि नाना ऊपर पहुँच गई। लेकिन एक दिन कूपे थोड़ी दूर पर अपने एक मित्र से बातें करने के लिए ठहर गया तो उसने देखा कि नाना बाहर आई और कहीं हवा की तरह गायब हो गई। नाना वास्तव में ऊपर न जाकर

नीचे ही कहीं छिपी थी और जब उसने सोचा कि कूपे चला गया होगा बाहर निकल गई। कूपे लिरेट के पास पहुँचा, लिरेट स्वयं झल्ला कर बोली—

'मैंने तो उससे हाथ जोड़ लिए हैं। मुझसे जो हो सकता था किया। अब तुम जानों, तुम्हारा काम जाने, मेरे ख्याल में तुम उसका विवाह जल्दी ही कर दो, नहीं तो वह हाथ से बेहाथ हो जायगी।'

पड़ोस में सभी लोग नाना के इस प्रेमी को जानते थे। अहाते में तो वह अक्सर देखा जाता। एकाध बार सीढ़ियों पर भी था। नाना भी पहले इस बात को मजाक समझती रही, फिर धीरे-धीरे उसे डर लगने लगा। उसे देखते ही उसका मन काँप उठता। अगर कभी वह किसी सर्राफे की दूकान के पास होती तो वह आ जाता।

'क्या लोगी !'

नाना को जेवरों की बिल्कुल चाह न थी, हाँ कभी-कभी अपने गंदे कपड़े देख कर अच्छे कपड़े पहनने की इच्छा जरूर जोर मारती। ऐसे अवसरों पर उसका हृदय बड़ा दुखी हो जाता। वह सोचती, 'क्या वह इन लोगों की तरह अच्छे कपड़े पहन कर थियेटर नहीं जा सकती, वहाँ किसी सुन्दर कमरे में आराम से नहीं रह सकती।' वास्तव में नाना के मन में जीवन के विलास की इच्छा जोरों से जग उठी थी। वह जीवन के इस रूप को भी जानना चाहती थी। इसलिए उसका मन एक उत्कट अभिलाषा से जला करता। ऐसे ही क्षणों में वह युवक उसके जीवन में आया पर जाने क्यों नाना को बड़ा डर लगता। वह उसकी छाया से दूर भागती।

जाड़ा आते-आते स्थिति बड़ी विषम हो गई। नाना के लिए अपना जीवन कठिन दिखने लगा। रोज शाम को उस पर मार पड़ती, कूपे बिगड़ता, जरवेस भी हजारों बातें सुनाती। खाने-पीने को कुछ रहता ही न था, मारे जाड़े के सिकुड़ती भी थी। अगर कभी नाना कोई छोटा-मोटा

चीज अपने लिए खरीद भी लाती तो कोई न कोई छीन लेता।

जरवेस को एसामवायर का चसका लग गया था। रोज जा पहुँचती। कह देती, 'कूपे वहीं है, लेने जा रही हूँ!'

कभी-कभी नाना भी उधर से निकलती, खिड़की से झाँक कर देखती कि माँ तमाम लोगों के बीच बैठी हुई है। वह जल कर आग बगूला हो जाती। नाना की उम्र की लड़की यह सब कैसे सह सकती थी, शराब उसके लिए किसी पाप से कम न थी। माँ-बाप शराबी और घर मुसीबतों का डेरा, उसकी जिन्दगी उसके लिए वीरान हो रही थी। कोई कैसा भी साधू आदमी होता उस घर में रहना नामुमकिन था। वह भी यही सोचती थी और 'एक दिन जब वह घर से चल देगी तो यही माँ-बाप रोएँ-पीटेंगे। तब बाद को सोचेंगे कि उनसे हो न हो, कोई गलती हो गई है।'

एक दिन शाम को जब नाना घर आई तो उसने माँ-बाप को विचित्र हालत में पाया। कूपे उतान बिस्तर पर पसरा था और जरवेस कुर्सी पर बैठी झूम रही थी। खाने आदि की किसी को फिक्र ही न थी, एक धुँधली मोमबत्ती ही कमरे में जल रही थी। लड़खड़ाती जबान से जरवेस बोली—

'अच्छा तुम हो, तुम्हारे पिता जी सब ठीक कर देंगे!'

नाना न बोली न रुकी। उसने एक निगाह खामोश कमरे और ठंडे चूल्हे की ओर डाली। एक कदम आगे भी न बढ़ी, मुड़ कर चल दी। फिर लौट कर न आई। सवेरा होते ही जब माँ-बाप के होश-हवास ठिकाने आए तो नाना न थी। दोनों में झगड़ा शुरू हो गया।

जरवेस के हृदय पर बड़ा भारी आघात लगा। तीन दिन तक वह अपने आप में न रही, जो जी में आता करती रही। कूपे ने नाना का ख्याल ही छोड़ दिया मानों कुछ बात ही न हो और आराम से मौज करता रहा। कभी-कभी खाते समय जरूर दिमाग पर असर पड़ता और

वह खुला हुआ चाकू लेकर तान लेता मानो किसी को मारेगा। आँखें लाल, सुर्ख हो जातीं।

'मेरी बेइज्जती हुई है!' पर दूसरे ही क्षण वह चाकू रख कर फिर खाने में लग जाता।

उस बड़े भारी घर में जहाँ सैकड़ों परिवार रहते थे, ऐसी भागा-भागी रोज ही लगी रहती थी। नाना के भागने पर किसी को आश्चर्य न हुआ। लोरिले लोगों ने तो कुछ ऐसा कह रखा था। उनकी बात ठीक निकली थी, खुश थे। लेन्टियर नाना की ओर ही से बोलता—

'मैं मानता हूँ कि उसने गलती की है। पर भाई और होता ही क्या! नाना जैसी सुन्दर लड़की तुम क्या समझते हो ऐसी गरीबी में रह भी सकती थी!'

और बात एक दिन यहाँ तक पहुँची कि वाश के कमरे में लोरिले ने कह दिया—

'तुमको क्या पता, उस मरगुल्ली ने उसे बेच दिया है, मुझे मालूम है। मैं जो कुछ कहती हूँ उसका सबूत भी रखती हूँ। उस समय जो बूढ़ा आदमी ऊपर सीढ़ियों पर चढ़ रहा था, रुपये देने गया था। एक रात वह और नाना अम्बिग होटल में भी रहे थे। मुझसे पूछो, मुझे सब मालूम है!'

उस समय तो सब लोग बिना कुछ कहे-सुने उठ गए। हो सकता है यह कहानी सही हो, ऐसा होना असंभव तो कम-से-कम नहीं था। और इसके बाद काफी खिचड़ी पकी। घर के सब लोग विश्वास करने लगे कि जरवेस ने नाना को बेच दिया है। उन दिनों जरवेस की भी हालत बिगड़ रही थी। मै० फार्कनियर के यहाँ से वह निकाल ही दी गई थी। एक हफ्ते के अंदर उसने एक के बाद एक करके आठ लोगों के यहाँ नौकरी की पर सबों ने 'बड़ी गंदी रहती है' कह कर निकाल दिया था।

ऐसा भी हुआ कि धीरे-धीरे जरवेस को लोहा करना भी भूल गया। अब वह कपड़े बिगाड़ दिया करती थी। इसलिए दूसरे मोटे काम करने को दिए जाते थे। उसका स्त्रियोचित स्वाभिमान और अपना निजी दंभ सब नष्ट हो चुके थे। अब जब कभी लैन्टियर सामने पड़ जाता तो आँख उठाकर भी न देखता और जरवेस को भी कहीं कुछ न खटकता कि इतना पुराना सम्बन्ध जो वर्षों से चला आ रहा था अब बिल्कुल टूट चुका है। दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति उदासीनता भर गई थी। वरजिनी ने लैन्टियर के कहने से जो किराने की दूकान खोल ली थी अच्छा किया था। इससे लैन्टियर का भी फायदा था। वह चाकलेट, लेमन ड्राप्स आदि खूब खाता। जरवेस की वह हालत देखकर एक दिन उसने वरजिनी को सुझाया कि न हो वह उसे दूकान की सफाई आदि के लिए ही रख ले। वह मान गई। हर शनिवार को जरवेस अपनी झाड़ू और बाल्टी लेकर आ जाती और धो-धोकर सारी फर्शें, कमरे और दूकान साफ कर जाती। जरवेस को इसमें न शर्म लगती न ग्लानि ही होती। वह बहुत धैर्यपूर्वक उस घर में मजदूरी का काम करती। एक दिन था वह उसकी मालकिन थी।

एक दिन शनिवार को काम कुछ अधिक था। पानी लगातार तीन दिन से बरस रहा था। तमाम कीचड़ ही कीचड़ हो रहा था। ऐसा लगता था सारी सड़क की गंदगी दूकान में भर गई है। वरजिनी एक ओर अपने कपड़े सँभाले खड़ी थी और लैन्टियर आराम-कुर्सी पर उढ़का हुआ कैन्डी खा रहा था। वरजिनी बोल उठी—

'क्यों जरवेस, क्या तुम अच्छी तरह फर्श भी नहीं साफ कर सकतीं। देखो तो कितनी गर्द जमा है। जरा फिर से तो झाड़ लो!'

जरवेस ने कुछ न कहा और बढ़कर कोनों तक फिर झाड़ने लगी। वह घुटनों के बल बैठी थी, बाँहें सिकोड़ रक्खी थीं, गीला लबादा देह से चिपक गया था, मुँह से पसीने की बूँदें टपक रही थीं। वरजिनी को जैसे यह देख कर बड़ी खुशी हो रही थी। उसकी बिल्ली जैसी नीली आखें

चमक रही थीं। वह बार-बार मुसकुरा कर लैन्टियर की ओर देखती जाती थी। गुसलखाने वाले अपमान का बदला मिल चुका था। सचमुच इतने दिनों तक उसके मन पर एक बड़े भारी बोझ की तरह रक्खा था। लैन्टियर ने जरवेस की ओर देखते हुए कहा—

'वैसे तो मैंने कल रात नाना को देखा था!'

जरवेस बुहारते हुए उठ कर बैठ गई।

'मैं मरटायर्स रोड की तरफ से आ रहा था, देखा कि एक लड़की किसी बूढ़े के हाथ में हाथ डाले जा रही है। मैंने जरा आगे बढ़ कर देखा, सच मानों वह ही थी, बड़े अच्छे कपड़े पहने थी, खूब खुश दिखती थी।'

जरवेस ने सिर्फ 'हूँ' कहा जैसे आवाज में बल ही न हो। लैन्टियर ने अपनी एक कटूक्ति पूरी करके दूसरी शुरू की।

'अजीब लड़की है, सोचो कि उसनें मुझे अपने हाथ से इशारा किया कि चला जाऊँ और एक कैफे में जाकर वह उस बूढ़े को छोड़कर मेरे पास दरवाजे पर आई और कहा कि मेरे बारे में सबसे बता देना।'

'हूँ', जरवेस ने फिर धीरे से कहा।

वह अब भी खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। नाना ने उसके लिए कोई सन्देशा जरूर भेजा होगा। लैन्टियर कैन्डी खाने में लग गया था। वरजिनी बोल उठी, 'मैं होती तो उसकी ओर देखती तक न। और यह भी है कि अगर वह कहीं मुझे मिल जाती बोलती तक न। मुझे दुख जरूर होता। खैर जरवेस मुझे तुम पर बड़ा दुख है, क्या कर सकती हूँ। पॉसन रोज इस तरह की बीसों लड़कियों को पकड़ता है!'

जरवेस कुछ न बोली, शून्य में आँखें गड़ाये रही। दोनों हाथों से झाड़ू पकड़ कर उसने बाल्टी दरवाजे की ओर ठेला और फर्श को फिर बुहारने लगी। सब काम करने के बाद पैसे लेने के लिए खिड़की के पास आकर खड़ी हो गई। उधर से वरजिनी ने पैसे रख दिये पर

जरवेस ने जल्दी न उठाए।

'तो तुमने कुछ नहीं कहा ?' उसने पूछा।

'उसने·········उसने किसने', विस्मित होते हुए लैन्टियर बोला; 'अच्छा नाना, हाँ उसने कुछ नहीं कहा !'

जरवेस ने पैसे लिए और चुपचाप चली गई। उसका लबादा घसिट रहा था, जूते पानी में फचफचा रहे थे। पास-पड़ोस में जितनी औरतें शराब पीती थीं वे सब उसका पक्ष लेते हुए कहतीं, 'जरवेस में यह आदत नाना ही के कारण हुई है।' उसे स्वयं भी इस बात पर विश्वास था और प्रायः उदासी में कह भी देती—

"काश, अब मैं मर जाती।"

नाना के भाग जाने का जरवेस को बड़ा दुख था। उसका हृदय टूट गया था! कोई माँ कभी भी ऐसी आशा नहीं करती कि उसकी लड़की किसी आदमी के थोड़े से प्यार के लिए उसे छोड़ कर भाग जायगी।

धीरे-धीरे जरवेस का नैतिक पतन होता गया। उसे अब नाना की परवाह भी न रह गई थी। उसके दिमाग में बस एक बात रह गई थी, 'नाना उसकी है, क्या उसका नाना पर कोई अधिकार ही नहीं है ?' वह दिन-रात गलियों में घूमा करती, शायद कहीं नाना दिख जाय! उस साल वह अहाता गिराया जा रहा था, पूरा एक तरफ का भाग गिरा पड़ा था। फिर बनवाने की बात थी। जरवेस को बड़ी चिढ़ होती। रात को जब वह नाना को ढूँढ़ कर लौटती तो उन्हीं ईंटों से टकरा जाती। उसे नाना के बारे में कई खबरें मिलीं। कुछ लोगों का काम ही होता है कि उल्टी-सीधी बातें चाहे वे आपको पसंद हों या न हों बताएँगे।

'नाना ने उस बूढ़े आदमी को छोड़ दिया है और इन दिनों एक नवयुवक के साथ रह रही है।' उसे यह भी पता लगा कि नाना एक दिन ग्रैन्ड होटल के नाचघर में भी थी। फिर क्या था कूपे और जरवेस उन जगहों का चक्कर काटने लगे।

नवम्बर का महीना था। एक दिन वे ग्रैन्ड होटल में घुस गये। बाहर काफी जाड़ा था। बर्फ गिर रही थी। अन्दर काफी भीड़ थी। बहुत से लोग सिर्फ जाड़े से बचने के ही लिए घुस गये थे। न किसी को बैठने के लिए कुर्सी मिल रही थी न खड़े होने की ठीक जगह। जब लोग खड़े ही थे। कूपे एक, दरवाजे के पास था, किसी ने एकाएक एक युवक को उस पर ढकेल दिया। युवक झट रूमाल निकाल कर अपना कोट झाड़ने लगा, मानो कोई गंदगी लिपट गई हो। कूपे की कमीज कुछ गंदी जरूर थी।

'सुनिए भाई साहब, आप तो ऐसे बन रहे हैं जैसे कोई लाट साहब हों, अगर मेरी कमीज से आपका कोट छू गया तो उसमें क्या लग गया ?'

उस युवक ने कुछ त्योरियाँ चढ़ा कर एक बार कूपे को सिर से पैर तक देखा। कूपे कह रहा था—

'इतना समझ लीजिए कि कमीज से बढ़ कर कोई अच्छा कपड़ा आदमी के लिए नहीं हो सकता !' जरवेस बार-बार पति को शांत करने की कोशिश कर रही थी पर वह छाती पीट कर कहता ही रहा—

'मैं कहता हूँ कमीज.........आदमी के लिए ही है !'

वह युवक कहीं भीड़ में गायब हो गया। कूपे ने इधर-उधर निगाह भी दौड़ाई पर भीड़ में कहाँ पता लगता है। नाचघर का कार्य प्रारम्भ हो चुका था। आरकेस्ट्रा पर कोई गत बज रही थी, नाचने वाले उसी धुन पर अपने पाँव मिला रहे थे। गैस की रोशनी उस दिन इतनी तेज न थी। एकाएक जरवेस ने कहा—

'देखो, देखो।'

'क्या, कहाँ ?'

'वह, जो लाल टोपी लगाए है। नहीं देखा, वही है !'

कूपे कूद कर भीड़ में घुस गया, वह नाना ही थी। वह फटे-पुराने रेशमी कपड़े पहने थी, कई धब्बे दिख रहे थे। बटनें टूटी हुई थीं, काज (बटन होल) तक फट रहे थे, ऊपर से एक शाल भी नहीं था। परन्तु फटे कपड़ों में भी वह सुन्दर दिख रही थी, उसके शरीर का गोरापन फूटा पड़ता था, वह नाच भी बड़ी तन्मयता से रही थी। उसकी मुद्राएँ और अंग परिचालन सभी बहुत मोहक थे। वह एक बार लचकती हुई जमीन तक झुक आई फिर उठा कर अपना पाँव अपने साथी के सिर पर रख दिया, एक गोला सा बन गया। लोग बहुत प्रभावित थे, बड़ी तालियाँ पिट रही थीं। तभी कूपे ने झपट कर नाना को थाम लिया। नाच रुक गया, उसने मुड़ कर देखा कूपे और जरवेस—उसके माँ-बाप। कूपे ने ताड़ लिया, 'हो न हो वह युवक वही है।' जरवेस ने उसे एक धक्का दिया और नाना के पास पहुँच उसके कान ऐंठ दिए। साथ ही दो चपतें भी जड़ दीं, एक के लगते ही टोपी जमीन पर आ गिरी और दूसरे पर गोरे गालों पर खून उभर आया, पाँचों उँगलियों के निशान बन गए। आरकेस्ट्रा बजता रहा, नाना बिल्कुल चुप खड़ी रही, न हिली न डुली। युवक मौका देख कर खिसक गया।

वह घर आ गई और उसकी वही जिन्दगी फिर शुरू हो गई। आते ही उसे जमीन पर सोना पड़ा, सवेरे देह दर्द कर रही थी, उसने घर पर ही काम करने को कहा। कागज, कैंची, गोंद, धागा सब लाकर दिया गया पर छः महीने बाद कुछ भूल सा गया था। उँगलियों में अब वह सफाई न थी। कुछ दिन तो वह काम करती रही पर फिर धीरे-धीरे छोड़ बैठी, गोंददानी सूख गई, डोरे इधर-उधर मारे-मारे फिरने लगे। नाना बहुत जिद्दी हो गई थी, बात-बात पर माँ से उलझ पड़ती। पिछले जीवन ने वास्तव में उसे स्वतंत्र बना दिया था। वह इस बन्धन के बीच न रह सकती थी। एक दिन शाम को फिर निकल भागी।

लोरिले लोगों ने जब सुना नाना आई है और अपनी जिन्दगी को

सुधारने के लिए फिर काम शुरू कर दिया है तो आपस में खूब हँसे थे। पर जब उनको फिर भाग जाने की खबर लगी तो हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। जरवेस से बोले—

'अब की बार अगर आ जाय तो पिंजड़े में रखना, पिंजड़े में ……'

पर ये दोनों ऐसा बनते मानों नाना के जाने का उन्हें कुछ दुःख ही न हो। पर जो कुछ मन पर गुजरती जरवेस ही जानती थी। वे अक्सर सुनते कि नाना मुहल्ले में आई थी, समझ जाते, 'यह लड़की सिर्फ हम लोगों को जलाने के लिए ऐसा करती है।' नाना अब पेरिस के हर नाच-घर में दिखाई देती थी। कूपे लोग जिस दिन चाहते उसे पकड़ सकते थे पर उन्होंने ठीक न समझा। कभी मिलने की भी कोशिश न की। पर एक रात जब उनको नींद आ रही थी कि किसी के दरवाजा पीटने की आवाज आई। देखा तो नाना, बहुत ही संयत स्वरों में बोली, 'मैं यहाँ सो सकती हूँ ?'

किसी ने कुछ विरोध न किया। नाना अंदर गई। सारे कपड़े गंदे, पुराने थे। उसने एक रक्खी हुई सूखी रोटी खाई, उसके बाद सो गई। नाना अपने मन से रोज आती-जाती रही। यह भी क्रम कुछ दिन चला। फिर कुछ दिन लगातार गायब रहने लगी, हफ्तों कहीं पता ही न लगता। महीनों बीत जाते, कुछ हाल ही न मिलते। वह आती, कभी खूब अच्छे कपड़े पहन कर, कभी बिल्कुल भिखारिन बन कर। उसके माँ-बाप भी आदी हो गए।

'वह आए चाहे जाए, बस हमारा दरवाजा जरूर बन्द कर दिया करे !'

नाना जब कभी अच्छे भड़कीले कपड़े पहन कर आती तो जरवेस गुस्सा जरूर होती वह कहती, 'मैं चाहती हूँ कि जब भी तुम आओ, सीधे-साधे कपड़े पहन कर आओ, हम मजदूरों को ये कपड़े नहीं अच्छे लगते। मैं फिर कभी ऐसे कपड़े यहाँ न देखूँ, समझीं !'

एक दिन जरवेस ने नाना को और जोर से डाँटा। नाना भी बिगड़ उठी—

'क्यों, तुम कौन होती हो मुझे डाटने वाली। जैसा तुम्हें अच्छा लगा तुमने किया जैसा मुझे अच्छा लगता है मैं कर रही हूँ!'

जरवेस का मुँह उतर गया।

'क्या.........'

'मैंने कभी कुछ नहीं कहा। कह कर करना ही क्या था पर तुम क्या जानती हो कि मैं नादान हूँ, कुछ समझती नहीं। उस रात को जब मेरा बाप नशे में पड़ा था तुम कहाँ थीं, क्या बताने की जरूरत है छोड़ो मुझे, तुम्हीं ने सब कुछ किया है, तुम्हीं ने यह रास्ता तैयार किया है!'

जरवेस लड़खड़ा कर धम से बैठ गई और नाना तीर की तरह जाकर बिस्तर पर पड़ रही।

कूपे की जिन्दगी भी जैसे-तैसे चल रही थी। उसका एक ही क्रम था। पहले उसने छः महीने शराब न छुई, फिर लालच में पड़ शुरू कर दी। बढ़ते-बढ़ते पागलखाने जाने की नौबत आ गई। उसके बाद अक्सर होता कि वह कुछ दिनों पागलखाने में रहता तो आदत छूट जाती पर बाहर आकर फिर शुरू कर देता। इस तरह उसे फिर पागलखाने जाना पड़ता। तीन साल के भीतर पाँच-छः बार जा चुका था; और हर बार उसका शरीर टूटता ही जाता था। अब वह इतना दुबला हो गया था कि देखे डर लगता था जैसे अस्सी साल का बूढ़ा हो। पिछली गर्मियाँ उसके लिए बड़ी खराब थीं। उसकी आवाज तो फट ही गई थी, एक कान से सुन भी न पड़ता था। कभी-कभी तो दिखाई भी न देता। रात को टटोलता घर आता जैसे अंधा हो। एक दिन जब माँ-बेटी दोनों आईं तो कूपे का कहीं पता न था। वे बड़ी चिंतित हुईं, देखा तो खाट के नीचे फर्श पर पड़ा था। ठंडक और डर के मारे दाँत कटकटा रहे थे।

'कुछ लोग मुझे मारने आए थे !'

दोनों ने उसे बच्चे की तरह डाट-डपट कर बिस्तर पर लिटा दिया। कूपे के पास अपने सभी मर्जों की सिर्फ एक दवा थी शराब, वह रोज उठकर उसी की खोज में चल देता। उसकी स्मृति खराब हो चुकी थी, दिमाग भी हल्का पड़ गया था। जब कभी नाना महीने दो महीने बाद आती तो उसे लगता जैसे अभी यहीं थी, कुछ लेने बाजार गई थी वहीं से लौटी है। अब नाना उसे प्रायः सड़कों पर भी मिल जाती पर वह पहचान ही न पाता। नाना कुछ चीज लेने का बहाना करके चली जाती और महीनों बाद लौटती। एक बार नाशपातियाँ लेने गई तो एक महीने बाद आई। तम्बाकू खरीदने के बहाने तीन महीने गायब रही। इस बार वह ऐसा गायब हुई कि जाड़ा गया, बसंत गया, जून आ गया पर उसका कहीं पता-निशान न था। शायद कहीं आराम से दिन काट रही थी। कूपे ने समझा कि 'अब वह गई अब क्या लौटेगी' और एक दिन उसका बिस्तर बेच डाला, उसकी भी शराब पी ली।

एक दिन सवेरे जरवेस वरजिनी की दूकान के सामने से जा रही थी। वरजिनी ने अंदर बुला लिया, 'बहिन कुछ मदद कर दो, लैन्टियर के दो दोस्त आने वाले हैं !' जरवेस ने बर्तन धुला दिए और काम करा दिया। लैन्टियर चुपचाप एक कुर्सी पर पसरा पड़ा था, सिगार पीता जा रहा था।

'अरे जरवेस, मैंने कल नाना को देखा था !'

वरजिनी काउंटर के पीछे खड़ी, एक-एक दराज खोल कर देख रही थी। हर दराज उसे खाली मिलता। हर बार उसका चेहरा गुस्से के मारे तन जाता, मुट्ठियाँ बाँध कर लैन्टियर को दिखाती। उसे विश्वास हो गया था कि लैन्टियर रोज नाना के पास जाता है। वह कुछ न बोली। एका-एक लिरेट ने कहा—

'कहाँ देखा था ?'

'एक गाड़ी में थी। मैं किनारे-किनारे जा रहा था। एकाएक मेरी निगाह पड़ गई !' और उसने जरवेस पर एक नजर डाली। 'सच मानों ऐसे कीमती कपड़े पहन रक्खे थे कि क्या कहूँ। पहले तो मैं पहचान ही न सका पर जब वह मुझे देखकर मुसकराई तो मैं समझा। मैं समझता हूँ वह आदमी जरूर कोई बड़ा आदमी था। रानी दिखती थी पूरी रानी !' जरवेस चुप रही। साफ प्लेट को बार-बार पोंछती रही। लैन्टियर कुर्सी पर बैठा हुआ खाली दराजों को देख कर सोच रहा था, 'क्या इनमें फिर मिठाई न भरेगी ? क्या दुकान का दिवाला हो गया, मुझे दूसरा घर देखना पड़ेगा !'

जरवेस जब घर पहुँची तो कूपे को बिस्तर पर रोते-चीखते पाया। वह बार-बार अपने बाल नोच रहा था। जरवेस कुर्सी खींच कर उसी के पास बैठ गई।

'एक बात सुनी है ? नाना दिखी थी, बहुत ठाठ हैं उसके। कहीं उसकी जगह मैं होती तो..........।'

और वह किसी सोच-विचार में पड़ गई। कूपे अभी तक जमीन की ओर ही देख रहा था, एकाएक उसने सिर उठाया और एक हँसी होठों पर तिर गई। 'कुछ नहीं मेरी रानी, तुम्हारा जो मन हो करो, मुझे अपने लिए कोई बाधा न समझो। कपड़े पहिन-पहिना कर तो तुम अब भी काफी सुन्दर दिखती हो !'

१२. पतन

जनवरी का महीना था, अङ्ग-अङ्ग ठिठुर रहे थे। जरवेस इस महीने का किराया भी न दे पाई थी। कहाँ से आता, काम कुछ मिलता ही न था, खाने तक के लाले थे। उस समय आसमान कुछ घिरा सा था।

आँधी आने को थी। जरवेस को बहुत थोड़ी आशा थी कि आज कूपे कुछ पैसे लाएगा। 'उसने कहा तो था कि वह कुछ काम करेगा, देखो!' उसका मन कहता था, 'कूपे आएगा, पैसे लाएगा। और तभी वे दोनों ठीक से भोजन करेंगे।' जरवेस ने खुद काम के लिए कोशिश करनी छोड़ दी थी। कोई उसे रखता ही न था और इससे अब उसे विशेष परेशानी भी न होती थी क्योंकि अब उसकी तन्दुरुस्ती इतनी गिर गई थी कि थोड़ी भी मेहनत उसके लिए बहुत होती। वह अब चुपचाप पड़ी रहती। जरवेस का बिस्तर..........बिस्तर क्या था, घास-फूस का एक ढेर था। खाट, कपड़े तो सब बिक गए थे। अब वही एक कोने में ढेर था, सारे कमरे में गन्दगी फैली थी, वह शायद ही झाड़ू डालती। क्या साफ करती जो कुछ साफ करना था, वही उस कमरे में सब कुछ था। वह उसी ढेर पर पड़ी-पड़ी एक टक छत की ओर देख रही थी।

'भला कोई बिना खाने के कितने दिन रह सकता है?'

उसे भूख अगर न थी तब भी पेट में एक खोखलापन अनुभव होता था। आँखें भारी हो गई थीं पर वह कभी-कभी थकी सी एक निगाह कमरे में डाल लेती, शायद कुछ हो जो बेचा जा सके। सोचते-सोचते वह थक गई, सिर चकरा गया। उठ कर खिड़की के पास आ बैठी। वहीं बैठे-बैठे लुढ़क गई। सपना देखा, मानों किसी तूफान में फँस गई है, बर्फ के मारे घर का रास्ता न मिलता हो। घबरा कर चौंक उठी, देखा रात आ रही थी। समय बीतता ही न था। भूखे के लिए दिन भी बड़ा लम्बा होता है। वह कूपे की प्रतीक्षा करती रही। कई घन्टे बीत गए। निराश होकर रो पड़ी, लगभग एक घंटे पड़ी सिसकती रही।

'जो कहना हो कह लें, देखो शायद दे दें!'

वह कुछ पैसे लोरिले से उधार माँगेगी। उसने अपने मन को पक्का किया और उठकर गई।

'चलो आओ,' अन्दर से आवाज आई जैसे ही उसने दस्तक दी। अन्दर सब ठीक-ठाक था। एक तरफ भट्टी जल रही थी। कमरे में गर्मी थी, जरवेस का जाड़ा दूर हो गया, एक ओर खाना पक रहा था, उसकी सुगंध उसके नथुनों में भर कर उसे बेचैन करने लगी।

'अच्छा तुम हो, क्यों कुछ चाहिए ?' मै० लोरिले ने तुरन्त ही कहा।

जरवेस का जैसे गला घर गया। पैसे उधार लेने की बात गले तक ही आकर अटक गई। वह कह भी सकती थी पर बाश एक कोने में बैठी थी, उसकी और भी हिम्मत न पड़ी। अब लोरिले ने कहा—

'क्यों कुछ जरूरत है ?'

जरवेस की जबान लड़खड़ा गई, 'आपने कूपे को तो नहीं देखा, मैंने सोचा शायद यहाँ हो ?' मै० लोरिले तुरंत ही व्यङ्ग कर बैठी—

'कूपे और मेरे यहाँ..................हः मेरे पास इतना पैसा ही नहीं है कि मैं जितनी शराब वह पिये, पिला सकूँ, वह मेरे यहाँ क्यों आने लगा ?'

जरवेस के मुँह से टूटे-फूटे शब्दों में निकला—

'उसने.........आने कहा था.........तभी खाना..............खरीदने की बात थी.........।'

सब लोग चुप हो गए, कोई कुछ न बोला। मै० लोरिले आग धौंकने-लगी और उसका आदमी काम में जैसे और जुट गया। बाश उसे देख देखकर हँस रही थी।

'अगर आप मुझे दस रु० दे देतीं.....?'

सब चुप रहे।

'अगर आप मुझे उधार दे दें.....मैं कल सुबह ही दे दूँगी!' जरवेस ने जैसे काँपते हुए कहा।

मि० लोरिले ने इस बार नजर फिराई और उसके चेहरे की ओर देखा। ऐसा लगा मानो दे देगी।

'लेकिन, तुम तो जानती हो कि इन दिनों हम लोगों के पास भी पैसे नहीं हैं और न कोई उम्मीद ही है, नहीं तो देने में हर्ज ही क्या था?'

लोरिले ने जैसे बात ऊपर ही ले ली—

'सचमुच, मन तो करता है पर क्या किया जाय जेब ही खाली है!'

जरवेस ने सिर झुका लिया पर वह कमरे से बाहर तुरंत ही न गई। खड़ी-खड़ी सोने के तार की ओर देखती रही। लोरिले पति-पत्नी दोनों उसी को मोड़-माड़ रहे थे।

'अगर इसका एक भी कण मिल जाय तो खाना हो सकता है?' उसके दिमाग में घूम रहा था।

उस दिन कमरा बड़ा गंदा था, तमाम कोयला पड़ा था, पर उसे लगता था सोना ही सोना चमक रहा है। उसने धीरे से फिर कहा—

'मैं आपके पैसे लौटा दूँगी, जरूर लौटा दूँगी!'

उसकी आँखों की कोरें छलछला आई थीं। वह यह कभी न कहना चाहती थी कि उसने दो दिन से कुछ नहीं खाया।

'मैं कह नहीं सकती कि मुझे कितनी जरूरत है?......'

पति-पत्नी ने एक दूसरे को देखा। मरगुल्ली आज उनके घर में भीख माँग रही है। कौन जानता था कि ऐसा होगा। अगर इन्हें दरवाजा खटखटाते ही मालूम हो जाता तो अंदर भी न आने देते। 'हम ऐसे आदमियों को दरवाजे से निकलने तक नहीं देते। कमरे में न जाने कितनी कीमती चीजें पड़ी हैं!'

आँखों ही आँखों जैसे दोनों ने बातें की। एक नहीं कई बार उन्होंने जरवेस को चोर समझा था। वह उस समय एक-एक चीज को घूर-घूर

कर ताक रही थी। लोरिले पति-पत्नी की चारों आँखें उसी पर गड़ी थीं। कहते-कहते जरवेस लोरिले के पास पहुँच गई थी। उसने जरा रूखे होकर कहा—

'देखो, देखो, सोने के कण तुम्हारे जूतों में चिपक जायँगे। लगता है तुम इसलिए गीले भी कर लाई हो!'

जरवेस पर जैसे आघात सा लगा। वह पीछे हट कर दीवार से टेक लेकर खड़ी हो गई। मै० लोरिले की आँखें अब उसके हाथों पर गड़ी थीं। उसने धीरे-धीरे हथेलियाँ खोल दीं और बहुत ही हारी हुई आवाज में बोली—

'मैंने कुछ नहीं लिया, तुम देख सकती हो!'

और वह तुरंत लौट पड़ी। कमरे की गर्मी और खाने की सुगन्ध उसको बेहोश किये देती थी। किसी तरह जूते घसीटती हिलती-डुलती बरामदे के बाहर आइ, पर दरवाजे पर आकर सकुच गई, उसे भीतर जाने से डर लगता था। उसने कुछ टहलना ठीक समझा, कुछ गर्मी तो आयेगी। अपनी कोठरी में ब्रू नहीं था। बिजर्ड के घर के पास पहुँचते ही उसे एक कराह सुनाई दी, अन्दर चली गई।

'क्या बात है?' उसने कुछ जोर से कहा।

कमरा बिल्कुल साफ पड़ा था। लैली रोज सुबह उठकर हर चीज बुहारती और ठीक से रखती थी। घर में पैसा नहीं था, सामान थोड़ा था, पर सफाई बहुत थी। दोनों बच्चे एक कोने में बैठे किसी तसवीर को देख रहे थे और लैली चादर ओढ़े बिस्तर पर पड़ी थी।

'क्यों क्या बात है?' जरवेस ने फिर पूछा।

लैली ने अपनी भारी पलकें उठाईं और बोलने की कोशिश करने लगी।

'कुछ तो नहीं, कुछ नहीं है, सच कहती हूँ।'

पर उसका मुँह किसी भयानक पीड़ा से सफेद होता जा रहा था।

जरवेस घुटनों के बल पास ही बैठ गई। एक महीने से उसे बड़ी खाँसी आ रही थी। इस समय उसके मुँह के आस-पास खून की कुछ बूँदें भी जमा थीं।

'मेरी कोई गलती नहीं है। मैं समझती थी मैं ठीक हूँ और मैंने कमरा धोना शुरू कर दिया पर खिड़की आदि सब खतम नहीं कर पाई। खैर, साफ तो काफी हैं, मुझे इतनी थकी लगी कि फिर पड़ ही जाना पड़ा।' फिर कुछ रुक कर, 'जरा देखिये बच्चे कैंची लिए हैं, कहीं उँगली न काट लें।'

तभी सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आवाज हुई, वह काँप उठी। उसका बाप बड़बड़ाता हुआ भीतर आ गया। नशे में था, आँखें जलते हुए अंगारों सी दहक रही थीं। जैसे ही उसने लैली को बिस्तर पर देखा तुरन्त ही कोड़ा उठाया।

'अच्छा मजाक है इस वक्त बिस्तर पकड़ा है, चल, उठ!'

और एक सड़ाक की आवाज हुई, लैली कराह उठी।

'मैं नहीं उठ सकती, मैं मर रही हूँ!'

जरवेस ने बढ़ कर कोड़ा छीन लिया। वह अपना मुँह नीचा किये लड़की की ओर देख रहा था कि आखिर उसका क्या मतलब है? उसने कभी नहीं सुना वह बीमार है पर 'वह पड़ी है, मर रही है, कैसे?' लैली बोली, 'मैं सच कहती हूँ और तुम खुद देखोगे। मैंने तुमसे जब तक हो सका नहीं बताया, अब मुझमें रोकने की शक्ति नहीं है पापा, मेरे पापा, अब तो दया करो, मैं जा रही हूँ, मुझे प्यार कर लो!'

बिजर्ड ने अपना हाथ मुँह पर फेरा जैसे होश कर रहा हो। लैली का चेहरा विकृत होता जा रहा था। मृत्यु की छाया मँडरा रही थी। बिजर्ड एक दम गम्भीर हो गया। चारों तरफ निगाह डाली जैसे वह सब कुछ समझ गया हो। दोनों बच्चे साफ-सुथरे थे, दीवारें साफ थीं, कमरा साफ था। एक कुर्सी में धम से गिर पड़ा।

'आह मेरी माँ, मेरी माँ !' कह तो सिर्फ इतना ही सका। वह भी जोर से कराहा पर लैली के लिए यही बहुत था। उसने धीरे-धीरे समझाना शुरू किया—

'पापा मुझे मरने का बड़ा दुःख है, आपसे दूर जाते हुए क्या आप समझते हैं मुझे अच्छा लगता होगा ? ये बच्चे छोटे-छोटे हैं। मैं इन्हें पाल तक न सकी। आप इनका ध्यान रखिएगा; रखिएगा न ?'

इसके बाद डूबती हुई आवाज में उसने उनके कपड़ों के बारे में कुछ बातें बताईं। वह नशे में डूबा हुआ बैठा सब सुनता रहा ! इसके बाद लैली फिर चुप हो गई। थोड़ी देर बाद फिर बोली—

'रोटी वाले को चार फ्रैंक और सात सू देने हैं, उसे पैसे दे दीजियेगा। गाड्न के पास हमारा एक लोहा है भूलिएगा नहीं ! आज शाम को मैं पूरा खाना नहीं बना सकी, आलू और रोटियाँ रक्खी हैं.....'

जरवेस बहुत कोशिश कर रही थी कि आँसू न निकलें। बढ़ कर लैली के हाथ अपने हाथों में ले लिए, चादर देह पर से हट गई थी, ठीक करने लगी, एकाएक उसका सारा शरीर खुल गया उसने देखा। पत्थर के भी आँसू उस समय आ जाते। उसकी सारी देह में घाव ही घाव थे, खून बह रहा था। कोड़ों के निशान यहाँ-वहाँ पड़े हुए थे, दाहिने बाजू पर बड़ा सा घाव था, सिर से पैर तक उसकी देह चोट से स्याह पड़ी थी। जरवेस के हाथ-पैर ढीले पड़ गये। वह सोचने लगी, 'क्या ऊपर कहीं भगवान् नहीं है। क्या वह सबकी रक्षा नहीं करता। इस लड़की पर इतना अन्याय हुआ और वह बिल्कुल चुप है.....?'

लैली ने चादर तानते हुए कहा, 'मेरी दीदी मुझे अपने पापा पर बड़ी शर्म लगता है। बड़ा दुख है मेरे पापा ऐसे हैं।'

जरवेस वहाँ ठहर न सकी। बच्ची का अन्त आ रहा था। वह अपनी दोनों आँखें कोने में खेलते हुए बच्चों पर लगाये थी, वे अब भी कैंची से तसवीरें काट रहे थे, कमरे में अँधेरा बढ़ रहा था। जरवेस बाहर

आ गई। और अनजाने ढंग से उसी फैक्टरी की ओर चल दी जहाँ कूपे काम करता था। वह जाकर उससे पैसे ले लेगी, नहीं वह खर्च कर डालेगा।

फैक्टरी के पास जाकर एक कोने में सिकुड़ कर खड़ी हो गई। बर्फ गिर रही थी। उसके पास और बहुत सी स्त्रियाँ थीं कि अपने-अपने आदमियों से पैसे पहले ही ले लें नहीं खा-उड़ा डालेंगे। जरवेस को किसी से पूछने की आवश्यकता न पड़ी। फैक्टरी का दरवाजा बहुत देर के बाद खुला। पहले एक-दो आदमी निकले फिर चार-छः। ये सब अच्छे आदमी थे। इनको बाहर औरतों को देख कर डर नहीं लगा, अपने रास्ते चले गये। इतने में जैसे ही एक पतला-दुबला आदमी निकला, एक औरत तुरन्त उस पर झपट पड़ी। जेब से सब पैसे निकाल लिये। वह इसी का आदमी था। बेचारे की जेब में एक सू न बचा। शराब का क्या होगा। रुआसा सा एक ओर चल दिया। जरवेस अब भी टकटकी लगाये दरवाजा देख रही थी। कूपे का कहीं पता न था। कुछ लोग उसे जानते थे, उन्होंने उस पर ताना भी कसा। उसे धीरे-धीरे विश्वास हो चला कि कूपे उससे झूठ बोला है, वह आज काम पर नहीं आया। अब उसने सोचा, 'खाने का क्या होगा, आशा तो कोई नहीं है।' उसका सिर चकरा गया। पेट में एक जलन सी उठी, बर्फ तेज गिरने लगी और अँधेरा काफी घना हो गया।

वह वहाँ से चल दी और पासीनियर होटल आई। बाहर ही से कूपे की आवाज सुनाई दी। झाँक कर देखा कि मेस बाट्स के साथ पी रहा था। मेस बाट्स का भाग्य इन दिनों जग गया था। उसने गर्मियों में एक ऐसी स्त्री से विवाह कर लिया था जिसके पास कुछ पैसा था। वह अन्दर घुस गई और पास पहुँचते ही अपने पति के कंधे पर हाथ रक्खा। कूपे ने मुड़कर देखा—

'मुझे भूख लगी है?' उसने धीरे से कहा।

'भूख लगी है, तुमको। कोई बात नहीं है, अपनी एक मुट्ठी आज खा लो दूसरी कल के लिये रहने दो!'

उसने जैसे सुना न हो धीरे से बोली—

'कहिये तो एक रोटी चुरा लाऊँ ?'

मेस बाट्स ने अपनी ठुड्डी मलते हुए कहा—

'नहीं, नहीं ऐसा न करना, यह कानून के खिलाफ है। हाँ, औरत चाहे तो—'

कूपे बीच में ही हँसता हुआ बोल उठा—

'हाँ अरे औरत के लिए क्या ? अगर उसके थोड़ी-सी भी अक्ल है तो वह सब कुछ पा सकती है। उस पर भी अगर भूखों मरती है तो यह उसकी बेवकूफी है।'

और दोनों आदमी बोलवार्ड की ओर उठकर चल दिये, जरवेस उनके पीछे-पीछे चलने लगी। एकाएक कूपे ने मुड़कर देखा।

'हे भगवान, मैं क्या कर सकता हूँ, मेरे पास है क्या! जा भाग यहाँ से, हाँ मार खाने का मन हो तो वैसे बता ?'

और उसने घूँसा ताना, जरवेस सहम गई, पीछे लौट पड़ी। दाँत कटकटाते हुए बोली—

'अच्छा जाती हूँ, उसी के पास जिसके पास पैसा होगा!'

कूपे ने आगे हँसते हुए कहा—

'हाँ, हाँ अभी तुममें हुआ क्या है। देखो रोशनी में कैसी चमक रही हो ? अगर कोई मिल जाय तो आना कैपसिन में। आराम से खाएँगे, वहाँ बड़ा अच्छा खाना मिलता है!'

जरवेस को जैसे कुछ मिल गया हो वह खुश-खुश चलती चली गई। वह आज यह भी करेगी। उसके सामने दो ही चीजें हैं या चोरी करे या यह। और फिर यह शरीर तो उसका है, जिसको चाहे दे। चोरी तो दूसरों का धन लेना है, उसका उसे अधिकार नहीं है। सही-गलत,

पाप-पुण्य उसके दिमाग में न आ सके।

वह उस समय पेरिस के ऐसे भाग में थी जहाँ बहुत-सी ऊँची-ऊँची इमारतें बन गई थीं। सकरी, लम्बी गलियों में अगर कहीं धन-दौलत के चोचले थे तो गरीबी और गन्दगी का साम्राज्य भी। इस भाग में हमेशा भीड़ लगी रहती।

इतने मनुष्यों को देखकर जरवेस सोच रही थीं, 'इतनी भीड़ में क्या एक भी भलामानुस आदमी नहीं है जो मेरा कष्ट देख सके, मेरे पेट के लिए कुछ पैसे दे सके?' उसका सिर भारी हो गया, हाथ-पाँव थके से पड़ गये, लगता था वह अपनी देह का भार न सँभाल पायेगी। असंख्य नारी-नर, अमीर-गरीब सभी आ-जा रहे थे, वह भी उसी भीड़ के साथ चलती गई। किसी ने उसकी ओर देखा भी नहीं। एकाएक उसने निगाह उठाई, बाँकोवर होटल के नीचे ही वह खड़ी थी। होटल इस समय खाली था। सारी खिड़कियाँ बन्द थीं, इमारत में काई लग रही थी। इसी होटल से उसकी इस जिन्दगी की शुरुआत हुई थी। वह चुपचाप नीचे खड़ी हुई उसी कमरे की खिड़कियों की ओर ताकती रही जहाँ कभी उसने अपने यौवन के दिन लैन्टियर के साथ बिताये थे। उसे वह दिन भी याद आया जब वह उसे छोड़ गया था। तब वह छोटी थी, उस आघात को सँभाल ले गई थी। उस बात को हुए बीस बरस हो गये। इस बीच वह क्या से क्या हो गई! यह जगह देखकर उसका मन उद्विग्न हो उठा, वह मांटमात्रे की ओर मुड़ गई। तमाम मजदूर-स्त्रियाँ छोटे-छोटे बण्डल लिए हुए और बहुत से बच्चे गुड्डों की तरह सजे-बजे चले जा रहे थे। धीरे-धीरे सारी भीड़ खतम हो गई और जरवेस अकेली रह गई। 'सब लोग अपने-अपने डिनर पर बैठ गये होंगे', जरवेस ने सोचा, 'कैसा अच्छा हो अगर वह यहीं पड़ जाय और फिर कभी न उठे—ये सारे दुःख-दर्द मिट जायँ, जीवन का अन्त हो जाय!' उसकी देह में अब ताकत न थी।

आँख उठाकर देखा, सामने सिलेटी रंग की अस्पताल की इमारत

थी। अगल-बगल के दोनों विंग पंखों की तरह फैले थे, बड़ा भारी गेट जिसे देखकर डर लगता भूतों का दरवाजा कहलाता ही था। इसी में होकर सारे मुर्दे ले जाये जाते थे। वह उसमें से निकल कर बाहर आई। पास ही रेल की सड़क थी। अभी एक गाड़ी निकली थी। उसका धुँआ भरा हुआ था, 'वह इसी गाड़ी पर होती तो अभी पेरिस से बाहर किसी देहात में पहुँच जाती।' उसका दिमाग गाँव का वातावरण स्मरण करने लगा, 'खुले, बड़े मैदान, ठण्डी हवा, नीले-नीले आसमान का विस्तार अगर वह वहाँ पहुँच जाय तो शायद जीवन फिर से नया हो सकता है। कितना ऊब आई है वह ऐसी जिन्दगी से।'

सोचते-सोचते उसकी नजर एक विज्ञापन पर पड़ी। एक कुत्ता खो गया था ढूँढ़ लाने वाले को पचास फ्रैंक इनाम देने को कहा गया था। 'कितना चाहता होगा वह अपने कुत्ते को!' और उसकी आँखें आकाश की गहराई में खो गईं। जरवेस लौट पड़ी। सड़कों की बत्तियों की रोशनी में लम्बी-लम्बी गलियाँ और सड़कें दूर तक फैली दिखाई देती थीं। सारे रेस्ट्राँ भरे थे। लोग बड़े आराम से खा-पी रहे थे। एसाम्वायर के सामने एक भीड़ इकट्ठा थी, भीतर गिलास पर गिलास और बोतलें पर बोतलें खाली हो रही थीं और इस दृश्य के ऊपर बादलों से भरा हुआ काला आसमान झुका आ रहा था।

'अगर मेरे पास कुछ भी पैसा होता तो शराब ही पी लेती, भूख-प्यास तो न लगती।' पर फिर उसकी विचारधारा मुड़ी, 'उसकी सारी मुसीबतों की जड़ यही एसाम्वायर है, उसकी बरबादी में इसका ही हाथ है!' गुस्से में उसकी मुट्ठियाँ बँध गईं। 'अगर मैंने यहाँ बैठ-बैठकर शराब न पी होती तो यह दुर्दशा न होती!' इसी तरह सोचती हुई बड़ी देर तक खड़ी रही।

उसका ध्यान टूटा। लोग खा-खाकर लौटने लगे थे। यही समय है उसे कुछ करना चाहिए। उसने इधर-उधर देखा, पेड़ों के झुरमुटों पर

नजर गड़ा दी। बहुत-सी औरतों की छायाएँ वहाँ हिल-डुल रही थीं। वह उन्हें देखती रही। वह भी यही करेगी! उसके दिमाग में आया। इतने में एक आदमी जेब में हाथ डाले सीटी बजाता हुआ पास से गुजरा। वह धीरे से बोली—

'सुनिए.........जरा एक बात सुनिए !'

उस आदमी ने मुड़कर एक निगाह में सिर से पैर तक देखा और फिर जोर से सीटी बजाता हुआ चल दिया। जरवेस की जैसे हिम्मत बढ़ गई। उसे भूख लगी थी। भूख के अलावा उसे और कुछ भी याद न था। झुरमुटों की औरतें फिर इधर-उधर टहलने लगीं जैसे कटहरे के भीतर कोई जानवर बार-बार फेरी देता हो। उसने फिर कहा—

'जरा सुनिएगा.........!'

पर वह चलता ही गया। वह फिर बाँकोवर होटल की ओर लौट पड़ी और अस्पताल होते हुए फिर उसी भूतों के दरवाजे के पास आ पहुँची। जाने क्यों इन जगहों के प्रति उसके मन में एक आकर्षण सा जग उठा था—

'सुनिए.........जरा सुनिए !'

देर हो रही थी, एक के बाद एक, तमाम आदमी नशे में झूमते-झामते उसके पास से निकल गये। दूर से लड़ने-झगड़ने, जोर-जोर बोलने की आवाजें हवा पर उड़ती हुई आ रही थीं। जरवेस सोती हुई सी चलती रही। उस समय उसे भूख छोड़कर किसी बात की सुधि न थी। नाना कहाँ होगी, क्या खाती होगी, उसे कुछ होश न था और न वह सोचती। वह धीरे-धीरे चलती गई। हवा बहुत ठण्डी हो गई थी, बर्फ भी गिरनी शुरू हो रही थी, तूफान आने को ही था।

एक आदमी धीरे-धीरे चला जा रहा था। वह उसकी ओर बढ़ी।

'जरा सुनिए !'

वह रुक गया। जो कुछ जरवेस ने कहा उसने सुना तो नहीं पर

अपना हाथ फैला कर धीरे से बोला—

'भीख.........भीख चाहिए, दोगी ?'

दोनों ने एक दूसरे को देखा ! वह चाचा ब्रू था, भीख माँग कर लौट रहा था और जरवेस.........वह तो उससे भी बुरा काम कर रही थी। वे दोनों खड़े एक दूसरे की ओर देखते रहे। किसी का दुःख कम न था। चाचा ब्रू भूख की आग से परेशान होकर सारी शाम इसीलिए फिरा था कि किसी तरह हिम्मत पड़े तो भीख ही माँगे और सबसे पहला आदमी जिसके आगे उसने हाथ फैलाया वह थी मुसीबतों की मारी, भूखी, मुहताज जरवेस। दोनों ने एक दूसरे को फिर देखा; किसी ने कुछ कहा नहीं और अपनी-अपनी राह चल दिये। बर्फ जोर की हो गई थी पर जरवेस चलती गई। हवा के झोंके आते, उसका लबादा बार-बार पाँवों से लिपट जाता, उसे चलने में काफी तकलीफ हो रही थी।

एकाएक जोर का तूफान भी आ गया। उसकी हिम्मत न हुई कि आँखें तक खोल सके; बस एक ओर चलती चली गई। जब बर्फ कुछ कम हुई और आँख खोली तो उसे किसी के पास से निकलने की आहट हुई। उसने हाथ बढ़ा कर उसकी कमीज पकड़ ली।

'जरा सुनिएगा !'

वह घूम पड़ा, वह गूजेट था।

गूजेट ने उसकी ओर देखा। उसके सारे चेहरे पर बर्फ ही बर्फ जम रही थी। 'आओ', वह बोला।

और वह आगे-आगे चल दिया। जरवेस भी पीछे हो ली।

गूजेट की माँ इसी साल जाड़े में बाई से मर गई थी। गूजेट अब भी उन्हीं कमरों में रह रहा था। इस समय वह अपने एक बीमार मित्र को देखकर लौट रहा था। वह भीतर घुसा, लैम्प जलाई और फिर जरवेस की ओर घूम कर देखा। जरवेस सिकुड़ी हुई बाहर ही खड़ी थी। 'अन्दर आ जाओ।' उसने कुछ धीमे से कहा मानों उसकी माँ है कहीं सुन न ले।

जरवेस डरती सी भीतर घुसी जैसे कोई गरीब किसी महल में घुस रहा हो! गूजेट का मुँह उतरा था, उसकी देह भी काँप रही थी।

जरवेस जब माँ के कमरे से होते हुए गूजेट के कमरे में आ पहुँची तो गूजेट ने दरवाजा बन्द कर दिया। बिल्कुल यह वही साफ सुथरा; छोटा सा कमरा था, तब से गूजेट उसी में रहता आ रहा था। जरवेस चुप खड़ी रही, न सहमी न डरी, सिर्फ फटी-फटी आँखों से उसे देख रही थी। गूजेट उसके नजदीक आया और धीरे-धीरे दोनों बाहें उसके चारों ओर कस लीं। जरवेस ने शिथिल होते-होते थोड़ा विरोध जरूर किया।

स्टोव अब भी गर्म था और उस पर प्लेट रक्खी हुई थी। जरवेस रह-रह कर उसी ओर देख रही थी। गूजेट समझ गया। उसने प्लेट लाकर मेज पर रख दी। रोटी का एक टुकड़ा काटा और एक गिलास में शराब उड़ेल कर दे दी।

'धन्यवाद, तुम कितने अच्छे हो!'

वह काँपी जा रही थी, हाथ का काँटा तक न सम्भल रहा था। भूख के मारे उसकी आँखों में भूखे पशु की सी लोलुपता चमक रही थी। एक आलू खाने के बाद वह रो पड़ी। आँसू झरने लगे पर उसने खाना न बन्द किया, बूँदे लुढ़कती रहीं और वह उन्हीं के बीच एक-एक कौर निगलती गई।

'और रोटी लोगी? गूजेट ने पूछा।

'नहीं....हाँ....नहीं!' उसे पता न था क्या कह रही है।

गूजेट लैम्प की चमकती हुई रोशनी में जरवेस को देख रहा था। 'यह वही जरवेस है, अब कितनी जर्जर हो गई है जैसे बुड्ढी हो।' कमरे की गर्मी से उसके शरीर की बर्फ पिघल रही थी और उसके कपड़ों से बूँद-बूँद पानी टपक रहा था। बाल हवा, पानी में भीग कर कड़े हो गये थे। गले में झुर्रियाँ सी दिख रही थीं। उसे पहले की जरवेस याद आई। यौवन

की शराबी दोपहर में नहाई हुई भोली और मादक, वह तब कितनी फुर्ती से भट्ठी में लोहों को उलटाया-पलटाया करती थी। उसे वह दिन भी याद आया जब वह पहली बार उसके कारखाने पहुँची थी, उसने किस तरह इसी जरवेस का स्वाँग किया था। जरवेस की रोटी खतम हो चुकी थी पर आँसू न खतम हुए थे, वह उठ खड़ी हुई। गूजेट ने बढ़ कर उसका हाथ ले लिया।

'जरवेस ··· मैं तुम्हें अब भी प्यार करता हूँ।' गूजेट की आवाज जैसे दुखी थी।

'यह न कहो, प्यार·····प्यार असम्भव है!' जरवेस रो उठी। वह उसकी ओर झुकते हुए बोला—

'जरवेस!' और उसकी आँखों में करुणा झलक उठी। जरवेस भी जैसे खोई-सी निकट आ गई। गूजेट ने उसे फिर अपनी छाती की ओर खींचा और वह भी जैसे नींद में हो, उस पर लुढ़क पड़ी। गूजेट की माँ मर चुकी थी। आगे-पीछे कोई न था। उसे लग रहा था जैसे इतनी बड़ी दुनिया में जरवेस ही उसकी सब कुछ है। उसने उसे छोड़ दिया और खाट पर गिर कर सिसकने लगा। जरवेस इसे न देख सकी।

'गूजेट मैं अच्छी तरह जानती हूँ; मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, हाँ, अच्छा चलूँ!' और गूजेट के कमरे के बाहर निकल आई। घर में बिल्कुल अँधेरा था, सहन में बना हुआ गोल दरवाजा लगता था जैसे कोई भूत मुँह बाये खड़ा हो। उसने एक बार देखा; लगा कि सारा अहाता एक भयानक कब्रिस्तान है! न जाने कैसी भावना उसका सारा शरीर सिहरा गई। अहाते में बर्फ पड़ी थी उसके ऊपर अंधकार की परत लटक रही थी। लगता था बर्फ की तह के नीचे जमा हुई उच्छ्वास है जो अपने आप निकल कर जमा हो गया हो।

यह उच्छ्वास और किसी के नहीं उसी के तो थे, बाहर का गिरा हुआ अँधेरा उसके मन का ही अँधेरा तो था, अनन्त शून्य में फिरते

हुए अँधकार के ढूह उसके विचार ही तो थे।

वह किसी तरह पाँच-छः सीढ़ियाँ चढ़ गई और एकाएक जोर से हँसी। उसे अपने पुराने सपने स्मरण हो आए। 'काम करने को सुख से मिले, खाने को खूब हो, बच्चों के पालने के लिए एक अपना घर हो, कभी मारी न जाय—और मरे तो अपनी खाट पर अपनी छत के नीचे'.....यह सब सपना था। 'मैं अब काम नहीं करती, खाने को कुछ नहीं है, कूड़ेखाने में रहती हूँ, मेरी लड़की की यह हालत है और मेरा आदमी..... जब चाहता है मारता है.....मरने के लिए अपना कोई बिस्तर नहीं.....!'

वह फिर जोर से हँसी। 'मैंने कहा था बीस साल काम करने के बाद मैं देहात चली जाऊँगी और आराम का जीवन बिताऊँगी। पर.....देहात तो जाऊँगी ही, मुझे पियर ला गेज (कब्रिस्तान) में जल्दी ही जगह मिलने वाली है..... वह देहात ही तो है!'

उसके मन और दिमाग में हलचल थी। सोचने की शक्ति न थी। गूजेट से वह हमेशा के लिए बिदा ले आई थी, अब उससे कभी न मिलेगी, बिजर्ड के घर के पास निकलते हुए उसने किवाड़ा खोल कर झाँका, लैली खाट पर चुप पड़ी थी, होठों पर वही मुसकुराहट और भोलापन था। कितने खुश और शांति के बीच उसकी आत्मा ने यह शरीर छोड़ा होगा।

'बड़ी भाग्यशाली है!' जरवेस के होठों में शब्द फँस कर रह गये। तभी उसको चाचा बैजो के यहाँ रोशनी दिख पड़ी। उसने बढ़कर दरवाजा ठेल दिया। जी बार-बार कहता था, 'चाचा अब मुझे और लैली को ले चलो।' उस समय उसके मन-प्राणों पर यह विचार जैसे छा गया था। बैजो उस दिन बहुत ही बुत्त था, जमीन पर पड़ा था। खट-पट सुन कर चौंक उठा—

'दरवाजा बंद कर दो, बाहर मत खड़ी हो, कितनी सर्दी है। कुछ चाहिए?' जरवेस इस समय कुछ सोच-समझ न पा रही थी। दिमाग

पर पाला पड़ गया था। वह अपने दोनों हाथ फैला कर आगे बढ़ी।

'अब मुझे ले चलो, मैं विनती करती हूँ मुझे ले चलो, अब मुझसे सहा नहीं जाता!'

और उसके पास घुटनों के बल झुक गई। आँखों में बुझते हुए दिये की सी रोशनी टिमटिमा उठी। चाचा बैजो अभी कब्रिस्तान से ही लौटे थे, कपड़ों में मिट्टी लगी हुई थी, जरवेस को वह देवदूत से ही लगे। उसने उसके पाँव पकड़ लिए। चाचा बैजो ठीक से कुछ समझ न सके।

'तुम क्या कह रही हो?'

इस बार और अधिक करुणापूर्ण स्वर में बोली, 'मुझे ले चलो, आपको याद होगा मैंने एक बार दीवार थपथपाई थी पर बाद को कहा था, 'नहीं,' तब मैं नहीं समझती थी, डरती थी। पर अब नहीं डरती, लो, मेरे हाथ लो, ये अभी उतने ठंडे नहीं हैं, इनमें डर नहीं है, मुझे ले लो और हमेशा के लिए सुला दो। मेरी अब यही एक इच्छा है।'

बैजो ने सोचा किसी स्त्री से विवाद करना ठीक नहीं है।

'तुम ठीक कहती हो जरवेस, आज ही मैंने तीन स्त्रियों को इसी तरह दफनाया है। वे मुझ पर बड़ी प्रसन्न थीं और अगर सुधि होती तो मुझे अंतिम समय बहुत सा धन भी दे जातीं·····। पर जरवेस·····जो कुछ तुम कह रही हो इतना आसान नहीं है।'

'मुझे ले लो, मुझे ले लो, मैं अब चलना चाहती हूँ!'

'लेकिन····· ·····लेकिन उसके पहले कुछ बातें हैं जिनका करना जरूरी है·····।' और जान-बूझ कर रुक गया मानों गला भर आया हो, आवाज ही नहीं निकलती, उधर मुँह भी फेर लिया।

जरवेस लड़खड़ा कर गिर पड़ी। उसने कुछ ध्यान न दिया। थोड़ी देर पड़ी रही, फिर धीरे-धीरे अपने कमरे में आकर उसी घास-फूस पर पड़ गई। उसका जी बार-बार कोस रहा था।

'मैंने खाना क्यों खाया; क्यों न भूखी रही। अब·········अब मौत भी देर में आएगी।'

१३. अंत

दूसरे दिन उसके लड़के एटीन के भेजे हुए दस फ्रैंक जरवेस को मिले। एटीन अब अक्सर थोड़ा बहुत पैसा माँ को भेज दिया करता था, वह भी समझता था कि माँ को इन दिनों जरूरत रहती है। उसने खाना बनाया और अकेले ही खाया। कूपे का कहीं पता ही न था। एक हफ्ते हो गए, उसका कुछ हाल न मिला था। एक दिन उसे एक छपी हुई चिट्ठी मिली। पहले तो वह घबराई पर जब मालूम हुआ कि पागलखाने से आई है, कूपे वहीं है तो मन कुछ शांत हुआ। उसे इस खबर से कोई विशेष परेशानी न हुई। 'कूपे कई बार वहाँ जा चुका था और हर बार अपने धाम लौट भी आया है। उसे घर का रास्ता अच्छी तरह मालूम है।' इत-वार का दिन था, वह कहीं घूमने की सोच रही थी। चिट्ठी के मिलते ही सब गड़बड़ हो गया।

पागलखाने पहुँची। विचित्र ही कहानी सुनने को मिली। 'कूपे यहाँ से भाग निकला था, उसकी लाश पुल के नीचे मिली है। वह शायद पुल पर से ही कूद पड़ा था, बार-बार चिल्ला रहा था, 'बचाओ-बचाओ, मुझे सिपाही खदेड़े हैं, वह देखो बैनट··········बैनट।'

एक नर्स उसे ऊपर ले गई, ऊपर से चीखों पर चीखें आ रही थीं उसकी रगों का खून जैसे ज़मता जा रहा था।

'वह है!'

'कौन?'

'तुम्हारा आदमी और कौन? उसकी कल से यही हालत है, चीखता

रहता है, साथ ही नाचता भी है, देखो·····।'

उस कोठरी में फर्श, दीवार सब जगह गद्दे लगे हुए थे। उन्हीं गद्दों पर कूपे एक तार-तार कमीज पहने चिल्लाता-नाचता था। दृश्य भयानक था। वह एकाएक बड़ी जोर से खिड़की से टकराया, फिर जाकर दूसरी दीवार पर टिक गया, सारे समय अपने हाथ ऐसे चलाता और मुट्ठियाँ बाँधता जैसे उन सबको मसल देगा और टुकड़े सारी दुनियाँ में बिखरा देगा।

जरवेस जैसे सकते में आ गई।

'यह क्या है?'

एक नौजवान डाक्टर पास ही बैठा था, बोला—'तुम चाहो तो थोड़ी देर यहाँ रुक सकती हो पर बोलना मत! वह तुम्हें पहिचानेगा नहीं, समझीं।'

और सचमुच कूपे ने जरवेस की ओर ध्यान ही न दिया। जरवेस ने अभी उसका चेहरा न देखा था और नजदीक गई, 'क्या यह कूपे ही है?' उसकी आँखें खून जैसी सुर्ख थीं, चेहरा सूख कर जाने कैसा हो गया था। वह आसानी से पहचान भी न पाती। वह नाच क्या उछल-कूद रहा था जैसे नीचे की जमीन जल रही हो, उसके पाँव तप रहे हों। जरवेस मुड़ कर डाक्टर के पास पहुँची।

'जरा सुनिए तो क्या कह रहा है? सुनिए!' जरवेस बोली।

'अच्छा चुप रहो, मैं खुद सुन रहा हूँ!'

कूपे चारों ओर आँखें दौड़ाता हुआ न जाने क्या-क्या बक रहा था।

'यह कौन सी जगह है·········' फिर अपने हाथ ऊपर तानते हुए, 'मेला है·········पेड़ों पर लालटेनें टँगी हैं, सब तरफ पानी ही पानी········· सोते, चश्मे, नदी, नाले·········?' फिर एक लम्बी साँस लेते हुए, मैं समझता हूँ सब चाल है! चाल!! और फिर बड़े जोर से चीख कर पीछे हट गया। डर के मारे दाँत बजने लगे, 'नहीं नहीं, 'मैं नहीं कूदूँगा, पानी में डूब जाऊँगा, मैं न कूदूँगा·····!'

'मैं जाती हूँ, मैं यहाँ बिल्कुल नहीं ठहर सकती!' जरवेस घबरा गई। उसके मुँह का खून सूख-सा गया, मरी सी बाहर आई और कूपे..... नाचता रहा, चीखता रहा। बाहर की ठंडी हवा में जरवेस की जान में जान आई। उसने सोचा, 'अब कभी न आऊँगी।' शाम को सब लोग इकट्ठा हुए, उसने सारे हाल-चाल बताए। किसी को विश्वास ही न होता था। 'बढ़ा कर बताती हो, ऐसा भी कभी होता है?'

जरवेस ने बड़ी गंभीरतापूर्वक सारे हाल-चाल बताये। तब भी किसी ने कहा, 'बताने से नहीं समझ में आयेगा, करके दिखाओ!' सब मन ही मन मुसकरा रहे थे।

दूसरे दिन वह फिर जा पहुँची। उसे वे डरावनी चीखें नीचे से ही सुन पड़ती थीं। उसने कुछ पूछा नहीं, चुपचाप ऊपर चढ़ती गई। कमरे में पहुँच कर कई लोगों को देखकर जरा ठहर गई। कल वाला डाक्टर आज खड़ा था और कोई और दूसरा जो उससे बड़ा लगता था कुर्सी पर बैठा था। वह यहाँ का अध्यक्ष था। जरवेस पीछे ही खड़ी हो गई और कूपे को देखने लगी। वह अब भी वैसे ही उछल-कूद रहा था। भौंहों से पसीना बह रहा था। जरवेस के मन में उठा, 'मैं फिर क्यों आई?' पर उसे कुछ उत्तर न मिला। डाक्टर रात के सारे हाल अध्यक्ष को बता रहा था। बीच-बीच कुछ ऐसे शब्द आ जाते थे जो उसकी समझ में बिल्कुल न आ पाते, पर कुछ तो समझ ही गई। 'कूपे रात भर इसी तरह उछलता-कूदता रहा है, उसकी हालत में कोई सुधार नहीं है।'

और थोड़ी देर खड़े रहने के बाद अध्यक्ष ने उसकी ओर देखा। जरवेस ने बताया कि वह उसी की पत्नी है। उसने तमाम प्रश्न पूछने शुरू कर दिए—

'इसका बाप भी पीता था?'

'थोड़ी-थोड़ी, नशे में ही छत से गिर कर मर गया था?'

'और इसकी माँ?'

'वह भी, पर कभी-कभी, इनके एक भाई को कुछ गश आने की बीमारी थी, बाकी सब तन्दुरुस्त हैं!'

इस बार सर्जन ने उसकी ओर ध्यान से देखा।

'तुम भी पीती हो?'

जरवेस सकपका गई, अपने को बचाने की कोशिश करने लगी।

'तुम पीती हो, देख लो क्या हाल होता है, तुमको भी एक दिन इसी तरह यहाँ आना पड़ेगा, समझीं!'

जरवेस का दिमाग जैसे घूम गया, दीवार से टेक लेकर खड़ी हो गई। सर्जन अब उधर मुड़ा और झुक कर देखने लगा कि उसके पाँव भी हाथों की तरह काँपते हैं कि नहीं। बीमारी बढ़ रही थी। खाल के नीचे अजीब ढङ्ग की चुनचुनाहट शुरू हो गई थी। पेट और कंधे ढीले-ढाले किसी लटकी हुई चीज की तरह हिलते थे, लगता था इनके भीतर सिर्फ पानी है। कूपे की हालत आज कल से खराब थी। वह न जाने क्या-क्या बकता, कुछ समझ में ही न आता। उसे लगता लाखों सुइयाँ बदन को छेदे डाल रहीं हैं। खाल के नीचे कोई बोझ ऐसा रक्खा है, बदन पर कोई बड़ा भारी जानवर सवार है, कन्धों पर जैसे बड़ी-बड़ी चट्टानें जम गई हैं। वह बोला, 'प्यास लगी है, बहुत प्यास.........'

डाक्टर ने लेमन का एक गिलास दिया, होंठ से लगाते ही बोल उठा, 'ब्राँडी है।' एक गिलास पानी दिया गया। 'ब्राँडी है, ब्राँडी, हे भगवान्।'

चौबीस घंटे यही हाल रहा। उसे जो कुछ भी दिया जाता सबको ब्राँडी बनाता, वह रोता, विनती करता, मुझे और कुछ दो गला जल रहा है!' चाय दी गई उसे सूँघ कर ही लौटा दिया, 'शराब है।' उसे लगता, सारी हवा में जहर भर गया है और वह एक दम बहुत बेचैन हो उठता, चिल्लाता—'तुम सब लोग बार-बार दियासलाइयाँ जला कर धुआँ भर दे रहे हो! बंद करो.....बंद.....करो!'

डाक्टर कूपे को देख रहा था। अध्यक्ष ने कहा—

'देखो, तापक्रम ४०° रखना।'

'जी।'

फिर थोड़ी देर स्तब्धता रही। 'वही दवा फिर·········चाय, दूध, लेमन, कुनैन जैसे पहले बताई थी और जरूरत हो तो मुझे बुला लेना!'

वह उठ कर चला गया। जरवेस भी उसी के पीछे हो ली। वह चाहती थी कि पूछे, 'बचेगा कि नहीं?' पर उसकी हिम्मत न हो सकी। वह सीधे अपने कमरे की ओर चला गया। वह अकेली रह गई, उसकी हिम्मत कूपे के पास फिर जाने की न थी। 'पानी दो ब्राँडी नहीं' का आवाजें अब भी सबके कानों को फोड़े दे रही थीं।

रास्ते में दौड़ते हुए घोड़ों को देखकर वह चौंक उठती, पागलखाने के सारे दृश्य घूम जाते और सब के ऊपर 'तुमको भी एक दिन इसी तरह यहाँ आना पड़ेगा!' ये शब्द उसके सारे शरीर को झनझनाए दे रहे थे। इसको भी बीमारी ने पकड़ लिया है। वह डर कर और तेज भाग रही थी।

घर पहुँचते ही सबों ने हाल-चाल पूछे। उसने एक-एक बात बताई। 'साठ घंटे से यही हाल है?'

मै० लोरिले कुछ हिसाब सा लगाने लगी।

'साठ घंटे। बहुत होते हैं, बड़ी ताकत है उसमें।'

बाश बीच में ही बोल उठी—'वह उछलता-कूदता कैसे था जरा करके बता सकती हो!'

जरवेस इसके लिए तैयार न थी, उसकी मनःस्थिति भी ऐसी न थी। उसका मन न देखकर लोग दूसरी बातें करने लगे। वरजिनी चली गई थी, बात पॉसन पर आकर रुक गई—'उन दोनों के नाम तो वारंट हैं, अब नौकरी भी गई। और लैन्टियर—अब एक दूसरी औरत को फँसा रहा है, शायद वह इस दूकान को लेगी। लैन्टियर भाग्यवान है, उसका क्या?'

इतने में एक स्त्री जरवेस के पास से निकली। उसने अपनी तमाम

साथिनों को जरवेस की ओर इशारा करते हुए बताया कि वह यही है। वह शायद जरवेस के पिछवाड़े रहती थी। इस समय जरवेस के भी हाथ कुछ कँप रहे थे, शायद कूपे की नकल कर रही थी, वे लोग तमाम बातें पूछने लगे। उसने किसी का उत्तर न दिया और चुपचाप कमरे से चली गई।

दूसरे दिन दोपहर को वह फिर पहुँची। कूपे ऊल-जलूल चिल्ला रहा था। कमरे के बीचोबीच गिरता-पड़ता था, मानों किसी से लड़ रहा हो। कभी छिपने को कोशिश करता, कभी ललकारता, कभी जोर-जोर बातें करने लगता, मानों दर्जनों आदमी हों। जरवेस फटी-फटी आँखों से ताक रही थी। ऐसा लगता मानों इस समय किसी टीन की छत पर पड़ा है, बार-बार मुँह फुलाता जैसे भट्ठी फूँक रहा है। कभी घुटनों के बल बैठकर हाथ घुमाता जैसे लोहा पीट रहा हो। बार-बार पाँव नोचता—जूते उतार कर फेंक देना चाहता हो। बार-बार 'चूहे','चूहे' चिल्लाता। लगता कुछ आदमी उधर की छत से 'चूहे' फेंक रहे हैं। वह उन्हीं को डाँट रहा है। वह बार-बार उछलता भी जैसे अगर पा गया तो मार जरूर डालेगा। वह बड़ी जोर उछला भी पर गद्दे से टकरा कर लौट आया। डाक्टर ने पूछा, 'तुम्हें क्या दिख रहा है?'।

'लैन्टियर! लैन्टियर!'

वह फिर दीवार से टकराया। दोनों हाथ बिल्कुल खोले हुए जैसे कोई डरावनी चीज उसकी ओर बढ़ती आ रही हो और वह उसे हटाना चाहता हो। वह धीरे-धीरे दो बार कराहा भी। जरवेस चीख उठी—

'मर गया!'

लोगों ने कूपे को उठाया, वह मरा न था। उसके पाँव अब भी काँप रहे थे। बड़ा डाक्टर—अध्यक्ष आया। उसके साथ दो आदमी और आए। तीनों उसे बड़ी देर तक खड़े देखते रहे, फिर उसके कपड़े उतरवाए। जरवेस ने भी देखा वह कँपकँपी अब सारी देह में फैल गई थी। खाल के नीचे लहरें सी दौड़ती थीं! डाक्टर बोला—

'सो रहा है!'

कूपे की आँखें बंद थीं, मुँह उतरा हुआ था, जैसे बेहोश हो। पर पाँव काँपे जा रहे थे। डाक्टर पास पहुँच कर छू-छू कर उसकी देह देख रहा था, जरवेस की भी इच्छा हुई कि एक बार स्पर्श तो कर ले। वह पास जा पहुँची और एक हाथ कंधे पर रख दिया, लगभग एक मिनट तक हाथ रक्खे रही, उसे लगा जैसे खाल के नीचे एक नदी बड़ी तेजी से बह रही है। 'यह शराब है!' उसने सोचा और मुँह से निकल गया, एसाम्वायर, सब डाक्टर चले गये। वही युवक डाक्टर रह गया। कूपे के पाँव काँप रहे थे, वह अभी मरा नहीं था। एकाध बार जरवेस ने पूछा—

'क्या मर गया?'

'नहीं, अभी नहीं!' डाक्टर ने कहा।

एकाएक उसके पाँव सख्त पड़ गये, एक ऐंठन होने लगी, धीरे-धीरे काँपना बंद हो गया।

'अब मर गया, डाक्टर ने कहा।'

मृत्यु ही उन पाँवों की गति रोक सकी।

जरवेस तुरन्त ही भाग आई। दरवाजे के बाहर काफी लोग इकट्ठे थे, उसने समझा हाल-चाल पूछने के लिए आए होंगे। उसने धीरे से कहा, 'वह मर गया।'

शायद किसी ने सुना भी नहीं और न किसी ने पूछा ही कि उसने क्या कहा। वे अपनी बातें कर रहे थे। कैसे पॉसन कल लेन्टियर से भिड़ पड़ा, करीब-करीब मार ही डाला था; पॉसन पूरा शेर है, उसको यह बात और पहले ही मालूम हो जानी चाहिए थी। बाश कह रही थी, 'उस औरत ने दूकान ले ली है, अब लैन्टियर के फिर ठाठ हो जायँगे।'

जरवेस सीधे लोरिले और लिरेट के पास गई 'चार दिन के बाद

आज मर गए.........।'

दोनों बहनों ने प्रथावश अपनी-अपनी रूमालें आँखों से लगा लीं जैसे रो रही हों। ठीक है भाई का जीवन बड़ा जघन्य था पर था तो उनका भाई। बाश ने कुछ इठलाते हुए नाक सिकोड़ कर कहा—

'उँह, सिर्फ एक शराबी कम हुआ।'

इसके बाद जरवेस के भी दिमाग में कुछ खराबी आ गई। वह लोगों के कहने से कूपे की नकल उतारा करती थी। सारे पड़ोस के लिए वह अच्छा तमाशा बन गई थी। पर अक्सर यह नकल नकल न होकर सच भी हो जाती। वह सिर से पाँव तक काँपने लगती, कभी-कभी चीख भी उटती है। शायद उसको यह बीमारी कुछ-कुछ कूपे को देखते-देखते वहीं शुरू हो गई थी पर उसने वैसा रूप कई महीनों तक धारण न किया।

उसकी दशा दिन पर दिन गिरती जाती थी। उसे जो भी पैसा मिलता शराब पी डालती। मकान मालिक ने भी एक दिन घर से निकाल दिया पर उसी दिन चाचा ब्रू की मृत्यु हो जाने से उसकी कोठरी खाली हो गई। मेयरस्काट ने वही कोटरी उसे दे दी। वह अब उसी काली अँधेरी गुफा में पुआल के ढेर पर पड़ी-पड़ी अपनी अंतिम घड़ियाँ गिन रही थी। उसने कई बार खिड़की से कूद कर जान देने की भी कोशिश की पर लगता था मौत उसे धीरे-धीरे निगलना चाहती थी। वह धरती माता से भी प्रार्थना करती कि अगर वह फट जाय तो वह उसी में धँस जाय, पर कुछ नहीं। वह उसी अँधेरे में मर गई, कब मरी किसी को मालूम भी न हुआ। लोग कहते थे भूख और जाड़े ने उसकी जान लेली।

पर शायद वह जिन्दगी से ऊबकर उसी घुटन में मर गई और उसी दिन चाचा बैजो लाश उठाने के लिए आये।

उसके बगल में एक 'काफिन' था, स्वयं नशे में बुत्त, बहुत खुश था।